चतुर्थ पर्व

अब तकका मेरा जीवन एक उपग्रहकी तरह ही बीता, जिसको केंद्र बनाकर घूमता रहा हूँ उसके निकट तक न तो मिला पहुँचनेका अधिकार और न ... दूर जानेकी अनुमति। अधीन नहीं हूँ, लेकिन अपनेको ... शक्ति भी मुझमे नहीं। काशीसे लौटती हुई ट्रेनमे बैठा हुआ ... रहा था। सोच रहा था कि मेरी ही किस्मतमे बार बार ... है! मरते दम तक अपना कहने लायक क्या किसीको ... क्या इसी तरह ज़िन्दगी काट दूँगा? बचपनकी याद ... दूसरेके घरमे वर्षके बाद वर्ष रह कर इस शरीरको तो कैशोरसे यौवनकी ओर आगे बढ़ाता रहा, लेकिन, मनको न जाने किस रसातलकी ओर खदेड़ता रहा। आज बार बार पुकारनेपर भी उस विदा हुए मनकी कोई आहट नहीं मिलती, हालाँ कि कभी कभी किसी क्षीण कण्ठका अनुसरण कानमें आ लगता है, फिर भी, बिना संशयके नहीं पहचान पाता कि वह अपना ही है,—विश्वास करते डर लगता है।

यह समझकर ही यहाँ आया हूँ कि आज मेरे जीवनमे राजलक्ष्मी मृत है। नदीकिनारे खड़े होकर विसर्जित प्रतिमाके अंतिम चिह्न तकको अपनी आँखोंसे देखकर लौटा हूँ,—आशा करनेका, कल्पना करनेका, अपनेको धोखा देनेका कोई भी सूत्र शेष रख कर नहीं आया हूँ। उस तरफ सब शेष हो गया है, निश्चिन्त हो गया हूँ, पर यह शेष कितना शेष है, यह किससे कहूँ, और कहूँ ही क्यों?

पर कुछ दिनका ही तो जिक्र है। कुमार साहबके साथ शिकार खेलने गया। दैवात् पियारीका गाना सुननेके लिए बैठा, बैठते ही भाग्यमें कुछ ऐसा मिला

जो जितना आकस्मिक था उतना ही अपरिसीम। न अपने गुणने पा[illegible]र न अपनी गलतीसे खोया ही, फिर भी आज स्वीकार करना पड़ा। उसे खो दिया,—मेरे संसारमें सब मिलाकर क्षति [illegible] नहीं। [illegible] कलकत्ते, पर वासना फिर एक दिन वहाँ पहुँचायगी। [illegible] जुआरीका घर लौटना है। घरका चित्र अस्पष्ट, [illegible],—[illegible] सत्य है। ऐसा लगता है मानों इस पथपर चलनेका कोई अन्त नहीं

"अरे, यह तो श्रीकान्त है!"

यह ख्याल ही न था कि गाड़ी स्टेशनपर ठहरी है। [illegible] हमारे गाँवके बाबा, राँगा दीदी तथा सतरह-अठारह सालकी एक [illegible] —तीनो गर्दन, सिर और कन्धोंपर गठरी पोटली लादे प्लेटफॉर्म [illegible] लगाते आये और खिड़कीके सामने आकर एकाएक थम गये। बाब[illegible] "उफ, कैसी भीड़ है! जहाँ एक सुईके जानेकी भी गुंजाइश नहीं तीन तीन आदमी हैं! तुम्हारा डब्बा तो काफी खाली है, चढ़ आ[illegible] "आइए", कहकर दरवाजा खोल दिया। वे तीनों जनें हाँफते हाँफत[illegible] आये और जितना सामान था नीचे रख दिया। बाबाने कहा, "य[illegible] ज्यादा किरायेका डब्बा है, दंड तो नही देना पड़ेगा?"

मैने कहा, "नहीं, मैं गार्डसे कह आता हूँ।"

गार्डको इत्तिला दे अपना कर्तव्य पूराकर जब लौटा, तब वे लोग हो आरामसे बैठे थे। गाड़ीके छूटनेपर राँगा दीदीने मेरी ओर नज़र और चौंककर कहा, "तुम्हारा यह कैसा शरीर हो गया है श्रीकान्त? सूखकर एकदम रस्सी जैसा हो गया है, कहाँ थे इतने दिन? कुछ तुम अच्छे तो हो? जबसे गये एक चिट्ठी तक नहीं दी? घरवाले स[illegible] फिक्रमें मरे जाते हैं!"

इस तरहके प्रश्नोंके उत्तरकी कोई आशा नहीं करता, जवाब न [illegible] बुरा भी नहीं मानता।

बाबाने बताया कि तीर्थ करनेके लिए वह सपत्नीक गया-धाम आये यह लड़की उनकी बड़ी सालीकी नातिनी है,—बाप हजार रुपये गि[illegible] तैयार है, लेकिन फिर भी अबतक कोई योग्य पात्र नहीं जुटा। मा[illegible] न थी इसलिए साथ लाना पड़ा। "पूँटू, पेड़ेकी हाँडी तो खोल

...र कमरे से बाहर चला गया। दिलतान्ती ने मुहर को
...वी। पत्र घर का ही मालूम पड़ता था। लिफाफे को फाड़
... पढ़ने लगा। पत्र मे लिखा था :—

गोडेन ब्रीज
१०-१०-३१

...ुत्र !
...म्हारे पत्र का उत्तर जल्द नहीं भेज सका। तुम काफी पढ़
...। तुमसे हम लोगों की स्थिति छिपी नहीं है। तुम हमारे
...ुत्र हो। तुम्हारे लिये मैंने कौन कौन से कष्ट उठा कर
...का खर्च जुटाया था, मै ही जानता हूँ। तुम्हारी माँ ने भी
...ष्ट सहन किया। तुम्हारे तीन छोटे छोटे भाई हैं। वे भी
... पढ़ते हैं उनका भी खर्च देना पड़ता है। यदि तुम्हे को कुछ
मिल जाय तो कर लेना बड़ा अच्छा होगा। मैं जान ...नके
...ौकरी कर लेने से तुम्हारे सिद्धान्त में गड़बड़ होगा, ...ा है।
...भविष्य के कार्यक्रम को बढ़ा न सकोगे। परन्तु ... पिता
...ाजुक है। इस राजनीतिक वातावरण में तुम अपने ... करता।
... कितना बढ़ा सकोगे मुझे सन्देह है। चारो तरफ ... पिता पर
अपना काम कर रहा है। बोलने और लिख...ा! इस
...ा नहीं। यदि क्षुधा से पीड़ित हों तो उसे प्रक...ों में प्रेम
...ज्यद्रोह है। तब बतलाओ तुम इस स्थिति ...म की लसी
पग पग पर काँटे बिछे हुए हैं। मैं नहीं चाह... ही काला हो
...ती हुई जवानी मे मुसोलिनी के राक्षसी प... अजीब आकर्षण
...रती है। मालूम

जावो। मैं किस तरह अपने खिलते हुए पुष्प को मुरझाते हुए देख सकता हूँ।

पुत्र! ख्याल करो अपनी माता का। वह दिन रात तुम्हारे लिये तड़पा करती है। उसके आँसुओं की अविरल धारा से क्या तुम्हारा जलता हुआ हृदय शान्त नहीं होगा। कौन ऐसा पिता होगा जो अपने पुत्र की भावी उन्नति में बाधक बनेगा। समय ऐसा है कि मुसोलिनी की छाया में शरण लेना ही पड़ेगा। यदि हो सका तो तुम फैसिस्ट दल में ही अवसर मिलने पर अपना कार्य कर दिखाओ। पर इस समय ईश्वर के नाम दुहाई देकर कहता हूँ कि बड़े कष्ट से तुम्हारा लालन-पालन करके इतना बड़ा किया है। आशा थी कि लड़का आयेः कर बाप के धन को उत्तरोत्तर बढ़ायेगा। कोई अच्छा ओहदा पाकर नाम करेगा। गरीबी की आह मिटावेगा, आशा है कि अपने प्यारे पिता की बातों पर ध्यान दोगे सोच विचार कर इस पत्र का जवाब दोगे।

तुम्हारा प्यारा पिता,
वुकोवीसी

पढ़ते ही दिलतान्ती सोच में पड़ गया। उसके हाथ से आया। पिता के पत्र से उसकी स्थिति बड़ी विषम ोचने लगा—'पिता जी मुझे फासिस्ट सरकार के कर लेने की सलाह दे रहे हैं। मैं तो नौकरी किसी ी कर सकता हूँ। परन्तु वहाँ भी फासिस्टों का

बड़ा दबदबा है। छिपे तौर से भी किसी तरह की समिति स्थापित नहीं की जा सकती। छिप कर काम कब तक किया जा सकता है। उसका पता लगना अनिवार्य है। फिर क्या होगा? क्या कुछ दिनों तक इस कार्यक्रम को स्थगित ही रखना होगा? नहीं, नहीं! स्थगित रहने से विलम्ब होगा। विलम्ब होने से राजनीति में दाव खाली पड़ जाता है। देरी होने से मुसोलिनी की शक्ति दिनोंदिन बढ़ती ही जायेगी। शायद ऐसा सुअवसर न मिले। नवयुवकों मे बेकारी बढ़ती जा रही है। अशान्ति के चिह्न स्वतः दिखाई दे रहे हैं। अच्छा पिता जी को क्या लिखूँ? क्या पिता जी की आशा आशा ही रह जायगी। घर की स्थिति अच्छी नहीं है। पिता जी मुझसे कुछ आशा करते हैं। मेरे छोटे भाइयों को पढ़ाने के लिये उनके पास धन पर्याप्त नहीं है। हा! ग़रीबी कितनी खराब चीज है। दरिद्र होने के कारण पिता पुत्र से याचना करता है। धनी पिता पुत्र को पढ़ा लिखा कर उससे धन की आशा नहीं करता। परन्तु हम ग़रीबों के लिये नियम भी दूसरे हैं। पुत्र पिता पर निर्भर करता है। पिता पुत्र पर निर्भर करता है। अहा! इस निर्भरता में कैसी सहृदयता है। यही कारण है ग़रीबों में प्रेम सत्य रूप मे विराजमान रहता है। धनी लोगों में प्रेम की लसी बनावटी रहती है। उसमें चकमकाहट है परन्तु शीघ्र ही काला हो जाता है। फिर भी माँ के लिये मेरे हृदय मे अजीब आकर्षण है। मुझे बराबर अपने पलकों पर धारण करती है। मालूम

होता है, दरिद्रता के कारण इस सिद्धान्त को छोड़ना पड़ेगा। परन्तु मैं अपने उन अन्तरंग मित्रों को क्या उत्तर दूँगा। उससे भी बढ़ कर अपनी प्रेयसी को किस तरह मुँह दिखाऊँगा। मेरी प्यारी क्या कहेगी? क्या वह मुझे घृणा तो न करने लगेगी? जब वह जान जायेगी कि ग़रीबी के कारण उसने फैसिस्ट सरकार के अन्दर नौकरी कर ली तो मुझसे प्रेम करना छोड़ देगी। तब मेरा जीवन और दुश्वार हो जायगा। उसके बिना मैं क्योंकर जी सकूँगा। जब वह मेरे सामने दूसरो के साथ गले लग कर, हाथ मे हाथ मिला कर चलेगी तो उस समय मेरा हृदय किस तरह उसे सहन करेगा। क्या करूँ? कुछ समझ मे नहीं आता। हाय रे ग़रीबी? तू बड़ी निर्दय है। तेरे लिये संसार में कहीं ठौर नहीं है। इसी तरह दिलतान्ती विचार-सागर में गोते लगा रहा था। डुबकियाँ लगाते लगाते थक गया। परन्तु उसका पारावार नही था।

इतने ही मे दो और नवयुवक उसके कमरे में आ घुसे। दिलतान्ती की दशा देख कर वे घबड़ा गये। उन लोगों ने सोचा—घर से कोई ख़राब समाचार आया है। ग्रैन्डी ने पूछा—'दिलतान्ती, इस तरह उदासीन क्यो बने हो? क्या तुम्हारे घर से कोई ख़राब समाचार आया है?'

'नहीं, नही, कोई खराब समाचार नहीं है।'

'तुम हम लोगो से छिपाना चाहते हो।'

'मै तुम लोगों से छिपा कर कोई काम नहीं करता।'

'तब तुम्हारी ऐसी दशा क्यों है?'

'मेरे घर से चिट्ठी आई है। मेरे पिता जी ने लिखा है कि किसी नौकरी का प्रबन्ध करो। मैंने अपना विचार उनके सामने प्रकट किया था। उसीके प्रत्युत्तर में उन्होंने लिखा है!'

'अच्छा चलो, टहल आवें। याद है न कि आज बैठक होने वाली है।'

[२]

साम्यवाद, समष्टिवाद या उदारवाद इत्यादि इत्यादि सिद्धान्तों में विश्वास रखने वालो के मिलने की स्वतंत्रता न थी। न वे बोल सकते थे, न लिख सकते थे। फासिस्ट दल के विरुद्ध सिद्धान्त वालों के प्रेस तथा फन्ड इत्यादि ज़ब्त कर लिये गये थे। इनके नेता जेलो मे भर दिये गये थे। कितने फाँसी पर लटका दिये गये थे। केवल विद्यार्थी ही आपस में इधर उधर बातें कर लिया करते थे। बातों के सिवाय अधिक करने का कोई मौक़ा नही था। दिलतान्ती के कुछ साथी साम्यवाद के विचार वाले थे। अपने विचारों की पुष्टि के लिये इनकी साप्ताहिक बैठकें हुआ करती थीं। साप्ताहिक बैठकों में अपने भावों का आदान प्रदान, भावी कार्यक्रम की तैयारी, विचार को कार्य रूप में परिणत करने की युक्तियों पर सोचा करते थे। इनकी बैठक कहीं एक जगह कभी नही होती थी। बैठ कर भी शायद ही इनको

बैठकें होती। टहलते टहलते सुदूर दिहातों में चले जाते। लोग समझते थे कि विद्यार्थियों का दल दिहातों की सैर करने गया हुआ है। रास्ते में अपने सिद्धान्तों पर बातें कर लेते थे। इसी तरह वन और पर्वतों में भ्रमण करते हुए, सुन्दर सुन्दर झरनों में स्नान करते हुए, नदियों और तालाबों में तैरते हुए, समुद्र में बोट चलाते हुए, अपना कार्य कर लिया करते थे। इटली के कोने कोने में घर घर का हाल जानने के लिये विस्तृत रूप से खुफिया फैले हुए थे।

दिलतान्ती अपने दोनों दोस्तों के साथ टहलने के लिये बाहर निकला। उधर से तीन विद्यार्थियों का दूसरा समूह भी दिखलाई दिया। कुछ दूर जाने पर एक तरफ से चार विद्यार्थियों का एक और झुण्ड दिखलाई दिया।

संध्या हो गई थी। ये लोग टहलते टहलते बहुत दूर निकल गये। नगर के बाहर हरे भरे खेतो के पास पहुँच गये। लोग चले जा रहे थे। ग्रैन्डी ने कहा—'भाइयो, हम लोग बहुत दूर आ गये हैं। लौटना चाहिये,' लोग लौट पड़े।

रास्ते में इनके दल की बैठक हो गई। चले जा रहे थे और सभा की कार्यवाई भी होती जा रही थी। लोगों ने आपस में नम्बर बना लिया था। मित्र नं० एक, दो, तीन, चार इसी तरह इनका आपस में नामकरण था। नं० पाँच का मित्र सभापति था। ग्रैन्डी का नम्ब. तीन था। ग्रैन्डी ने दिलतान्ती चार की तरफ से उसके पिता के पत्र के विषय मे प्रस्ताव उपस्थित किया।

लोगों में कुछ देर तक बड़ी बहस हुई। अन्त में सभापति ने इस समस्या के सुलझाने के लिये अपनी राय प्रकट की। सभापति की राय में कोई कार्य प्रकट रूप में प्रस्तुत अवस्था में नहीं हो सकता था। गुप्त रूप से करने से पता लग जाने का डर है। उसके बाद दण्ड का क्या स्वरूप होगा, कोई कह नहीं सकता। अतः फैसिस्ट सरकार के अन्दर नौकरी करते हुए क्रान्ति फैलाने की चेष्टा करने में कोई हानि नहीं दिखलाई देती। जो जिस नौकरी मे हो फैसिस्टों की बुराई करने का ध्यान रखे। अपने कार्य में किसको कितनी सफलता मिल रही है। उसकी खबर अपने दल वालों को बराबर देना चाहिये।

ग्रैन्डी ने इसका समर्थन करते हुए कहा—'मित्रो, मैं सभापति की बातो का समर्थन करता हूँ। हम लोगों को आगे चल कर द्रव्य की आवश्यकता पड़ेगी। नौकरी करने से इसमें बड़ी सहायता मिलेगी। यदि हम लोग किसी भी नौकरी में प्रवेश पा जायँ और वहाँ अपना कार्यक्रम सुविधा तथा स्थानविशेष का ध्यान रख कर उद्देश्य के सफल करने की चेष्टा करते रहें तो बड़ा उपयुक्त होगा।'

दिलतान्ती की समस्या हल हो गई। उसके दलवालों ने सिद्धान्त को कार्यरूप में परिणत करने के लिये फासिस्ट सरकार की नौकरी में प्रवेश पाने की अनुमति दे दी। दिलतान्ती को एक प्रकार की शान्ति मिली। उसने अपने कमरे में पहुँच कर सबसे पहले अपने पिता के पास पत्र लिखा :—

टीउरीन
१०-१०-३१

प्रिय पिता जी,

आपका पत्र हस्तगत हुआ। पत्र पढ़ कर मैं हैरत में पड़ गया था। मुझे कुछ नहीं सूझ पड़ता था कि मैं क्या करूँ। मैं आपसे अपने दलवालों के सिद्धान्त और कार्यक्रम के विषय मे बतला चुका था। आपने घर की स्थिति और प्रस्तुत राजनीतिक अवस्था के विषय में ऐसी मर्मभेदी बातें लिखी थीं कि आप लोगों के प्रेम और मेरे सिद्धान्त में रगड़ होने लगा था। परन्तु दल की बैठक में यही कार्यक्रम निश्चित्त किया गया कि इस अवस्था मे नौकरी करना लाभप्रद है। नौकरी के साथ साथ उद्देश्य की सफलता का भी उद्योग किया जायगा। अब यथा-साध्य मैं नौकरी की चेष्टा करूँगा। माता जी को मेरी शुभ कामना कह देंगे।

आपका प्यारा पुत्र
दिलतान्ती

× × ×

दिलतान्ती की प्रेयसी एक प्रसिद्ध साम्यवादी नेता की सुपुत्री थी। उसका नाम टेसा था। टेसा के पिता बहुत पहले ही मर गये थे। टेसा उस समय केवल दो वर्ष की बच्ची थी। टेसा की माँ भी साम्यवाद के सिद्धान्त मे विश्वास करती थी। परन्तु मुसोलिनी के अधिनायकत्व में स्त्रियों के लिये राजनीति मे कोई स्थान

नहीं था। बोलने या कार्य करने की चेष्टा ही दण्डनीय थी। टेसा अपनी माता की देख-रेख में बड़ी हुई थी। उसकी उम्र केवल १६ वर्ष की थी। उसने डाक्टरी विद्या का अच्छा अध्ययन किया था। टेसा भी अपने माता पिता के सिद्धान्त मे ही विश्वास करती थी।

दिलतान्ती टेसा की माता को बहुत दिनों से जानता था। टेसा की माँ भीतर ही भीतर बहुत सी साम्यवाद की पुस्तकें दिलतान्ती को पढ़ने के लिये दिया करती थी। इस तरह छिपे तौर से दिलतान्ती का आना जाना टेसा के यहाँ लगा रहता था। सम्पर्क से ही दोनों के हृदय में एक दूसरे की तरफ खिचाव हो गया था। राजनीति के सिद्धान्त में दोनों का एक मत था। साम्यवाद के विषय में दोनों खूब बातें करते। भविष्य के कार्य-क्रम को आगे बढ़ाने में एक दूसरे की किस तरह सहायता करते इत्यादि बहुत सी बातें आपस में हुआ करती थी। इसका निष्कर्ष यही था कि दोनों आगे चल कर प्रणय-सूत्र में बँध जावेंगे।

दिलतान्ती के पास काफ़ी मसाला जमा हो गया था। उसके पिता का पत्र, उस पर उसकी शोचनीय दशा, पुनः दल की बैठक मे पिता के पत्र के अनुसार प्रस्ताव का पास होना इत्यादि प्रेयसी को सुनाने के लिये प्रचुर रूप में था। दूसरे दिन प्रातः-काल ही वह टेसा के पास आ पहुँचा। टेसा चाय तैयार कर रही थी।

टेसा की माँ ने दिलतान्ती के लिये चाय माँगा। टेसा चाय लेकर हाज़िर हो गई। माँ वहाँ से उठ कर दूसरी तरफ चली गई। दोनों एक दूसरे को देख देख कर चाय पीने लगे।

दिलतान्ती ने कहा—'टेसा कल अजीब सी घटना हो गई।'

'ओ हो, कैसी घटना?'

'कल मेरे पिता का पत्र आया। उसको पढ़ कर मैं सोच में पड़ गया!'

'क्यों, क्या बात थी?'

'पिता ने लिखा था कि अवस्था अच्छी नहीं है, अब नौकरी की चेष्टा करो। किसी राजनीतिक आन्दोलन के प्रारम्भ करने में ख़तरा है।'

'तो तुमने क्या सोचा? क्या तुम डर गये?'

'नहीं, नहीं, डरा नहीं।'

'तब क्या हुआ?'

'मैं हैरत में पड़ गया कि इस समय क्या करना उचित है। माता पिता का प्रेम एक तरफ खींचने लगा। दूसरी तरफ अपने सिद्धान्त का ध्यान आता था। सोचने लगा कि यदि इस समय मैं मुड़ जाऊँ तो लोग कायर और डरपोक समझेंगे।'

'निःसन्देह कायर समझे जाओगे।'

'नहीं, नहीं, सुनो, आगे क्या हुआ?'

'हाँ, कहो?'

'जब मैं इसी तरह सोच रहा था कि इस दशा में क्या करूँ तब तक दो मित्र आये और मुझे दल की बैठक के लिये ले गये। वहाँ पर एक प्रस्ताव के द्वारा यह निश्चय हुआ कि दल का कार्यक्रम फौसिस्ट सरकार की नौकरी मे प्रवेश कर पूरा करने की यथासाध्य चेष्टा करनी चाहिये।'

'तब तो तुम्हारे योग्य ही कार्य हुआ।'

'हाँ, क्यों नहीं ?'

'तब फिर किस नौकरी में घुसना चाहते हो ?'

'मैं कह नहीं सकता। जिस तरफ जगह मिल जायगी उधर चला जाऊँगा।'

'तो तुम्हारा कहीं प्रवेश है ?'

'यदि मेरा प्रवेश होता तब क्या था ?'

'तब कैसे क्या होगा ?'

'यही तो सोचता हूँ।'

'माता जी से इस विषय में कहो शायद वह किसी को जानती होंगी। उनके द्वारा कोशिश करने पर कोई काम मिल जाय।'

'इस कृपा विशेष के लिये तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।'

'मुझे तुम्हारे धन्यवाद को आवश्यकता नहीं है। तुम्हें अच्छी सी नौकरी मिल जाय, यही मेरी शुभ कामना है।'

'प्यारी तुम्हारी कृपा से अवश्य ही अच्छा काम मिलेगा। जब तुम्हारी इच्छा दृढ़ है, तब कार्य सफल होकर ही रहेगा।'

'अच्छा अब मैं जाता हूँ। मेरे लिये ख्याल रखना। फिर मिलूँगा।'

[३]

दिलतान्ती दख्वास्तें भेजते भेजते हैरान हो गया। कहीं जगह ख़ाली नहीं है। यदि कोई जगह कहीं ख़ाली है तो अफ़सरों के लड़के, भाई, भतीजे और दामादों को छोड़ कर किसी दूसरे को मुयस्सर नहीं होती। हज़ार योग्यता रहने पर भी किसी को कोई नहीं पूछता। पुतलीघरों में घूस लेने का तरीक़ा जारी है। रुपयों की आवश्यकता प्रत्येक जगह में है। वह विचारा किसान का लड़का बड़ी-सी रक़म घूस के लिये कहाँ पा सकता है?

वह परेशान हो गया। हतोत्साह बन कर अपने कमरे में सोया था। उसका मित्र ग्रैन्डी आ पहुँचा। ग्रैन्डी ने पूछा—'फिर आज तुम प्रसन्न नहीं जान पड़ते।'

'हाँ भाई, मैं इन दिनों बड़ा उदास रहता हूँ। कोई न कोई चिन्ता सदा घेरे रहती है।'

'अरे भाई, कौन सी ऐसी चिन्ता तुम्हारे सर आ गई है बताओ तो सही।'

'मैं क्या कहूँ?'

'कुछ तो कहो?'

'वही उसी दिन की बात है।'

'उसी दिन की बात है। क्या बात है?'

'नौकरी के लिये कितनी दरख्वास्तें भेजी गईं, परन्तु सभी का उत्तर 'नहीं' के साथ मिला। कहो ? मैं क्या करूँ ?'

'भाई, घबड़ाते क्यो हो ? घबड़ाने से कोई काम नहीं होता।'

'क्यों न घबड़ाऊँ ? तुम्हे तो घर से रुपया आता है। मौज से उड़ा रहे हो। तुम्हें क्या परवाह है ?'

'मुझे भी उतनी ही परवाह है, जितनी तुम्हें है। परन्तु तुम्हारी तरह मैं बहुत बड़ी नौकरी नहीं चाहता। मैं किसी भी नौकरी में जा सकता हूँ।'

'भाई, मै भी वही चाहता हूँ, पर कहीं मिले तब तो।'

'मिलेगी कैसे नहीं।'

'कहाँ मिल रही है ?'

'चलो, मैं तुम्हें फ़ौज में भर्ती करा देता हूँ। हज़ारों की संख्या में विद्यार्थियों ने फौज में अपना नाम लिखाया है। जब रोटी का प्रश्न सामने उपस्थित है तब मान और मर्यादा का ध्यान नहीं रहता।'

'जब फ़ौज में भर्ती होना ही है तब तुम्हारी सिफ़ारिश क्या है ?'

'कौन कहता है कि तुम मेरी सिफ़ारिश करो।'

'अच्छा, बतलाओ कि तुम अपने लिए कौन सा काम पसन्द कर रहे हो ?'

'मैंने अपने लिये निश्चय कर लिया है।'

'भाई, क्या निश्चय है ?'

'मैं भी फौज में भर्ती होऊँगा।'

'तब तो बस ठीक है। मेरी और तुम्हारी मित्रता सदा के लिये रह जायेगी।'

'तो बताओ कि कब इसके लिये दरख्वास्त दिया जाय।'

'भाई, अब तुम्हीं इसमें अगुआ बनो।'

'इसमें अगुआ बनने की कौन सी बात है।'

'तो यही ठीक करो कि इस दिन भर्ती करनेवाले अफ़सर के पास चला जाय। विलम्ब करने से कहीं यहाँ भी भर्ती बन्द हो जाय कि अब जगह नही है।'

'किस भुलावे में पड़े हो। भर्ती तो बन्द हो नहीं सकती। जितने पढ़े-लिखे नवयुवक हैं सब भर्ती किये जायेंगे और किसी लड़ाई मे जबर्दस्ती भेजे जाकर बलि चढ़ा दिये जायेंगे। इसी तरह फैसिस्ट सरकार ने बेकारी के प्रश्न को सुलझाने की योजना बनाई है।'

'बहुत ठीक योजना बनी है।'

'यही तो इटली का पुनर्जीवन फैसिस्ट रूप में हुआ है। रोमन साम्राज्य की प्रतिष्ठा स्थापित करने के नाम पर इटली के नवयुवकों की बलि होगी।'

'ग्रैन्डी, ठीक है, फौज में भर्ती होकर फौज के अन्दर क्रान्ति की जायेगी। फ़ौज को अपनी तरफ मिला कर सभी फैसिस्ट सरदारों को क़ैद कर इटली सरकार की बागडोर अपने

हाथ मे कर ली जायेगी। इस तरह साम्यवाद का आधिपत्य इटली में स्थापित होगा।'

'अवश्य ही।'

'मित्र, अपने साथी जितने ही फ़ौज में भर्ती हों उतना ही अच्छा है।

'तो फिर दूसरी बैठक में इस विषय पर निर्णय किया जाय।'

'दूसरी बैठक में इस विषय पर विचार करना अत्यावश्यक है।'

'तो हम लोगों के भर्ती होने का काम बैठक होने तक स्थगित रहेगा या इसके लिये काम शुरू किया जायगा।'

'नहीं, हम लोग अपना काम शुरू कर दें तो अच्छा है।

दिलतान्ती और ग्रैन्डी ने फ़ौज में भर्ती होने के लिये अपनी अपनी दरख्वास्तें दे दीं। क़रीब दो सौ उच्च शिक्षा प्राप्त इटालियनों ने भर्ती होने के लिये दरख्वास्त दिया था।

सभी लोग सैनिक अफ़सर के सामने खड़े किये गये। अफसर ने बारी बारी से सभी को बुला कर उनकी लम्बाई और उनके शरीर का गठन देखा। कुछ लोगों की शादी हो चुकी थी, वे लोग उसी समय निकाल दिये गये।

दिलतान्ती ने देखा कि फ़ौज में काम करना एक तपस्या है। तो क्या आगे चल कर उसे छोड़ देना पड़ेगा? क्या फ़ौज में

काम करने के लिये उसे टेसा को त्यागना पड़ेगा। कभी नहीं, कभी नहीं। ऐसा नहीं हो सकता है।'

डाक्टरी में भी दिलतान्ती और ग्रैन्डी योग्य निकले। दोनों मित्र भर्ती हो गये। लोगों को दूसरे दिन से ही परेड पर जाना होगा।

दिलतान्ती हास्टल में आकर अपना सब हिसाब वगैरह: चुकता करने के बाद अपने सामान को लेकर टेसा के घर जा पहुँचा। अब इन लोगों को सैनिक कैम्प में रहना पड़ेगा। उसने सोचा कि अपनी अनावश्यक वस्तुओं को टेसा के यहाँ रख दूँगा।

सब सामान के साथ आते देख कर टेसा की माँ ने कहा—'क्या हुआ ? क्यों सब सामान के साथ आ रहे हो ?'

'माँ जी, मैं फौज में भर्ती हो गया। इसलिये अनावश्यक चीजों को तुम्हारे यहाँ रख दूँगा।'

'तुम फ़ौज में भर्ती हो गये ?

'जी, हाँ ?'

तब तक टेसा भी दिलतान्ती की आवाज़ सुन कर दौड़ी हुई आई। टेसा को देखते ही दिलतान्ती ने कहा—'मैं तो फ़ौज में भर्ती हो गया !'

'ओ हो, इतनी जल्दी, क्या घबड़ाहट थी ?'

'कोई घबड़ाहट नहीं थी, परन्तु ग्रैन्डी के साथ मैंने भी दरख़्वास्त भेज दी और दूसरे दिन ही हम लोगों का चुनाव हो गया।'

'तो तुम आजसे फैसिस्ट सरकार के नौकर हो गये।'

'जैसा समझो।'

'तुम्हें यहाँ से कहीं दूसरी जगह जाना पड़े तब?'

'जाऊँगा। परन्तु टेसा, तुम्हारी याद आती है तब फ़ौज की नौकरी छोड़ देने की इच्छा करती है। इस नौकरी का क्या ठिकाना है? कहीं युद्ध-स्थल में गये और वहाँ मारे गये तब तो तुम्हें नहीं देख सकूँगा।'

'अरे तुम मुझको नहीं पावोगे। जब तुम्हारी जान ही न रही तो दूसरे रह के क्या करेंगे।'

'नहीं, नहीं, इस संसार में मै तुमको सबसे अधिक प्यार की नज़रों से देखता हूँ।'

इस तरह कहते हुये वह भावोन्मेष हो गया और टेसा से चिपट गया। उसके आँखों से नीर टपकने लगे। टेसा भी विचलित हो गई।

'देखो, इस तरह न रोवो। कोई आज ही तो जुदाई हो नहीं रही है?'

'नहीं, तुमको छोड़ कर जाने की आशंका से ही मेरा कलेजा काँप उठता है।'

'भविष्य के लिये अधिक चिन्ता नहीं करना चाहिये। जब तक तुम यहाँ रहोगे तब तक तो अवश्य ही आओगे।'

'हाँ, क्यों न आऊँगा? परन्तु तू नहीं जानती कुछ लोग

फ़ौज में इसीलिये शामिल नहीं किये गये; क्योंकि उन लोगों ने शादी कर ली है।'

'यह ऐसी बात है।'

'ऐसा नियम रंगरूटों के लिये ही है।'

'अफ़सरों के लिये नहीं है।'

'बड़ी बेजा बात है!'

[४]

दिलतान्ती फ़ौज में भर्ती हो गया। पिता के यहाँ से भी पत्र आ गया। मन बहलाने के लिये ग्रैन्डी इत्यादि साथी भी थे। प्रातःकाल बैन्ड बजते ही परेड के लिये तैयारी करना पड़ता था। प्रतिदिन प्रातःकाल उठ कर पुस्तकों का अध्ययन करना छूटा। संसार के इतिहास की उथल-पुथल में छान-बीन करने की प्रवृत्ति से क़वायद वृत्ति में भेद पड़ता है।

दोपहर को भोजन करना, फिर थोड़े से आराम के बाद सैनिक क्लास में जाना पड़ता था। फिर उसके बाद खेलने के लिये छुट्टी मिलती थी। अनुशासन इतना कड़ा था कि दिलतान्ती के मस्तिष्क से बराबर भिड़न्त हो जाता परन्तु कोई उपाय नहीं था।

पिता जी के कहने पर उसने नौकरी कर ली। पैसे के लिये अपनी आत्मा का हनन कर दिया। उसका दिमाग़ साम्यवाद

के सिद्धान्तों से गुंथा हुआ था,फैसिस्ट रस्म और रिवाज से उसे बड़ी चिढ़ आती थी।

सब से बड़ी बात यह थी कि उसको अपने प्रेयसी के यहाँ जाने का समय ही नहीं मिलता था। जिसके हृदय में प्रेम-तीर घुस चुका है, उसे बिना तीर मारनेवाले के चैन नहीं मिलता। भँवरे को बिना पुष्प के शान्ति नहीं मिलती। उस पर भी नव-यौवन रूपी वसन्त में जब प्रेम-कली खिल उठती है, और मधुमास का सौरभ हृदय को प्लावित करने लगता है, तब काम-बाण अधिक कष्टदाई होने लगता है। सैनिक कैम्प में हज़ारों के बीच में रहते हुए भी दिलतान्ती अकेलपन को अनुभव करता था। उसे प्रतीत होता था कि वह एक विजन वन में फेंक दिया गया है, जिससे निकलने का कोई रास्ता नहीं दिखलाई पड़ता। सैनिक जीवन उसको सूखा-सा मालूम होता। अब तो उसमें बँध चुका था, छूटने की कोई तरकीब नहीं थी। रहता रहता उसका जी ऊब जाता। दाँत पीस पीस कर मसोसने लगता। ग्रैन्डी को भली बुरी बातें कहता। उसी के कहने पर इतनी जल्दी दिलतान्ती ने सैनिक जीवन को अपनाया।

सूचना आई थी कि संध्या समय पाँच बजे दल की बैठक है। वहाँ उसका जाना अत्यावश्यक है। यदि उसे छुट्टी न मिली तब क्या होगा ? मिलिटरी-अहाते के भीतर कोई दूसरा आ भी नहीं सकता था। बिना आज्ञा के अहाते के बाहर भी जाना जुर्म था।

चार बज चुका था, ग्रैन्डी अपने वार्ड से दिलतान्ती के वार्ड में आ पहुँचा। ग्रैन्डी ने कहा—'कैसे चलोगे ?'

'तुम्हीं बतलाओ कैसे चला जाय ?'

'जब सब लोग खेलने लगें तो उसी समय मैदान से टहलते टहलते कुछ दूर आगे निकल चलेंगे। दूसरे साथी भी तब तक पहुँच जायेंगे।'

खेलने का समय हो ही गया था। मैदान मे टहलने के लिये लोग आगे बढ़े। दूसरे रंगरूट खेल रहे थे। ये लोग अपने वांछित स्थान की तरफ चले। कुछ दूर निकल गये। जब आँखों से ओझल हो गये, तब तेजी से चल कर अपने साथियों से मिल गये।

वे ही साथी थे। ग्रैन्डी ने कहा—'भाई, जल्दी करना चाहिये। वहाँ छुट्टी नहीं मिलती। हम लोगों को बहुत जल्द लौट जाना चाहिये।'

दिलतान्ती—'मेरा प्रस्ताव है कि सभी लोग सेना में भर्ती हो जायँ। सेना में क्रान्ति फैलाना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। इसी मे हम लोगों के ध्येय का पूरा होना सम्भावित हो सकता है। जहाँ जहाँ दल स्थापित किया गया हो वहाँ भी यही खबर देनी चाहिये। सेना हम लोगों की तरफ हो जाय तो सरकार पर कब्ज़ा कर लेना मुश्किल नहीं है।'

मित्र नं० पाँच ने दिलतान्ती का समर्थन किया। ग्रैन्डी ने भी अनुमोदन किया।

देरी हो रही थी। दिलतान्ती और ग्रैन्डी चल पड़े। मैदान में आकर खेल देखने लगे। थोड़ी देर मे बैन्ड बजा। सभी लोग अपने अपने निवास-स्थान की तरफ चले। सभी लोग अपने अपने भोजनालय में जाकर डट गये।

× × ×

सब कुछ हो रहा था। दिलतान्ती का दिल न लगता। टेसा के बिना उसको चैन कहाँ था? उसने सोचा कि टेसा समझती होगी कि दिलतान्ती उसे भूल गया। उसने एक पत्र लिखा:—

सैनिक कैम्प
२०-१२-३१

प्रिय टेसा,

जैसा मैंने सोचा था वैसा ही हुआ। तूने मेरे आँसू पोंछते हुए कहा था कि जब तक यहाँ से चले न जाओगे तब तक तो आते ही रहोगे। कैम्प से बाहर जाने की छुट्टी नही मिलती। तुम्हारे साथ चाय पिये हुए न जाने कितने दिन हो गये। मैं तो अकेलापन अनुभव कर रहा हूँ। मेरे लिये यह हज़ारों आदमियों से भरा हुआ कैम्प मरुभूमि सा मालूम होता है।

तुम्हारी मधुर स्मृति मेरे नेत्रों के सामने नृत्य करती रहती है। अब तो आँसू भी नही गिरते। भला, किस तरह गिरे, आँसुओं के गिरने के लिये रुकावट पड़ गई है। तुम्हारी तस्वीर मेरी आँखों में समा गई है। आँसू रुक जाते हैं। ऐसी अवस्था

में मेरी हालत तू अच्छी तरह समझ सकती हो। देखें, कब तुमसे साक्षात्कार होता है।

तुम्हारा प्रेमी
दिलतान्ती

पत्र भेजने पर उसके हृदय में एक शान्ति मिली। अब उसके हृदय में यही धुन थी, कि मेरा पत्र टेसा को कब मिलेगा। पत्र के साथ ही उसका मन दौड़ रहा था। सोचता था कि पत्र उसे संध्या समय मिलेगा। एकाएक वह पत्र पाकर विस्मित हो जायेगी। सोचने लगेगी कि इसी नगर में रह कर उसे छुट्टी नहीं मिलती कि एक बार भेंट कर जाय।

एक छोटी सी घटना हो गई। ग्रैन्डी ने उसे पत्र छोड़ते देख लिया था। ग्रैन्डी जब दिलतान्ती से मिला तब उससे पूछने लगा कि—'दोस्त, तूने पत्र कहाँ भेजा है? अभी हाल ही में पत्र घर भेज चुके थे। क्या किसी प्रेयसी के पास भेज रहे हो?

'नहीं, दोस्त।'

'नहीं, नहीं; बतलाओ, तूने पत्र कहाँ भेजा है?'

'क्या बतलाऊँ, मेरे एक मित्र हैं जिससे मिले हुए बहुत दिन हो गये थे।'

'उसका नाम क्या है?'

'उसका नाम, उसका नाम टेसा है।'

'ओ हो, टेसा, तुम्हारी प्रेयसी है। तुम बड़े भाग्यशाली हो। अच्छा, जब शादी हो तब मुझे भी निमंत्रण देना।'

[९]

बड़े दिन का दिन था। परेड होने के बाद छुट्टी मिल गई थी। लोग इधर उधर जा सकते थे। दिलतान्ती भी बड़े दिन की शुभकामना देने के लिये टेसा के यहाँ जल्दी से भागा। ग्रैन्डी का साथ छुड़ा कर वह अकेले जाना चाहता था। वह धीरे से बाहर निकल गया।

मिनटों में टेसा के यहाँ जा पहुँचा। बड़े दिन का पुरस्कार बड़ी ख़ुशी के साथ टेसा को देते हुए उसका मुख चूम लिया और लिपट गया। बहुत दिनों के बाद दोनों प्रेमी एक दूसरे से मिले थे।

टेसा की माँ बहुत दिनों से बीमार हो गई थी। काफी औषधि का उपचार हो रहा था। टेसा दिन रात अपनी माँ की सेवा में लगी रहती थी। उसकी माँ ने दिलतान्ती को बार बार बुलाने के लिये कहा था परन्तु टेसा को मालूम नहीं था कि वह किस बैरक मे रहता है।

स्वयं तो वहाँ जा नहीं सकती थी। टेसा ने सोचा था कि बड़े दिन को छुट्टी अवश्य मिलेगी।

दिलतैन्ती ने रुग्ण-शय्या पर लेटे हुए माँ का अभिवादन किया। टेसा की माँ बड़ी प्रसन्न हुई। उसी तरह लेटे हुए कहना प्रारम्भ किया—'बेटे, तुम्हें देखने के लिये कितने दिनों से इच्छा थी। मेरी तबीयत दिनोदिन बिगड़ती जा रही है।

मेरा कोई ठिकाना नहीं। मुझे विश्वास हो गया है कि मैं थोड़े ही दिनों की मेहमान हूँ। मेरी अन्तिम अभिलाषा पूरी कर दो। मेरे सामने ही तुम्हारा और टेसा का पाणिग्रहण हो जाय तो बड़ा अच्छा है। आज ही का दिन बड़ा शुभ है। आज ही गिरजाघर में जाकर विवाह हो जाय।'

दिलतैन्ती ने उत्तर दिया—'माँ तुम जैसा चाहो वैसा कर सकती हो। मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन सदा से करता आया हूँ।'

टेसा की माँ ने रेवरेन्ड पुलोडीनी को बुला भेजा।

रेवरेन्ड पुलोडीनी के आने पर टेसा की माँ ने उनकी तरफ घूमते हुए कहा—'रेवरेन्ड पुलोडीनी, तुम मेरे पुराने साथी हो। मैं रुग्ण शय्या पर अपनी अन्तिम श्वासें गिन रही हूँ। मैं चाहती हूँ कि मेरे सामने ही इस युगल जोड़ी का प्रणय-बंधन आपस में हो जाय।'

रेवरेन्ड—'मैं तुम्हारी बात मानने के लिये सहर्ष तैयार हूँ। मुझसे जो कुछ सेवा हो सकेगी मैं करने पर तैयार हूँ।'

'तो मेरी इच्छा है कि इन्हें आज ही चर्च मे ले जाकर व्याह करा दो। मेरा अब ठिकाना नहीं है।'

'मुझे कोई आपत्ति नहीं है।'

'आज से बढ़ कर दूसरा कौन सुन्दर दिन आयेगा।'

दिलतैन्ती ने कहा—'माँ, हम लोगों के पास शादी की पोशाक नहीं है।'

'हाँ' ठीक है। शादी की पोशाक नहीं बन सकी। परन्तु तुम्हारे कपड़े बड़े सुन्दर हैं। शादी आदमियों की होती है, पोशाकों की नहीं। मुझको इसमें कोई विश्वास नहीं है।'

पुलोडीनी—'पोशाक रहे तो अच्छा ही है। नहीं रहने पर और समय की विशेषता के कारण सादे पोशाक के साथ शादी हो सकती है।'

सभी लोग एक प्राइवेट गिरजाघर में गये। बूढ़ी और पीड़ित माँ भी गई।

× × ×

दोनों प्रणय-सूत्र में बँध गये। सभी लोग खुशी के साथ घर लौटे। टेसा की माँ सब से प्रसन्न थी। साहस बाँध कर ही वहाँ गई थी। शय्या पर लेटते ही उसे बुखार आ गया। परन्तु टेसा की माँ इस जोड़ी की खुशी मे बाधा न डालने के अभिप्राय से अपने धैर्य को बाँधे रही। अपनी पीड़ा लेश-मात्र भी प्रकट होने नही देती थी। बड़े साहस के साथ माँ ने कहा—'बेटा, आज मेरा प्रण पूरा हुआ। मैं, भगवान् को धन्यवाद देती हूँ कि मरते मरते मेरा प्रण पूरा किया। अब तुम लोग अपने जीवन की नैया एक साथ और लगन से निबाहने की चेष्टा करना। मैने दोनों को शिक्षा दी है। दोनों के हृदय में एक ही अग्नि जलती है।

जैसी जोड़ी तुम लोगों की मिली है, वैसी बहुत कम देखने में आती है। तुम दोनों का प्रेम प्रगाढ़ होने मे बहुत दिन लगे।

छोटे बच्चे थे तभी से तुम लोग साथ खाते खेलते रहे। ईश्वर की कृपा से वह साथ जीवन क्षेत्र में भी बना रहेगा।'

टेसा की माँ ने बड़े साहस के साथ इतना कहा था। उसका कंठ अवरुद्ध हो गया।

दिलतान्ती ने अपनी अँगूठी टेसा को पहना दी। टेसा ने भी माता की दी हुई एक अँगूठी को दिलातन्ती को पहनाया। दोनों एक दूसरे से लिपट गये।

दिलतान्ती ने कहा—'प्यारी, मुझे छुट्टी दो। मेरा एक मित्र मुझे ढूँढ़ता होगा बड़े दिन की छुट्टी हुई थी। दोनों आदमी ने यह विचार किया था कि साथ ही घूमने निकलेंगे। परन्तु मैं बिना उससे कहे तुम्हारे यहाँ चला आया था। मेरे लिये वह घबड़ाता होगा।'

टेसा—'वह कौन सा मित्र है ?'

दिलतान्ती—'उसका नाम ग्रैन्डी है। वह मेरे साथ ही पढ़ता था। वह भी फ़ौज में भर्ती हुआ था। अपने दल का एक होनहार युवक है।'

टेसा—'अच्छा, जाओ, उसे भी बुलाते आना सहभोज में सम्मिलित हो जायगा।'

दिलतान्ती वाइक लेकर कैम्प की तरफ चला। अभी थोड़ी ही दूर गया होगा कि उसका मित्र ग्रैन्डी उधर से आता हुआ दिखलाई पड़ा। ग्रैन्डी बहुत देर तक दिलतान्ती की खोज करता रहा पर जब पता नहीं लगा तब वह भी अकेले ही निकल पड़ा।

दिलतान्ती को देख कर ग्रैन्डी बड़ा प्रसन्न हुआ, साथ ही विस्मित भी हुआ। ग्रैन्डी ने कहा--'तुम कहाँ गये थे? बिना कहे हुए भाग आये। कह कर आते तो क्या मैं कुछ छीन लेता?'

'तुम इतने नाराज़ क्यों हो? ऐसी ख़बर मेरे पास आई थी कि जल्दी से जल्दी आओ। ज्योंही काम समाप्त हो गया त्यों ही तुमसे मिलने के लिये दौड़ा आ रहा हूँ।'

'मुझसे बहानेबाज़ी नहीं लग सकती है। तुम ज़रूर अपने प्रेयसी से मिलने गये थे। सोचते होगे कि ग्रैंडी को लेकर जाने में बाधा होगी।'

'मेरे मित्र, क्षमा करो। मैं वहीं गया था। संध्या समय तुझे भी वहाँ ले चलूँगा। घबड़ाओ मत।'

'मैं क्यों घबड़ाऊँ?'

'तो क्या नाराज़ ही रहोगे?'

'नाराज़ रहने की कोई बात नहीं है। मैं किसी को कहीं जाने से रोकता नहीं। तुमने ही ठीक किया था कि साथ ही टहलने चलेंगे।'

फिर दोनों आदमी टहलते हुये शहर घूमने गये। कुछ देर बाद टेसा के यहाँ जा पहुँचे। वहाँ प्रीतिभोज सादर सम्पन्न हुआ। सभी लोग रात को तमाशा देखने गये। इस तरह दिलतान्ती की शादी टेसा के साथ हो गई। शादी तो हो गई परन्तु यह नहीं जाना जाता कि उसको कभी सोहागरात का भी

मौक़ा मिलेगा। उस रात को विचारा ग्रैंडी के साथ कैम्प को लौट आया।

[६]

ग्रैन्डी नहीं जानता था कि दिलतान्ती और टेसा में इतना प्रेम है।

टेसा को उसने पहले भी देखा था परन्तु विशेष ध्यान से नहीं। देखे हुए काफी दिन हो गये थे। इतने ही दिनों में टेसा बिल्कुल बदल गई थी। अब तो वह खिली हुई कली और सौन्दर्य की परी थी। बड़े दिन के अवसर पर उस प्रणय-पोशाक और उपहार के साथ सौन्दर्य अनुपम हो गया था।

मेज़ पर बग़ल में ही बैठ कर उसकी छटा को निहारता ही था। वह जो कुछ कहती, उसे चुपचाप सुन लेता। उसकी मुस्कराहट में स्वर्ग का आनन्द अनुभव करता था। उसकी तिरछी निगाहों से उसके कलेजे पर काफी चोट पहुँच रही थी। जिसे वह भीतर ही भीतर अनुभव करने लगा। उसकी काली काली आँखें, लाल लाल होंठ और गुलाबी चिबुक से मधुमास की मादकता टपक रही थी। ग्रैन्डो अपने जीवन मे पहली बार सौन्दर्य के बाण से वेधित जान पड़ा।

उस रात को हज़ार चेष्टा करने पर भी उसे नींद नहीं आई। रात भर करवटे बदलता रहा। जाड़े की रात, उस पर भी सबसे बड़ी रात, दिन भर के थके माँदे रहने पर भी नींद

नहीं आई। थियेटर हाल में हरे और लाल बल्वों के प्रकाश में उसके सौन्दर्य को देख चुका था। उसकी नज़रों से वह दृश्य कभी उतरता नहीं था।

प्रातःकाल उठा। परेड पर गया। दूर से ही दिलतान्ती दिखलाई दिया। परन्तु आज उसमे प्रति दिन की स्फूर्ति नहीं थी। ग्रैन्डी जिस उत्साह और प्रसन्न मन के साथ अपने मित्र से मिलता था वह आज नहीं था। दिलतान्ती की तरफ पैर बढ़ाने की इच्छा न होती थी। अपने को उसकी नजरों से बचाना चाहता था।

परेड समाप्त होने के बाद प्रति दिन ग्रैन्डी दिलतान्ती से मिलता था पर आज नहीं गया। अपने बैरक में चला गया। उसको दिलतान्ती के कुछ द्वेष हो गया। दिलतान्ती अगर ग्रैन्डी से छिपा कर न जाता तो शायद टेसा की तरफ ग्रैन्डी का इतना आकर्षण नहीं होता।

दिलतान्ती के छिप कर जाने से ग्रैन्डी का भाव केन्द्रित हो गया। उसमें उत्सुकता बढ़ गई।

× × ×

दिलतान्ती स्वयं ही ग्रैन्डी के पास आया। आते ही उसने कहा—'दोस्त, मालूम होता है कि तुम हमारी ग़ल्ती को भूले नहीं हो।'

'कैसे जानते हो कि मैं तुम्हारी भूल अब तक छिपाये रखा है?'

'क्यों नहीं, आज तुमको मैंने देखा कि बड़ी जल्दी जल्दी कन्नी कटाते हुए परेड के मैदान से चले आये।'

'यह बात नहीं है। रात को बहुत देर जगे रहने से शरीर भारी मालूम पड़ता था, नहीं तो मैं अवश्य ही आता। तुम कुछ छिपा सकते हो, मेरे पास छिपाने के लिये कुछ नहीं है।'

दिलतान्ती अपनी झेंप मिटाने के लिये तुरंत ग्रैन्डी से क्षमा माँगने लगा। ग्रैन्डो ने कहा—'भाई, मैं तुमसे क़तई नाराज़ नहीं हूँ। बल्कि मैंने गल्ती की कि अभी तक तुमको धन्यवाद न दे सका। कोई देरी नहीं हुई है। मेरी शुभ कामना स्वीकार करो। तुम्हारी स्त्री बड़ी सुन्दर है। उसकी सुन्दरता में सौरभ भरा है। फिर भी यह युगल जोड़ी आदर्श है। तुम दोनों के विचार एक हैं। जीवन में इससे बढ़ कर कौन सी सुन्दर चीज़ हो सकती है कि तुम दोनों का प्रेम परिपक्व होने के बाद प्रणय-सूत्र में गुंथा गया है। मेरी समझ मे तुम सा भाग्यवान मुसोलिनी भी इस मामले में नहीं है।'

'भाई, तुम्हारी शुभ कामना के लिये धन्यवाद। तुम्हारी कृपा मेरे ऊपर विशेष प्रकार से रही है। हम तुम आज से नहीं बल्कि जब हम लोग छोटे थे तभी से एक साथ खाते खेलते आये हैं। हम दोनों के विचारों में भी समता है। हम दोनों एक ही उद्देश्य से प्रेरित होते हैं। इस संसार में मित्र की आवश्यकता

प्रेयसी से कम नहीं है। तुम्हारा जैसा मित्र और टेसा जैसी सुन्दरी पाकर मैं अवश्य ही कृतकृत्य हूँ।'

दिलतान्ती के चले जाने के बाद ग्रैन्डी अपने मित्र के भाग्य पर विचारने लगा। दिलतान्ती के मुख से प्रसन्नता के शब्द सुनकर ग्रैन्डी ने सोचा—उसकी अवस्था इस हद तक आ गई। मै ही सब से अभागा हूँ। यदि मैं भी टेसा के यहाँ आता जाता रहता तो उसको अपनी तरफ खींच लेता। टेसा एक सौन्दर्य चुम्बक है। जो कुछ हो टेसा से बातें करने मे आनन्द आ रहा था। दिलतान्ती से उसने शादी कर ली। परन्तु इससे क्या ? उससे बातें करने में कोई दोष नहीं। प्रेम करना दूसरी चीज़ है। हाँ, प्रेम भी निस्पृह हो सकता है। मैं उससे प्रेम करना चाहता हूँ। वह सचमुच प्रेम करने की चीज़ है।'

[७]

सभी बैरकों के सामने बोर्ड पर नोटिस चिपकायी हुई थी। कमानडिग आफिसर निरीक्षणार्थ आ रहे हैं। सभी लोगों को ख़ास हिदायत मिली थी कि अपनी अपनी पेटी, नम्बर इत्यादि खूब साफ़ रखें। प्लैटुन अफसर घूम घूम कर सब की सफ़ाई देख रहे है।

बैन्ड बजते ही लोग परेड के मैदान में दाखिल हुए। कवायद होने लगी। आज झूठी लड़ाई का समाँ बँधने वाला था। क़रीब तीन घंटे तक यह तमाशा होता रहा। गोली आते समय किस

तरह खाईं मे सो जाना होगा। फ्रन्ट रैंक के मारे जाने पर किस तरह उसकी जगह लेना होगा। शत्रु की गोली का अन्दाज़ा लगा कर कितनी दूरी पर मोर्चा रखना होगा। अलटिरी पर और साइड-वे आक्रमण पर किस तरह अपने को सुरक्षित रखना होगा। इस तरह के खेल सिखाये गये। अन्त में यह सुनाया गया कि दूसरे दिन आठ बजे कमान्डिग अफ़सर परेड मैदान में आयेगे। कल पाँच बजे ही सब को यहाँ आना पड़ेगा।

दूसरे दिन बहुत सवेरे ही परेड मैदान मे लोग आ खड़े हुए। सभी अफ़सर अपने अपने प्लैटुनों को कायदा सिखला रहे थे। आठ बजने पर बैन्ड बजा। बैन्ड बजते ही हरहराती हुई दो तीन मोटरे आती दिखलाई पड़ी। छः सात अफ़सर उतरे। उतरते ही अफसर-इन-चार्ज ने जाकर फैसिस्ट सैल्युट दिया और लोग मैदान की तरफ बढ़े। कवायदें बन्द हो गईं। सभी लोग लाइन मे एक जगह खड़े किये गये। अफसरों के आते ही फैसिस्ट सलामी दगने लगी। फिर सभी लोग अलग ले जाये गये। कवायद फिर शुरू हुई। अफसरों ने बारी बारी से सभी प्लैटुनों की efficiency देखनी प्रारम्भ की। करीब दो घंटे लोगों को निरक्षण करने में लगे। अफसर लोगों के जाने के बाद हम लोगों की छुट्टी हुई।

संध्या को सभी प्लैटुनों की परेड मैदान में मीटिंग हुई। कमान्डिङ्ग अफसर ने फासिस्ट सरकार की तरफ से सैनिकों को address किया। बड़े फड़कते हुए शब्दों में उन्होंने कहा—

'फासिस्ट सरकार वर्त्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति को बड़े ध्यान से देख रही है। सभी राष्ट्र अपनी अपनी शक्ति दृढ़ करने मे लगे हुए हैं। इटली इस अन्तर्राष्ट्रीय होड़ में किसी से पीछे नहीं रह सकता। यह राष्ट्र अपनी खोई हुई रोमन साम्राज्य की श्री को प्राप्त करने की चेष्टा कर रहा है। इस पृथ्वी मण्डल पर रोमन लोगों का प्रादुर्भाव संसार में सभ्यता प्रसार करने के लिये हुआ है। जिस तरह से रोमन लोगों ने पृथ्वी विजय करके सभ्यता का प्रसार किया था, उसी तरह फासिस्ट सरकार ने भी पिछड़ी हुई जातियो को जीत कर उन्हे सभ्य बनाने का विचार किया है। सभ्यता के आदि काल से ही रोमन साम्राज्य एशिया-माइनर और अफ्रीका के उत्तरी हिस्से तथा ब्रिटेन तक फैला हुआ था। भूमध्य सागर रोम के सम्राटों का अपना क्रीड़ा-सर है। इसमे अन्य राष्ट्रों का अधिकार नहीं रह सकता। फासिस्ट सरकार ने सोमाली लैण्ड की सीमा पर नये पैंटुनों के भेजने का विचार किया है। अतः यहाँ से पाँच पैंटुने भेजी जायेगी। सभी लोग जाने के लिये तैयार रहें। जब आर्डर आ जाय तब तुरन्त रवाना होना होगा।'

सभा समाप्त होने के बाद मानों रंगरूटों में खलबली मच गई। यों तो अखबारों मे राजनीतिक चर्चाये काफी हो रही थी। फासिस्ट सरकार की साम्राज्यवादी कार्यक्रम की चारों तरफ धूम मची हुई थी। इटली मे फासिस्ट सरकार के विरुद्ध कुछ लिखने का साहस किसी को नहीं था। फासिस्ट अखबारों में अफ्रीका में

इटली के उपनिवेश स्थापित करने में लिये वरावर अग्रलेख लिखा जाता। अँग्रेजी साम्राज्य को फासिस्ट कार्यक्रम का शत्रु समझा जाता। इङ्गलैण्ड के विरुद्ध आन्दोलन अखवारों में खूब जारी था। वहुत दिनों से अफ्रीका के उत्तरी भाग पर आधिपत्य जमाने की योजना सुनाई दे रही थी। परन्तु लोगों को यह नहीं मालूम था कि इतनी जल्दी साम्राज्यवाद की लड़ाई शुरू होगी।

फैसिस्ट सरकार के अखबारों में अडोवा का बदला लेने के लिये बड़े उग्र लेख निकलते थे। इससे अनुमान होता था कि अबीसीनिया से ही इटली लोहा लेना चाहता है। फिर भी, अबीसीनिया के अतिरिक्त कोई दूसरा देश नहीं था जिस पर यूरोपीयन राष्ट्रों का अधिकार नहीं था, अबीसीनिया ही एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अफ्रीका ऐसे विशाल महादेश में विराजमान था। इटली ने अबीसीनिया पर वहुत दिनों से आँख गड़ायी थी। अबीसीनिया के कुछ हिस्सों पर इटली का अधिकार हो चुका था। अडोवा के मैदान में काली जाति ने यूरोप की सवर्ण जाति को नीचा दिखाया। इस कड़ी घूँट को इटली ने बड़ी कठिनता के साथ उस समय पान कर लिया। गोरी जातियों की बड़ी मानहानि हुई थी। मुसोलिनी उस खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करना चाहते हैं।

× × ×

बहुत शीघ्र अफ्रीका जाने की आज्ञा से एक अजीब-सा जोश उबलता दिखाई दे रहा था। साम्यवादियों के हृदय में कँपकँपी-

सी हो गई। सोचने लगे जब लड़ाई शुरू हो जायगी तब उनका किया कुछ नहीं हो सकेगा, लड़ाई की मादकता में विलक्षण शक्ति है। भावोन्मुख जनता हज़ारों की संख्या में अपनी इह-लीला समरांगण में समाप्त करने की इच्छा से दीप-कीट की तरह दौड़ आयगी।

साम्यवादी दल की एक असाधारण बैठक संध्या समय होने को है। सभी साम्यवादी उक्त स्थान पर पहुँचने की चेष्टा कर रहे हैं। आज की बैठक बड़ी महत्वपूर्ण होने को है। साम्यवादी कार्यक्रम में एक अनूठा turn दिया जायगा। ग्रैंडी और दिल-तान्ती भी जा पहुँचे। अँगूर की झाड़ियों के पीछे सभी लोग जा बैठे।

मित्र नं० पाँच ने सभापति का पद ग्रहण किया। बैठक आरम्भ हुई। सभापति ने कहा कि फैसिस्ट सरकार के अफ्रीका में सेना भेजने की आज्ञा से परिस्थिति बिल्कुल बदल गई है। शंका है कि अबीसीनिया के विरुद्ध फासिस्ट सरकार संग्राम शुरू करेगी। सभापति ने सर्वप्रथम अबीसीनिया के प्रति लड़ाई छेड़ने की फैसिस्ट मनोवृत्ति के विरोध का प्रस्ताव किया। यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। दिलतान्ती ने दूसरा प्रस्ताव किया कि इस प्रस्ताव की कापियाँ प्रकाशित की जायँ। उसको इटली भर में प्रचार किया जाय। यह प्रस्ताव भी सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। इसके बाद ग्रैन्डी ने पुनः इस अवसर

पर कार्य आरम्भ करने की आवश्यकता पर अपना विचार प्रगट किया।

उसने कहा—'मित्रो, अफ्रीका जाने की आज्ञा से सम्पूर्ण सैनिक कैम्प में खलबली मच गई है। ऐसा कौन सा आदमी होगा जो स्वेच्छापूर्वक अपना जीवन बलि देने के लिये तैयार होगा। अपने प्राणों की आहुति लोग खुशी से तभी करते हैं जब कोई राष्ट्रीय संकट उपस्थित हो जाय। पूँजीवादियों की गाँठ दृढ़ करने के लिये या फैसिस्ट सरकार अपनी शक्ति मजबूत करने के लिये ही यह लड़ाई छेड़ रही है। विचारे ग़रीबों के लिये किसी तरह लाभदायक नहीं हो सकता। यदि किसानों के लिये अन्न का भाव बढ़ जाय और मज़दूरों के लिये मज़दूरी बढ़ जाय तो इधर और वस्तुओं की क़ीमत बढ़ जायेगी। कई तरह के टैक्स लिये जायेंगे। इस प्रकार आमद और खर्च बराबर ही रहेगा। ग़रीबों की स्थिति जैसी रही वैसी ही रह जायेगी। हाँ, पूँजीपतियों के धन की वृद्धि होगी। मनमाना तौर से वस्तुओं की क़ीमत रक्खेंगे। आयात् निर्यात लड़ाई के समय बन्द होने का डर रहता है। उस समय इन पूँजीपतियों का दाव लग ही जाता है। शस्त्र बनाने तथा transport इत्यादि में सरकार से भी धन पैदा करते है। सरकार को रुपये की जरूरत रहती है और इन्हीं पूंजीपतियों से रुपये लेकर, इन्हीं के मन लायक कार्य हुआ करता है। साम्यवाद इस संग्राम को स्वदेशहित तथा विश्व-हित की दृष्टि से

पर कार्य आरम्भ करने की आवश्यकता पर अपना विचार प्रगट किया।

उसने कहा—'मित्रो, अफ़्रीका जाने की आज्ञा से सम्पूर्ण सैनिक कैम्प में खलबली मच गई है। ऐसा कौन सा आदमी होगा जो स्वेच्छापूर्वक अपना जीवन बलि देने के लिये तैयार होगा। अपने प्राणों की आहुति लोग खुशी से तभी करते हैं जब कोई राष्ट्रीय संकट उपस्थित हो जाय। पूँजीवादियों को गाँठ दृढ़ करने के लिये या फैसिस्ट सरकार अपनी शक्ति मज़बूत करने के लिये ही यह लड़ाई छेड़ रही है। विचार ग़रीबों के लिये किसी तरह लाभदायक नहीं हो सकता। यदि किसानों के लिये अन्न का भाव बढ़ जाय और मज़दूरों के लिये मज़दूरी बढ़ जाय तो इधर और वस्तुओं की क़ीमत बढ़ जायेगी। कई तरह के टैक्स लिये जायेंगे। इस प्रकार आमद और खर्च बराबर ही रहेगा। ग़रीबों की स्थिति जैसी रही वैसी ही रह जायेगी। हाँ, पूँजीपतियों के धन की वृद्धि होगी। मनमाना तौर से वस्तुओं की क़ीमत रखेंगे। आयात निर्यात लड़ाई के समय बन्द होने का डर रहता है। उस समय इन पूँजीपतियों का दाव लग ही जाता है। शस्त्र बनाने तथा trans-port इत्यादि में सरकार से भी धन पैदा करते हैं। सरकार को रुपये की जरूरत रहती है और इन्हीं पूंजीपतियों से रुपये लेकर, इन्हीं के मन लायक कार्य हुआ करता है। साम्यवाद इस संग्राम को स्वदेशहित तथा विश्व-हित की दृष्टि से

हानिकारक और सभ्यता के विनाश की संभावना देखता है। इसी समय लोगों में पर्चे बँटवा कर लोगों की अव्यवस्थित मनोवृत्ति का फ़ायदा उठाया जाय।

दिलूतान्ती ने ग्रैन्डी का अनुमोदन बड़े ओजस्वी शब्दों में किया—'मित्रो कामरेड ग्रैन्डी ने बड़ी उपयुक्त बातें कही हैं। फासिस्ट सरकारी ने देश के होनहार शिक्षित नवयुवकों को सेना में भर्ती करके उन्हें अफ्रीका के जंगलों और पहाड़ों में भेज कर प्राण लेने का निश्चय किया है। इन नवयुवकों की शिक्षा में देश का कितना धन लगा है। इनके ऊपर न जाने कितने मनसूबे बाँधे गये होंगे। इनके माता पिता ने किस लालसा से कष्टसहन करके इतना बड़ा किया होगा। देश कितनी उत्सुकता के साथ इनके ऊपर आँख लगाये होगा। समाज भी किस उल्लसित नेत्रों से इनके भविष्य के लिये इतराता होगा। क्या ये आशायें अफ्रीका की मरुभूमि में पुष्पित और पल्लवित होंगी? क्या वे मरुभूमि में विज्ञान के जोर से अमृत बरसायेंगी। क्या इनकी मृत्यु से ही सभी मनोकामनायें पूर्ण होंगी? बेकारी समस्या के हल करने का विलक्षण यह रूप है। इसी बुद्धि पर पूँजीवाद और सैनिकवाद गर्व करता है। राष्ट्र के सुन्दर पुष्पों को रण-चण्डिका की बलि देकर कमजोर, बुजदिल और निकम्मे लोगों को अपना हिमायती बनाना चाहता है। ठीक है, सीजर और मेकियावली ने रोमन सभ्यता के लिये कब्र तैयार किया था। मुसोलिनी उस कब्र को सदा के लिये प्लास्टर करने की चेष्टा में है।

साम्यवाद ही इस युग में मनुष्यों की आशा है। ग़रीबों की आह का द्योतक है। संसार की सभ्यता का रक्षक है। लड़ाई छिड़ने के पहले सेना मे विद्रोह करना अत्यावश्यक है।'

सभी ने सर्व-सम्मति से इस कार्य को करने के लिये अपनी इच्छा प्रकट की।

[८]

दिलतान्ती उस दिन टेसा की माँ को मृत्यु-शय्या पर छोड़ कर आया था। बीच में खबरें तो किसी तरह मँगा ही लेता था परन्तु एक तार पाकर घबड़ा उठा। ग्रैन्डी को तुरंत बुलाया और अपने अफ़सर से कुछ देर की छुट्टी माँग कर अपने मित्र के साथ टेसा के यहाँ गया।

टेसा दिलतान्ती के लिये घबड़ाई हुई थी। उस परिस्थिति में टेसा के लिये दिलतान्ती को छोड़ कर कोई दूसरा सहारा नहीं था। उसने अपनी माँ की सेवा ख़ूब की थीं। परन्तु मृत्यु सेवा और अनसेवा, सुखी और दुखी, धनी और ग़रीब, समय और असमय नहीं जानती। दोपहर के बाद से उसकी अवस्था ख़राब होती जा रही थी। उर्द्ध-स्वांस चलने लगी थी। बोली बिल्कुल बन्द हो गई थी।

दिलतान्ती के घर में प्रवेश करते ही टेसा की माँ को बड़े ज़ोर से हिचकी आई। यही अन्तिम हिचकी थी। उसकी आँखें सदा के लिये बन्द हो गईं। टेसा विक्षुब्ध होकर अपने

पति के शरीर से चिपट कर रोने लगी। रोने की आवाज़ से दो तीन आदमी और आ गये। रेवरेन्ड पुलोडिनी भी आ पहुँचे। लाश रखने वाली स्टील-सन्दूक में शव रखा गया। पास ही के चर्च सीमेट्री में लाश का दफ़न हुआ। पुलोडीनी ने अन्तिम संस्कार कराये। सभी लोग काले वस्त्रों में खड़े थे। जब prayer हो चुका तब सब लोग घर लौटे।

अब तक टेसा अपनी माँ को संरक्षता में रही थी। बीमार होने पर टेसा ने तन-मन से सेवा की। उसी में दिन रात भूली रहती थी। वह सेवा भी समाप्त हो गई। अब उसे घर में अकेला रहना पड़ा। उसको अपने पति की अनुपस्थिति खलने लगी। शून्य रात्रि में उसे शंका होती। अर्द्ध रात्रि में जब उसकी नींद खुल जाती तब मारे भय के नींद न आती। उन दिन दिलतान्ती को भी कुछ कहने का मौक़ा नहीं मिला था।

दूसरे दिन दिलतान्ती ने फैसिस्ट सरकार के अफ्रीका में सेना भेजने की आज्ञा को कह सुनाया। टेसा अभी तक यों ही दुखित थी, इस समाचार को सुन कर विस्मित हो गई और पूछा—'क्या तुम्हें भी जाने के लिये हुक्म हो गया?'

'अभी किसी को हुक्म नहीं मिला है। केवल यह सुनाया गया है कि टीउरीन को बटालियन भी भेजी जायेगी।

'क्या इस जगह को सभी बटालियन चली जायेगी?'

'नहीं, सभी नहीं जायेगी।'

'तो कब सुनाया जायगा कि अमुक प्लैटुन यहाँ रहेगा। और अमुक प्लैटुन अफ़्रीका जायेगा।'

'यह नहीं मालूम, परन्तु जल्दी ही सुनाया जायगा।'

'अगर तुम्हें भी जाना पड़े तो क्या होगा?'

'क्या होगा? जाना पड़ेगा।'

'नहीं, नहीं, मैं न जाने दूँगी।

'प्यारी टेसा, इस तरह क्यों कातर हो रही है? क्या मेरा जाना या न जाना तुम्हारे हाथों में है? यदि नौकरी करनी है तो अवश्य ही हुक्म मानना पड़ेगा।'

'तो ऐसी नौकरी छोड़ दो।'

'क्या ऐसे समय में नौकरी का इस्तीफा मंजूर होगा? इस समय का इस्तीफा राजद्रोह समझा जायगा।'

'तुम्हारे चले जाने पर मैं कैसे रहूँगी?'

'प्यारी, क्या बतलाऊँ? कोई उपाय नहीं दिखाई देता। मुझे भी बड़ा दुख है कि तुम्हें जब मेरी मौजूदगी की सबसे बड़ी आवश्यकता हुई तभी यहाँ से जाना होगा।

'नहीं, नहीं, मैं यहाँ न रहूँगी। मैं भी तुम्हारे साथ चल कर घायल सिपाहियों की सेवा करूँगी।'

'प्यारी, तू जैसा चाहे वैसा करो। साम्यवादी दल ने भी विद्रोह फैलाने का प्रस्ताव पास किया है। देखो, इसमें कहाँ तक सफलता मिलती है। यदि पकड़े गये तो सभी लोगों को फाँसी पर चढ़ना होगा। बड़े खतरे का समय आ गया है।'

'प्यारे, तुम लोगों ने बड़ा खतरा अपने ऊपर ले लिया। मैं तो कहूँगी कि इस समय थोड़े दिनों के लिये छुट्टी ले लो। घर का सब काम ठीक करके तब कुछ करना। शादी के बाद माँ मर गईं। हम लोग को एक दिन भी चैन से न मिल सके।'

'यदि तुम्हारी यही राय है कि मैं छुट्टी लूँ तो पहले अपने दोस्तों से पूछ लेना होगा। बिना उन लोगों की राय के मैं छुट्टी की दरख्वास्त नहीं भेज सकता। इस समय छुट्टी लेना अपने मित्रों के प्रति विश्वासघात करना है।'

'तो अपने मित्रों से इसके विषय में पूछताछ कर लो।'

'जरूर ही मैं पूछ लूँगा।'

× × ×

टेसा की माँ जब मरी थी उस दिन ग्रैन्डी भी आया था। उस दिन सभी लोग शोकग्रस्त हो गये थे। टेसा की अवस्था देख कर सभी मानव हृदय दयार्द्र हो जाता था। परन्तु ग्रैन्डी ? वह कुछ दूसरा ही दिल में सोंच रहा था। जब टेसा दिलतान्ती के बदन से लिपट कर रोने लगी उस समय ग्रैन्डी के हृदय में टीस हो रही थी। मन ही मन मसोस रहा था। जब रेवरेन्ड पुलोडिनी कब्र के सामने prayer कह रहे थे तब ग्रैन्डी काले वस्त्रों से भूषित टेसा की सौम्य और शोकाकुल मूर्त्ति की तरफ एकटक देख रहा था। उसके हृदय में टेसा की मूर्ति का धीरे धीरे चित्र अंकित हो रहा था।

एक दिन मौका पाकर वैरक से ग्रैन्डी निकला और शहर घूमता हुआ उसी रास्ते से होकर आने लगा जिघर टेसा का छोटा सा बंगला पड़ता था। टेसा के बंगले के निकट आने पर वह धीरे से बाइक से उतरा और अहाते के अन्दर घुस गया।

टेसा एक अनजान आदमी को भीतर घुसते हुए देख कर बंगले से बाहर निकल आई परन्तु ग्रैन्डी को देख कर आगे बढ़ कर हाथ मिलाते हुए अन्दर ले गई।

ग्रैन्डी ने तुरंत पूछा—'क्या दिलतान्ती नहीं आया है?'

'नहीं, नहीं, वह तो नहीं आये हैं।'

'मैंने उनसे यहीं पर मिलने के लिये कहा था। मैं दूसरी जगह एक काम से गया था।'

'तो शायद आते हों।'

'जी हाँ, आते होंगे तो मैं कब तक बैठूँ। मैं जाता हूँ।'

'नहीं, नहीं, यह कैसे हो सकता है। आप मेरे यहाँ आये और बिना कुछ कहे सुने किस तरह जा सकते हैं। ज़रा जलपान वगैरह। कर लीजिये।'

'नहीं आपकी मेहरबानी है। मैं जलान नहीं करूँगा। कुछ ज़रूरी काम है इसलिये जल्दी जाना चाहता हूँ।'

'हाँ' हाँ, ऐसी कौन सी जरूरत है कि चन्द मिनटों तक आप नहीं ठहर सकते।'

'हम लोगों को छुट्टी नहीं मिलती। ज्यादे से ज्यादा दो घंटे

बाहर रह सकते हैं। मुझे निकले हुए डेढ़ घंटे से ज्यादा हो गया। मेरा ठीक समय पर लौटना ही निहायत ज़रूरी है।'

'हाँ, आपके दोस्त भी जब कभी आते हैं तो जल्दी ही लगी रहती है। कभी चैन से दो घंटे नहीं ठहरते। ऐसी नौकरी से क्या लाभ है? आप लोगों की दिन रात वहाँ कैसे तबीयत बहलती होगी?'

'जी हाँ, यह नौकरी बड़ी खराब है पर अब तो इसमें फँस गये हैं। इससे चंगुल छुड़ाना सहल नहीं है। फिर दूसरी नौकरी ही क्या रह गई है? हज़ारों नवयुवक मारे मारे फिरते हैं।'

'तो यही नौकरी है। आज नौकर हुए कल लड़ाई में गये। मारे गये। काम तमाम हो गया। यदि इसी तरह बेमौत मरना है तब तो मर ही रहे थे।'

'लेकिन रणक्षेत्र में मरना गौरवास्पद है।'

'परन्तु कैसे रणक्षेत्र में? क्या सचमुच आपलोग देश को विपत्ति से छुड़ा रहे हैं। क्या अचानक कोई शत्रु देश पर आधिपत्य करने के लिये, आरहा है जिसे आप लोग अपने प्राणों की बाज़ी लगाने जा रहे हैं? यह तो स्वयं ही रचित रणक्षेत्र है। यह रणक्षेत्र इटली के सुन्दर सुन्दर नवनिहालों के लिये क़ब्र खोदा गया है जिसमें जीते जो सदा के लिये धराशायी किये जायेंगे। आप जानते है कि आप लोग

एक निःसहाय, ग़रीब परन्तु स्वतंत्र और वीर जाति को बिना गुनाह लड़ने के लिये मैदान में आवाहन कर रहे हैं। आपकी सरकार अपनी सभ्यताप्रसारिणी धारा प्रवाह को किस तरफ ले जा रही है? सभ्यता फैलाने की असत्य घोषणा के द्वारा एक निरपराध और सीधी जाति को जो अपनी सीमा के भीतर स्वच्छन्द रूप से जीवन व्यतीत कर रही है उसे दासता की बेड़ी पहनाना चाहती है।'

'हाँ, हाँ, आपने ठीक कहा। साम्यवादी दल इस संग्राम के विरुद्ध में षड्यंत्र करेगा। फिर भविष्य जाने क्या होगा? आपके विचार से मैं अक्षरशः सहमत हूँ और आपके कहे गये शब्द मुझे इतने प्रिय मालूम हुए हैं कि मैं उसे भूल नहीं सकता और यथावत वर्तने की चेष्टा करूँगा।'

[९]

भोर हो गया था। लोग अपने नित्य-क्रिया के निपट रहे थे। परन्तु लोगा की नज़रें बैरकों की दीवारों पर थीं। जहाँ तहाँ बड़े बड़े पोस्टर से चिपकाये हुए थे। कहीं कहीं सोने वाले कमरों के अन्दर पर्चे फेंके हुए मिले। पानी कल पर, फाटक पर, पैखाने में, स्नानागार में, चाहे जिधर नज़र दौड़ाइये— सभी जगह पर्चे चिपकाये हुए थे।

उन पर्चों में फैसिस्ट सरकार की बड़ी कड़ी आलोचना थी। विशेषतः नवयुवकों को मुसोलिनी के नरसंहार कार्यक्रम

की चेतावनी की गई थी। यह बतलाया गया था कि अफ्रीका की लड़ाई से इटली को कोई लाभ नहीं। हाँ, एक लाभ अप्रत्यक्ष रूप में अवश्य होगा कि इस लड़ाई में जिन बेकार लोगों से क्रान्ति का भय होता वे सुदूर स्थित अफ्रीका की मरुभूमि में गाड़ दिये जायेंगे। अतः फैसिस्ट सरकारने भी बेकारः लोगों की रोटी का प्रश्न सुलझाने का बहुत अच्छा तरीका निकाला है।

लोग बड़े चाव से पढ़ते। आपस में बातें करते। किसने यह काम किया? क्यों लिखा गया? लोगों मे टीका-टिप्पणी भी होने लगी। हाँ, बातें तो अवश्य ही मार्के की लिखी हुई थीं। आँखें फाड़ कर, ज़रा दूर की बातें सोचने पर भी पता लग जाता था कि वास्तव में उन पर्चों पर दी गई बातें सत्य लिखी गई थीं। लोग सोचने लगे कि यह देश के लिये धर्म की लड़ाई नहीं है वरन् फैसिस्ट सरकार का यह षड्यंत्र ग़रीबों को मारने के लिये किया गया है। यह साफ षड्यंत्र है।

ये खबरें अफसरों के यहाँ पहुँची। तुरंत पोस्टर्स उतरवा लिये गये।

नोटिसें निकलीं कि जितने पर्चे लोगों के पास हों वे सभी आफिस में जमा कर दिये जायँ। कितने लोगों ने जमा किया, कुछ लोगों ने फाड़ कर फेंक दिया। बिल्कुल आतंक छा गया था। लोग सचमुच डरने लगे कि वे मृत्यु के मुँह मे जबरदस्ती ठूँसे जा रहे हैं। लोग आपस में ज्यादातर कानाफूसी ही करते।

प्रकट रूप से पर्चों के पक्ष मे बातें करना राज्यद्रोह समझा जाता।

संध्या समय साम्यवादियों की बैठक होने लगी। सभी लोग अपने अपने फैक्टुनों या बैरकों की हालतें बयान कर रहे थे। किसके यहाँ क्या प्रभाव पड़ा। सभी लोगों ने कहा कि पर्चों का बड़ा अच्छा असर रहा। आगे के कार्यक्रम को बढ़ाने के लिये निश्चय हुआ। कुछ दिनों तक पर्चे बाँटने का ही सिलसिला जारी रखना उपयुक्त माना गया।

ग्रैन्डी ने एक प्रस्ताव उपस्थित किया कि इस समय कोई सदस्य छुट्टी नहीं ले सकता।

ग्रैन्डी के इस प्रस्ताव पर दिलतान्ती एकाएक घबड़ा गया। वह सोचने लगा कि इसे किस तरह मालूम हुआ कि उसे छुट्टी की आवश्यकता है। अभी ऐसा समय नहीं आया था जब दिलतान्ती को ग्रैन्डी के प्रस्ताव का विरोध करना पड़ा हो।

दिलतान्ती ने कहा—'मित्रो, यह प्रस्ताव ऐसा है कि लोगों को बहुत कड़े अनुशासन में रखना चाहता है। यदि किसी व्यक्ति को कोई विशेष कार्य पड़ जाय जो कुछ दिनों की छुट्टी चाहे तो उसे न देना एक प्रकार की कर्त्तव्यहीनता है। जिस कार्य को प्ररम्भ किया गया है वह ऐसा नही कि दो चार महीनों में ही समाप्त हो जाय। अतः थोड़े दिनों की छुट्टी का प्रतिबन्ध लगाना कठिनता का व्यवहार या यों कहिये कि क्रूरता है। सिपाहीयाने कामों से छुट्टी लेकर भी आदमी अपने दल का कार्य कर सकता है। बल्कि वह तो और भी स्वतंत्रता से काम कर

सकता है। दिलतान्ती ने और भी कहा कि मुझे कुछ विशेष कार्यों से दो महीने की छुट्टी की आवश्यकता है, परन्तु मैं यह वादा करता हूँ कि छुट्टी लेने पर भी मैं इस कार्य को अधिक उत्साह के साथ करूँगा।

सभापति ने विरोध देखते हुए कहा कि इस प्रस्ताव पर लोगो को लड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं भी दिलतान्ती की बातों का समर्थन करता हूँ। हम लोगों को अपने कार्यक्रम की चिन्ता है। यदि इसमें छुट्टी लेने से कोई अधिक सहयोग दे तो कोई हर्ज नहीं हो सकता। असूमन् बात तो यह है कि सैनिक विभाग वाले इस समय किसी को छुट्टी न देंगे। छुट्टी देने से उनके कार्य में बाधा पड़ेगी।

इधर साम्यवादी नवयुवक तरह तरह के पर्चे निकालते। फासिस्ट सरकार के हर एक काम की नुकताचीनी करते। इससे सैनिक अनुशासन में गड़बड़ी होने लगी। सरकार की तरफ से भी पर्चे निकलने लगे। सरकारी पर्चे में फासिस्ट सरकार की निन्दा करने वालों को पकड़ावने में सहायता देने अथवा पकड़ने के लिये इनाम रखा गया था। जिन बातों की आलोचना निकली थी उनका यथाशक्य उत्तर देने की चेष्टा भी की गई थी। फासिस्ट सरकार के अन्दर इटली की कितनी प्रतिष्ठा बढ़ गई थी इसका उल्लेख किया गया था। गरीबों की दरिद्रता और बेकारी को हटाने की जितनी चेष्टा की गई थी उसका विशद वर्णन हुआ था।

उधर खुफ़िया विभाग वाले भी अपना कार्य ज़ोर से करने लगे।

शहर के नक्के नक्के पर, थियेटर में, नाचघर में, स्टेशन पर, गाड़ी में, बसों मे, बैरकों मे भी जहाँ देखिये, वहाँ ये ही नज़र आते थे। जहाँ भी दो चार आदमी इकट्ठा हो जायँ वहाँ ये भी किसी न किसी प्रकार कुछ सुनने के लिये आ ही जाया करते थे।

साम्यवादी इससे बिल्कुल सावधान रहते थे। अब ये घूमने के बहाने भी चार दस की टोली में नहीं निकलते। जो कुछ कहना या सुनना होता उसे आपस में एक दूसरे के यहाँ कहलवा भेजते। कहने वाला स्वयं सभापति या मंत्री ही रहता था। उसी के कार्य में कौशल था। जितना अच्छा संगठन इनका यहाँ था उतना और जगहों में नहीं था। इनके कार्यकर्त्ता दूसरे दूसरे शहरों या सैनिक स्टेशनों पर रहते थे। उनके पास बराबर खबरें अथवा पर्चे इत्यादि जाते थे। इनके प्रमुख कार्यकर्त्ता यहीं थे। सबसे विलक्षण बात यह थी कि ये कभी कागज पर कुछ लिखते नहीं थे। इनका सारा कार्य मौखिक ही होता था। कार्यक्रम बड़ा सहल था। कोई अधिक बहस मुबाहसे की आवश्यकता नहीं थी। स्वयं ही कार्य करना था।

ग्रैन्डी के प्रस्ताव के बाद से दिलतान्ती ने सावधानी और दिलचस्पी से काम करना शुरू किया। वह अथक था। सभी लोगों से मिलता जुलता। लोगों की बातें सुनता परन्तु अपना विचार प्रकट नहीं करता था। रात को जब सब कोई सो जाते

तो धीरे से उठ कर कुछ पर्चे चिपका आता। कुछ वैरकों में फेंक आता। अपनी प्रेयसी के आदेशानुसार उसने अपने दो महीने की छुट्टी के लिये दख्वास्त भेजी। दो चार और लोगों को भी छुट्टी के लिये दख्वास्त दी थी। जिनको रोग हो गया था उन पर डाक्टरों की सिफारिश भी थी। दो चार दिनों के बाद दख्वास्त नामंजूर होने की खबर मिली। एक नवयुवक काफी दिनों से रोगग्रस्त हो गया था। वह कुछ दिनों के लिये घर जाना चाहता था; परन्तु उस से भी छुट्टी नहीं मिली कि एक को मेडिकल ग्राउन्ड पर छुट्टी देने से बहुत लोगों को छुट्टी देनी पड़ेगी। ऐसे समय में सैनिक सिपाहियों को छुट्टी न देने का सिद्धान्त हर एक देश में पालन किया जाता है। तो इटली में फासिस्ट सरकार किस तरह उदार हो सकती है। उसके सैनिकों से विद्रोह कराने का यत्न किया जा रहा है। सरकार समझती थी कि लोग डर के मारे छुट्टी लेकर भागना चाहते हैं। स्थिति बड़ी भयानक हो गई थी। सरकार ने सोचा कि यदि अबीसीनिया के विरुद्ध लड़ाई करने में देरी होगी तो स्थिति संभल नहीं सकेगी। इसलिये जितनी ही जल्दी लड़ाई प्रारम्भ हो उतना ही अच्छा है।

लोगों की दख्वास्त नामंजूर होने पर एक नोटिस निकली कि जब इटली की सरकार अपनी मर्य्यादा की रक्षा तथा अपनी प्रजा के सुख के लिये असभ्य और जंगली अबीसीनियनों से युद्ध छेड़ने जा रही है तब वह अपने वीर सिपाहियों को घर जाने

के लिये किस तरह छुट्टी दे सकती है। युद्ध के समय छुट्टी नहीं मिल सकती। कितने लोगों ने इस्तीफे की दरख्वास्त दे देने का साहस किया है। सरकार इस मनोवृत्ति का प्रोत्साहन नहीं कर सकती। ऐसे समय में विशेषकर सैनिक विभाग में इस्तीफा भी मंजूर नहीं हो सकता। जो लोग इसके विरुद्ध कार्रवाइयाँ करें उन्हें राजद्रोह के जुर्म में दण्ड मिलेगा।

[१०]

खुफिया विभाग की हजार कोशिशें, नाना प्रकार के घोषित पुरस्कारों के रहने पर भी पर्चेवालों का पता नहीं लगा। इनका काम दिनोदिन बढ़ने लगा। जितना ही इस कार्य में वृद्धि होती उतनी ही सरकार परेशान सी मालूम पड़ती। केन्द्रीय सरकार के यहाँ से बराबर हिदायतें आती, अफसरों के आने की भरमार हो जाती, अनुशासन दिन पर दिन कड़ा होता गया परन्तु कुछ खबर न मिली।

कोई बड़ा कमान्डर आया हुआ था। दूसरे दिन ग्रैन्ड परेड होगा। उसकी आगवानी में बड़ी तैयारी हुई थी। बैरकों की बड़ी सफाई और सजावट हुई थी। फूल और पत्तियों से परेड मैदान सज दिया गया था। दूसरे दिन प्रातःकाल ही सभी लोग परेड मैदान में जा पहुँचे।

कमान्डर भी ठीक समय पर पहुँच गया। फैसिरटी सलामी देने के बाद सभी लोग वृत्ताकार व्यूह में खड़े कराये गये। बीच

में ऊँचे उठे हुए चौतरे पर झण्डे की नीचे कमान्डर और अफसरों के साथ खड़ा हुआ और सिपाहियों को केन्द्रीय सरकार का सन्देश सुनाने लगा—'वीर सिपाहियो ? तुम्हारी परीक्षा का समय आ गया। तुममें उन रोमन लोगों के खून वर्त्तमान हैं जिन लोगों ने एक समय सारे भूमण्डल पर अपनी विजय पताका फहराई थी। रोमन सभ्यता ने प्रकाश से सारे संसार को उदोयमान किया था। आज की वर्तमान सभ्यता भी रोमन सभ्यता की नींव पर खड़ी है। जिस रोमन सभ्यता की अमृत-वटी को पीकर और राष्ट्रों ने अपनी उन्नति की, सारे विश्व पर जहाँ देखिये वहाँ उनकी पताका फहरा रही है, वही रोमन सन्तान आज पिछड़ी हुई है।

फासिस्ट सरकार ने अपनी प्रजा के अन्दर रोमन भाव को जगाया है। रोमन भाव के जाग्रत होने पर उसे कोई रोक नहीं सकता। जब तक हमलोग सुपुप्ति अवस्था में थे तब तक लोग बढ़ते गये और इटली पीछे पड़ता गया। आज इटली अपनी शक्ति पहचानता है। उसे अपने बल पर विश्वास है। इससे कोई रोक नहीं सकता। इटली की बढ़ती हुई जनसंख्या के लिये रोम के पुराने साम्राज्य की आवश्यकता है। क्या ऐसे समय में हमारे वीर नवयुवक सिपाही अपने देश की भावी उन्नति में साथ न देंगे ? थोड़े दिनों से जो विरोधी पर्चे देश में बँट रहे हैं, उससे सरकार कभी विचलित नहीं हो सकती। विरोधी दल कोई भी क्यों न हो, देश का हितैषी नहीं वरन्

अपने को शत्रु सिद्ध कर रहा है। षडयंत्र के पता लगने पर उन्हें उचित राजदण्ड मिलेगा। सरकार ने अफ्रीका में सेना भेजने का निश्चय कर लिया है। यहीं से प्रारम्भ भी किया जायगा। इसलिये यहाँ के लोग अफ्रीका जाने के लिये तैयार हो जायें। सरकार एक नोटिस देकर ही सब को भेज सकती थी परन्तु घोषणा के द्वारा यह बतला दिया जाता है कि इटली की सरकार एक बहुत बड़े कार्य्य में संलग्न हो रही है और जनता का हार्दिक समर्थन चाहती है। यहाँ केवल चार प्लैटून रहेंगे। बाकी सभी लोग इस महीने के समाप्त होते होते यहाँ से भेज दिये जायेंगे।'

घोषणा सुनाकर कमान्डर परेड के मैदान से चला गया। नित्यप्रति की नाईं उसके बाद कवायद हुई। लोग अपने अपने बैरक में गये। लोगों के मन में उत्साह तो नहीं था बल्कि एक प्रकार की उदासीनता या भयातुर चेहरा सब का हो गया था। लोगों ने अपने अपने घर वालों के यहाँ भी नहीं लिखा था। साम्यवादियों के पर्चे से लोगों का उत्साह टूट गया था। इस घोषणा से लोगों में हर्ष के बदले विषाद के चिन्ह दिखलाई देने लगे।

× × ×

घोषणा होने के थोड़ी देर बाद ही शहर में खबर फैल गई। टेसा को भी पत्रों के द्वारा मालूम हो गया। वह बड़ी घबड़ाई। क्षण क्षण अपने पति का इन्तजार करने लगी। सोचती कि

आज अवश्य आयेंगे। संध्या बीत गई। दिलतान्ती नहीं आया—रात को भोजन अच्छा नहीं लगा। नींद भी नहीं आई। केवल यही सोचती कि पति चले जायेंगे। वह न जा सकेगी। घर का प्रबन्ध नहीं हुआ। उसको जाने की आज्ञा मिलेगी कि नहीं। फिर भी कौन जानता है कि उन्हीं के प्लैटुन के साथ रहने को मौका मिले। नर्सों और लेडी डाक्टरों को तो किसी प्लैटुन के साथ कर दिया जा सकता है। या किसी के साथ न किया जाय। घायलों के कैम्प जहाँ जहाँ रहेंगे वहाँ वहाँ रहना पड़ेगा। मार्ग की कठिनाइयों का ध्यान आया। अफ़्रीका की दहकती हुई लू को सोचने लगी। जंगल, पहाड़ों तथा भयानक जानवरों से भरे हुए देश का ख्याल करके वह रोमांचित हो उठी।

दूसरे दिन भी ऐसा इन्तज़ार कर रही थी। कभी बाहर आती, कभी भीतर जाती। जब जी न लगता तो कुछ पढ़ने लगती। फिर उसे तुरत छोड़ कर बिस्तरे पर लोट पोट करने लगती। इतने में दिलतान्ती फाटक पर आ पहुँचा। उसको आते हुए देखकर वह दौड़ कर लिपट गई। कहने लगी—'प्यारे, मैं तुम्हें कल ही इन्तज़ार करती थी। जब तुम नहीं आये तब सोच सकते हो कि मैं कितनी दुख में रही होऊँगी।'

'हो, प्रेयसी, कल नहीं आ सका। इसके लिये माफ करो। सचमुच तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ है। ऐसी हालत क्यों है?'

'जब से मैंने घोषणा की खबर सुनी तब से मेरा मन उद्वेलित हो रहा है। न जाने क्या क्या मैं सोच रही थी? कभी अपने अकेलेपन को सोचती। कभी तुम लोगों के साथ जाने को सोचती। फिर यात्रा के कष्ट का ध्यान आता। अबी-सीनिया की गर्मी, और खतरे का ख्याल आता। इसी में बिल्कुल डूबी हुई सी हो गई थी। मेरी हालत पागलों की तरह हो गई थी।'

'नहीं, नहीं प्रिये। देखो, यह समय बिल्कुल विलक्षण है। कोई भी क्यों न हो चैन से न रहने पायेगा। इस्तीफा देने वालों के लिये भी दण्ड की घोषणा हुई है। कहो क्या करूँ? किसी तरह गुजारा नहीं है।'

'मैं तुम्हारे बिना अकेले किस तरह रहूँगी। जब से मेरा और तुम्हारा परिचय हुआ, अर्थात् बालपने से ही हम लोग साथ रहे परन्तु जब मौका सुख के दिन बिताने का हुआ तभी जुदाई हो रही है। किस तरह यह वियोग सहा जा सकता है। माता के मर जाने से मैं अनाथ ही हो गई थी परन्तु तुम्हें पाकर मैं सनाथ हो गई। फिर भी भगवान को मंजूर नहीं था कि ये युगल जोड़ी साथ रह सकें। एक भी सुख की रात तुम्हारी और मेरी नहीं कटी।'

'प्यारी, पिता ने ही मुझे नौकरी के लिये लिखा था। यदि मैं पिता की आज्ञा न मानता तो भी दोषी होता। फौज में भर्ती होने पर यह खतरा अपने ऊपर लेना ही पड़ेगा। मेरे

नहीं रहने पर तुम पिता जी के वहाँ चली जावो। मैंने पिता को एक पत्र लिखा है जिसका उत्तर वहुत जल्द आयेगा। या स्वंय ही माता के साथ वे मिलने आयेंगे। उन लोगों को मालूम हो गया है कि तुमसे मेरी शादी हो गई है। इसलिये तुमको बधाई देने के लिये वे अवश्य ही आयेंगे। वे लोग बड़े सादे और खुशमिज़ाज आदमी हैं। उनके साथ रहने पर तुम्हारा जी अवश्य ही वहलता रहेगा।'

'तुम्हारे लौटने की भी कोई अवधि नहीं है। कब तक कोई धैर्य रख सकता है। एक अवधि पड़ जाने से दुख कट जाता है और फिर देखते देखते वह दिन आ जाता है।'

'प्यारी, प्राण बच जायँ तो यही भाग्य समझो। कैसी अवधि ? वहाँ से लौटने का कोई ठिकाना नहीं है।'

इतना कह कर दिलतान्तो रोने लगा और टेला से चिपक गया। दोनों एक दूसरे के चिपक कर खूब रोये, जी भर रोये। रोना, रोना ही रह गया था। यही थी फैसिस्ट सरकार की नववर वधू की भेंट। सोहागरात के बदले जीवन की सन्ध्या के आँसू बहा रहे थे। यही था भाग्य, यही थी सभ्यता की अनुपम वटी, और यही था आशा का फूल।

[११]

सेना भेजने की घोषणा करके फासिस्ट सरकार ने साम्य-वादियों पर बाज़ी मार ली। आज फिर इस समस्या पर विचार

करने के लिये साम्यवाद दल थी वैठक थी। संध्या समय जंगल की झाड़ियों के अन्दर, खतरे से भरे हुए स्थान मे पन्द्रह वीस आदमियों की एक टोली वैठी हुई थी। कामरेड नम्वर ५ ने सभापति का स्थान ग्रहण किया था। सभापति ने घोषणा के ऊपर विवेचन करते हुए अपने दल की विवशता को प्रकट किया।

नं० ५—घोषणा के विरोध में एक दिवस नियुक्त करना अत्यावश्यक है। उस दिन परेड पर जाने से लोगों को रोकना चाहिये। लोग मिल कर एक जगह एकत्रित हों और यह एलान करें कि युद्ध करना असभ्यता और बर्बरता है।

सभी ने एक स्वर से इसका समर्थन किया।

इसके बाद फिर कामरेड नं० ५ ने यह इच्छा प्रकट की कि विरोधी दिवस की सभा में वह स्वयं ही नेतृत्व ग्रहण करेंगे। लोग चुप रहे। कामरेड ७ और ८ ने अपने को अर्पण किया। परन्तु कामरेड ५ ने उन्हे धन्यवाद देते हुए कहा कि उनके बाद अभी बहुत लोगों की जरूरत पड़ेगी। सभी लोग एक ही बार अपने को समर्पण न करें। यदि कोई कामरेड किसी तरह पकड़ा जाय तो उसे अपने दल की कोई बात प्रकट न करनी चाहिये। मेरे बाद दल का प्रधान ग्रैन्डी होगा।

सभा समाप्त हुई। साम्यवादी दल को एक सुसंगठित सरकार के विरुद्ध आन्दोलन करना था। पग पग पर बाधायें थीं। तनिक भी पता लग जाने का फल शूली पर चढ़ना था।

इसी से लोग फूँक फूँक कर चलते थे। जो कुछ हो, अब तक फैसिस्ट सरकार की पूर्ण विज्ञ खुफिया ने षडयंत्र का पता नहीं लगाया।

दूसरे दिन के पर्चों पर नवयुवकों तथा देश के सभी लोगों को आदेश किया गया था कि देश भर मे उक्त तिथि को युद्ध विरोधी दिवस मनाया जाय। केवल दो दिन रह गये थे। यह पर्चा बड़े मार्के का निकला था। इसमें फासिस्ट सरकार की वैदेशिक नीति की कटु आलोचना थी। जब से फासिस्ट सरकार ने अपनी विदेशी नीति को साम्राज्य विस्तार के रूप में वर्तने की चेष्टा की तब से देश की हालत और खराब हो गई थी।

उस दिन सवेरे ही एक छोटा सा लड़का जिसकी उम्र पांच वर्ष से अधिक नहीं रही होगी, कुछ रात रहते ही चारों तरफ बैरकों के अन्दर पर्चे फेंकते हुए देखा गया। वह जल्दी जल्दी पर्चे फेंकता हुआ चला जा रहा था। किसी ने उस समय पकड़ा नहीं, शायद कहीं वह छिप गया था या कहीं पर्चे ही बाँटता रहा होगा। जब सैनिक सिपाही बिगुल सुन कर पैरेड की तरफ जा रहे थे तब वही बालक न जाने कहाँ से फिर निकल आया और पर्चे बाँटने लगा। एक अफसर ने झट दूसरे हाथ से पर्चे छीन लिया और उसे पकड़ कर अफसर-इन-चार्ज के पास भेज दिया। उस बालक से अफसर ने उसका नाम और ठिकाना पूछा परन्तु कोई जवाब न मिला। लड़का

तब अफसर ने उस लड़के को जेल भेज
केवल चुप ही रहा।
कर दी।
दिया और सिविल अफसर को रिपोर्ट
उत्तेजना फैल गई। किसी
लड़के के पकड़ जाने से बड़ी
ने यह भी हल्ला उड़ा दिया कि अफसर ने उसे बहुत पीटा है।
इस कारण से लोगों की सहानुभूति उसको तरफ स्वभावतः
हो गई। प्रातःकाल तो एक दूसरे को जाते देखकर
सभी पैरेड के मैदान में गये और प्रति दिन की भाँति
ही कवायद हुई। संध्या समय कुछ नवयुवक लाल झण्डा
लेकर एक तरफ से आते दीख पड़े। ये लोग मैदान में सभा
करने की गरज से निकले। इनके निकलते ही बहुत लोग इसमें
सम्मिलित हो गये। ज्यों ज्यो आगे बढ़े नम्बर बढ़ता ही
गया। युद्ध के विरोध में इनके पोस्टर्स थे। ये लोग मैदान की
तरफ जाना चाहते थे कि सभी क़ैद कर लिये गये। कितनों
पर बेटनस् की मार पड़ी। करीब पन्द्रह आदमी पकड़े गये
थे। सभी बेड़ी मे जकड़ दिये गये। तथा शीघ्र जेल की चहर-
दिवारी मे भेजकर जनता की आँखों से ओझल कर दिये गये।
परन्तु साम्यवादी दल के कुछ सदस्य पुनः मैदान मे जाकर
सभा करने की चेष्टा करने लगे। वे एक शब्द भी नहीं बोल
पाये थे कि कैद कर लिये गये। दूसरी जगहों से भी विरोध
प्रदर्शन की खबरें आईं। कितनी जगहों में अग्रणी लोग काफी
मार खाये। प्रायः सभी स्थानों में साम्यवाद से सहानुभूति रखने
वाले नवयुवक पकड़े गये।

विरोध प्रदर्शन हुआ परन्तु विद्रोह सफल नहीं हुआ। लोगों की सहानुभूति थी। हृदय में इसी की हूक थी परन्तु दण्ड का भय था। फासिस्ट सरकार के फौलादी पंजों का डर लोगों को सदा डराया करता। अतः सैनिक सिपाही विद्रोहियों का साथ नहीं दे सके। इसमें सन्देह नहीं कि अधिकांश नवयुवकों की मनोवृत्ति फैसिस्ट हो गई थी। अभी मनोवृत्तियों के परिवर्तन में कुछ दिन लगते। शीघ्रता करने से भी राजनीति में सफलता नहीं मिलती। परख की ही सब से बड़ी आवश्यकता है।

फैसिस्ट सरकार ने उन्हें दण्ड देने में देर नहीं लगाई। उन पर राज्यद्रोह का अभियोग था। सैनिक न्यायालय में उनका मुकदमा चला। न्याय क्या था, एक नाटक का खेल था।

सैनिक न्यायालय ने मुकदमे का फैसला किया। जहाँ जहाँ विरोधी लोग कैद हुए थे सभी जगह एक ही समय में मुकदमें की कार्रवाई शुरू हुई। करीब आधा घंटा में तमाशा समाप्त हो गया। केवल रिपोर्टिंग अफसर के कागज को देखना था। उसके बयानात को पढ़ कर मुकदमे का फैसला हो गया। जिन लोगों ने नेतृत्व गृहण किया था उन्हें तो फाँसी की सजा मिली और बाकी लोगों को दश दश बारह बारह वर्ष की सजा हो गई।

अखबार वाले इन मुकदमों के फैसले पर टीका टिप्पणी कर नहीं सकते थे। इन कैदियों के माता पिता, स्त्री और बन्धु, सगे सम्बन्धी तथा मित्रों को भी मिलने को इजाजत नहीं मिलती। यही फैसिस्ट सरकार की स्वतंत्रता है। इसी फैसिस्ट दल का

साम्राज्य सारे संसार में स्थापित करने की चेष्टा हो रही है। जहाँ बच्चे और स्त्रियों को भी अति क्रूर दण्ड देने में हिचकिचाहट नहीं होती।

[१२]

विद्रोह दबा दिया गया। अपराधियों को दण्ड भी दिया जा चुका। टीउरीन के बटालियनों के जाने की तैयारी हो रही है। दूसरे दिन सवेरे ही वे स्पेशल ट्रेन से वेनिस पहुँचाये जायेंगे। वहाँ से उनका जहाज़ अफ्रीका के लिये रवाना होगा।

मोनसियो बुकोवीसी भी अपने पुत्र से मिलने के लिये अपनी स्त्री और बाल बच्चों के सहित आ गये थे। वे टेसा के यहाँ ठहरे थे। टेसा को अपनी पुत्र-वधू देख कर बड़े प्रसन्न हुए। माता ने भी टेसा को खूब धन्यवाद दिया।

संध्या समय और दिनों की तरह दिलतान्ती आ पहुँचा। यही अन्तिम मिलन था।

दिलतान्ती अपनी माता को अभिवादन करते हुए कहा—'मुझे कल प्रातःकाल ही यहाँ से जाना पड़ेगा।'

माँ—'क्या कल सबेरे ही चले जाओगे ?'

'जी हाँ, कल सवेरे ही ट्रेन यहाँ से खुलेगी।'

'प्यारे पुत्र, तुम्हें इस नई उम्र में ही खतरे का सामना करना पड़ रहा है। भगवान जाने क्या होगा ? मेरे हृदय में एक तरह की आवाज़ उठ रही है कि अन्त भला नहीं होगा।'

'माँ, इस तरह न कहो। धैर्य रखो। ईश्वर से प्रार्थना करती रहो कि मैं सकुशल लौटकर तुमसे मिल सकूँ।'

'क्या कहूँ? जब से तुम्हारा घर पर मिला तब से मैं रो २ कर अपना समय व्यतीत करती हूँ।'

तब तक वहाँ टेसा भी आ गई। टेसा को देख कर माँ के नेत्रों से आँसू निकलने लगा। टेसा दौड़ कर अपनी रुमाल से माता के आँसू पोंछने लगी। पर वह, अपने आँसू न रोक सकी। बिचारा ग़रीबी बुकोवीसी मौन धारण कर अपनी अन्तर्वेदना को किसी तरह छिपाना चाहता था परन्तु हृदय का भाव आँसुओं के रूप मे प्रकट हो ही जाता है। वह दौड़-कर अपने प्यारे पुत्र के गले से लिपट गया।

दिलतान्ती ही इस समय अपने हृदय को मजबूत बनाये हुए था। जब विद्रोह का समाचार तथा विरोधियों के पकड़े जाने की अफवाह फैली थी तब बुकोवीसी और उनकी पत्नी को सन्देह हुआ कि कहीं उनका पुत्र भी इसमें न शामिल हो। वे बड़े दुखित थे। टीउरीन आने पर अपने पुत्र को सुर-क्षित देखकर प्रसन्न हुए थे। परन्तु उनकी प्रसन्नता फिर दुख में विलीन हो गई। पिता ने कहा—'तुम को देख कर जी नहीं चाहता कि तुझे जाने दूं।'

'क्या करूँ पिताजी? कोई उपाय नहीं है। इसमें जाकर अपनी इच्छा के विरुद्ध लड़ना ही पड़ेगा।'

'बेटा, हम लोगों ने कदापि इसके लिये तुम्हें बड़ा नहीं

किया था कि जबर्दस्ती तुम्हें यह शैतान सरकार बिने झगड़े की लड़ाई में भेजकर बलि चढ़ावे।

'पिता जी मैं इसलिये कातर नहीं हूँ कि मेरे में बुजदिली आ रही है। लडने से मैं नहीं डरता। परन्तु किसी देश की स्वतंत्रता को बलात् हरना मुझे प्रिय नहीं मालूम होता। स्वार्थ के लिये अपहरण यदि अच्छा भी हो तो इस युद्ध से स्वार्थ का हित नहीं बल्कि अहित ही है।'

टेसा ने लोगों को भोजन के लिये आमंत्रित किया। छोटे बच्चों सहित बुकोबीसी का परिवार एक छोटी सी मेज़ के चारों ओर रखी हुई कुर्सियों पर बैठ कर टेसा का आतिथ्य ग्रहण करने लगा। दिलतान्ती अपने छोटे भाइयों को गोद में लेकर पुचकारता और चुम्मा लेता। उनके लिये बाज़ार से खिलौने भी लेता आया था। जो बच्चे स्कूल में पढ़ते थे वे भी अपने बड़े भाई से मिलने आये थे। उन सब ने आतुरता से दिलतान्ती से उसके लौटने के विषय में पूछा। उसका एक छोटा भाई था जिसकी उम्र केवल चार वर्ष की रही होगी। उसकी बोली तोतली और प्यारी थी। वह भी अपने बड़े भाई की गोद में उछलते और कूदते हुए बातें कर रहा था—'भइया तू लड़ाई से लौटते समय मेरे लिये क्या लाओगे ?'

'तुम ही कहो मैं तुम्हारे लिये क्या लाऊँ ?'

'मेरे लिये तू उड़ने वाला जहाज, एक छोटा सा मोटर लाना। मैं जहाज़ पर चढ़ कर ऊपर हवा मे उड़ूँगा और वहाँ

से फिर उड़ कर बड़ी दूर चला जाऊँगा। इस तरह जब बहुत देर हो जायेगी और भूख लगेगी तभी वहाँ से उतरूँगा। फिर खाना खाकर खेलने के लिये वहाँ जाऊँगा।'

'क्या तू ने उड़ने वाला जहाज देखा है ?'

'हाँ, मेरे गाँव के पास से होकर दिन में कई बार जहाज जाता है। मेरी माँ कहती है कि जहाज उड़ कर बहुत दूर समुद्र के पार दूसरे देश मे जाता है। मैं भी अपने जहाज पर बैठ कर दूसरे देश मे जाऊँगा।'

दिलतान्ती ने बड़े प्यार से उसको गले लगाया। भोजन करने के बाद दिलतान्ती टेसा से मिलने गया।

दिलतान्ती—'प्यारी, आज ही अन्तिम मिलन है। अब हम लोगों की सुहागरातें स्वप्न मे ही कटेंगी।'

'प्यारे, देखो, एक युक्ति छुट्टी की अवश्य लगाना। अपने अफसर की सिफारिश खूब करना। मेडिकल अफसर को कुछ देकर भी अपनी तरफ मिला लेना। किसी तरह से कोई चोट इत्यादि पहुँचे तो डाक्टर से मिलकर शीघ्र अपने लिये छुट्टी ले लेना।'

'प्यारी, मेरे हृदय में तुम्हारे लिये कितना प्रेम है मैं शब्दों द्वारा नहीं कह सकता। वियोग कितना दुखदाई है वह हम तुम ही जानते हैं। परन्तु मैं नीच उपायों से छुट्टी नहीं लूँगा। लड़ने जाता हूँ जी भर लड़ूँगा। सिद्धान्तों को अब कुछ दिनों

के लिये छिपा कर रख देना है । समय जब अनुकूल होगा तब फिर आन्दोलन प्रारम्भ किया जायगा। इस समय हम लोग टस से मस हो नहीं सकते। होने में जान का खतरा है। फासिस्ट सरकार अपनी जान में साम्यवादियों के एक बच्चे को भी जीवित नहीं रहने देगी।'

'प्यारे, तुम्हारी मुहब्बत ऐसी लग रही है कि जी चाहता है कल तुम्हारे साथ ही चली चलूँ।'

'तुम कहाँ जावोगी!'

'न जाने अब हम लोग कब मिलेंगे?'

'प्यारी, अब हम लोगों का मिलना ईश्वर पर निर्भर करता है।'

'पत्र भेजने में देरी न करना।'

'नहीं नहीं, मैं देरी न करूँगा परन्तु कौन जानता है कि ऐसे स्थान में जाना पड़े जहाँ से पत्र आना मुश्किल हो जाय।'

· दूसरे दिन प्रातःकाल ही लोगों को कूच करना था । अतः सिपाहियों को घूमने तथा लोगों से मिलने की छुट्टी थी। यों तो संध्या के बाद बैरक मे आ जाना जरूरी रहता था परन्तु आज काफी समय तक बाहर रहने की अनुमति थी। चाँदनी रात में टेसा की सुन्दर फुलवारी में टेसा और दिलतान्ती का फूल की झाड़ियों में अन्तिम प्रेम मिलन था। सारी प्रकृति ही इन दोनों के मधुर वियोग में आँसू गिरा रही थी। दोनों एक दूसरे के आँसू पोंछ रहे थे! हाय रे समाज का बन्धन, तू

कितना घातक हो रहा है। समाज के कल्याण के नाम पर कितना अत्याचार हो रहा है। इन नववर-वधुओं के वियोग को देख कर पक्षी भी कातर हो रहे थे और अपने भाग्य को सराहते थे। पक्षी होना कितना सुन्दर है। उन्हीं में स्वतंत्रता का सुन्दर सुख है। मनुष्य तो स्वतंत्रता का केवल ढोंग मात्र है।

[१३]

प्रातःकाल का सुहावना समय था। करीब सात बजे होंगे। आकाश साफ़ था। सूर्य की किरणें निकल चुकी थीं। सुन्दर सुन्दर फूलों से ढकी हुई पहाड़ियों की चोटियाँ बड़ी सुन्दर दिखलाई पड़ती थीं। प्रकृति के इस सौन्दर्य का आनन्द मनुष्यों के कार्य से फीका पड़ रहा था। सुन्दरता की खोज मे ही सौन्दर्य की आभा दिखलाई पड़ती है। परन्तु आज टीडरीन स्टेशन पर सैनिक सिपाहियो की बड़ी भीड़ थी। स्पेशल ट्रेन लगी हुई थी। सामान सभी रख दिये गये थे। केवल मिलना जुलना बाक़ी रह गया था। प्लैटफार्म सिपाहियों के प्रेमी, प्रेमी-काओं तथा सम्बन्धियों से भरा था। इनमें बच्चे, बूढ़े और औरतें —सभी प्रकार के लोग मौजूद थे। गाड़ी छूटने में केवल कुछ मिनटों की ही देर थी। चारो तरफ सी सी की आवाज़ सुनाई पड़ती थी। उमंग तो अवश्य ही कुछ लोगों मे प्रतीत होता था। परन्तु वह उमंग सैनिक उमंग था। उसमे हृदयहीनता का ही आभास मिल रहा था।

दिलतान्ती के माँ बाप अपने छोटे बच्चों के साथ एक कम्पार्टमेण्ट के सामने खड़े थे। ग़रीब टेसा भी अपनी आँखों को बार बार रूमाल से पोंछती हुई वहीं खड़ी थी। सभी लोग मौन थे। सारा भविष्य ही अनिश्चितता-सा मालूम पड़ता था। क्या कहते, कुछ मालूम नहीं पड़ता। केवल एक दूसरे को देख रहे थे। आँखें देखते देखते थकती नहीं थीं। यही मार्के की बात थी। बहुत देर टकटकी लगाने से नेत्रों में आँसुओं की झलक दिखलाई पड़ती और वियोग के वे आँसू के टुकड़े धरती पर गिर पड़ते।

लाल झण्डी दिखलाई दी। सीटी की आवाज़ आई। गाड़ी धक-धक करती हुई आगे बढ़ी। फासिस्ट सरकार के नारे सुनाई पड़ने लगे। हुर्रे हुर्रे की भी आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। दोनों तरफ़ से रूमालों का दिखलाना जारी रहा जब तक कि गाड़ी आँखों से ओझल न हो गई।

दूसरी तरफ कुछ दूसरा ही समां बँध गया। ज्यों ही गाड़ी आगे बढ़ी त्योंही सी सी तथा सिसकने की आवाज़ें भी सुनाई पड़ीं। यही मानव हृदय का उद्‌गार था। विदाई में आह निकलती ही है। उस पर भी उस वियोग में, जिसका कोई निश्चय नहीं। मिलन फिर अनिश्चित ही है। लोग अपने अपने घर लौटे। मुसोलिनी ने सुन्दर सृष्टि के ध्वंस करने का कार्य शुरू कर ही दिया।

× × ×

ग्रैन्डी बड़ा भाग्यशाली निकला। कामरेड नं० ५ ने साम्य-वादियों के प्रधान का पद ग्रैन्डी को ही दिया था। जिन चार टुकड़ियों के रहने का हुक्म था उनमें ग्रैन्डी की टुकड़ी भी थी। इनके दल के प्रायः सभी प्रमुख सदस्य अफ्रीका भेज दिये गये थे।

ग्रैन्डी उस दिन स्टेशन पर लोगों को पहुँचाने आया था। दिलतान्ती इसका प्रिय मित्र था। मित्रता में अभी तक कोई अड़चन नहीं पड़ी थी। केवल दिलतान्ती के एक छोटे से कार्य से ग्रैन्डी के विचार में अन्तर पड़ने लगा था। उस छोटी सी बात में यों तो कुछ नहीं रखा था परन्तु दिलतान्ती ने ग्रैन्डी से छिपा कर कार्य करने में गलती की थी। इससे ग्रैन्डी चिहुँक गया। उसमें उसका आकर्षण हो गया।

टेसा ग्रैन्डी के लिये एक ध्यान केन्द्रित करने की वस्तु हो रही थी। टेसा की अनुपम सुन्दरता उसके हृदय में धीरे धीरे घर कर रही थी। दिलतान्ती के रहने पर भी ग्रैन्डी ने एक दिन किसी बहाने टेसा से भेंट कर ही लिया था। उस दिन उसके हृदय में टेसा के सौन्दर्य का अच्छा अक्स पड़ा था।

जब वह अपने बैरक में आया तभी से सोचने लगा कि टेसा को भगवान ने मेरे लिये रख छोड़ा है। बराबर उसके यहाँ पहुँचने की तरकीबें सोचा करता। दूसरे दिन कुछ किताबों के पुलिन्दे लेकर टेसा के यहाँ जा पहुँचा। टेसा तुरंत ही दिलतान्ती के माता पिता को विदा करके आ बैठी थी। ग्रैन्डी को देखकर टेसा बाहर आई और भीतर ले जा कर बिठाया।

टेसा ने प्रारम्भ किया—'आखिर जो होना था सो होकर ही रहा।'

'जी हाँ।'

'आपके दोस्तों में सभी चले गये कि कोई बाक़ी भी है।'

'कोई नहीं है, मैं ही अकेला रह गया।'

'तब तो आप बड़े भाग्यशाली हैं।'

'नहीं नहीं, आप ऐसा क्यों कहती हैं ? मित्रों के बिना मुझे ज़रा भी अच्छा नहीं लगता। अपने दल का सारा कार्य अब मुझे ही करना होगा। अकेले मैं क्या क्या कर सकता हूँ। देखिये, मैं सभी साम्यवाद की पुस्तकें जो मित्रों के पास थीं, यहाँ रखने के लिए लाया हूँ। मेरे मित्र दिलतान्ती ने कहा था कि टेसा यहाँ जाकर रख सकते हो। और मैं आशा करता हूँ कि आप दल के कार्य में सहयोग देंगी।'

'महाशय ग्रैडी, आप मेरे पति के सहृदय मित्र हैं। मुझे आपके कार्य में सहयोग देने में इन्कार नहीं है। इस समय मैं बड़ी दुखी हूँ। मेरी माता के मरने का दुख अभी कम हो हीं रहा था कि मेरे नये स्वामी के वियोग का पहाड़ आ टूटा। एक नारी-हृदय के लिए यह कितना दुस्तर है। परन्तु सहना ही पड़ेगा कोई चारा नहीं है।'

'ओ सहृदया टेसा, मैं जानता हूँ कि तुम पर घोर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है। मैं अपने को धन्य मानता कि किसी तरह तुम्हारे दुख में शामिल होता। दिलतान्ती मेरे बचपन का

साथी था। उसकी स्त्री के दुख में मुझे भी उतना ही दुख है। तुम्हारे दुख को कम करने के लिए ही मैं तुम्हें तुम्हारे पति का काम सौंप रहा हूँ।'

'मैं अपने पति के छोड़े हुए कार्य को करने के लिए बिलकुल तैयार हूँ।

'इसके लिए मै तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। तुम्हारे पिता साम्यवाद के एक प्रमुख नेता थे। तुम्हारी माँ ने भी काफी दिलचस्पी साम्यवाद के प्रचार में दिखलाई थी। तुम्हारे पति इस समय इस दल के स्तम्भ थे। तुमसे कोई दूसरी आशा नहीं थी।'

'तो आगे का कार्यक्रम आपने क्या रखा है?'

'अभी तो मैंने आगे का कार्यक्रम कोई निश्चय नहीं किया है। परन्तु पर्चे निकालना ही विशेष कार्य इस समय मालूम पड़ता है।'

'जैसा हो।'

'ठीक है, दूसरे दिन इस विषय पर सोचा जायगा। इन पुस्तकों को आप अपने यहाँ रखें।'

'इनके रखने से कोई ख़तरा तो नहीं है?'

'नहीं, कोई वैसा ख़तरा नहीं है। प्रकट रूप से कोई प्रचार नहीं कर सकता।'

[१४]

अबीसीनिया तथा इटली के अन्तर्गत सोमाली प्रदेश की सीमा पर इटली की बड़ी भारी सेना का केन्द्र बना हुआ था। चारों तरफ से लड़ाकू हवाई जहाज़, पैदल सेना, बड़ी बड़ी टैंकें तथा तोपें तैयार रखी हुई थीं। खच्चर, ऊँट, घोड़े तथा गदहों का पूरा जमावड़ा हो गया था। मोटरलारियों का कहीं ठिकाना नहीं। किसी बाहरी आगन्तुक के लिये यह एक भारी तमाशा ही था। अबीसीनिया के प्रदेश में जाकर हवाई जहाज़ मँड़राया करते। ऊपर से पर्चे नीचे गिराये जाते थे। ये पर्चे अबीसीनिया की भाषा में छपे होते थे। इन पर्चों में अबीसीनिया की सरकार की शिकायतें लिखी रहती थीं। अबीसीनिया के सम्राट के विरुद्ध लड़ने के लिये प्रोत्साहन दिया जाता था। सम्राट को जंगली तथा बर्बर कहा गया था। दरिद्रता, रोग तथा अकाल इत्यादि का कारण सम्राट की बेवकूफी बताई गई थी। फैसिस्ट सरकार के आने से कौन कौन सी सुविधायें हो जायेंगी उसका वर्णन दिया जाता था।

इटालियन सिपाहियों का दल अबीसीनिया के राज्य में जबर्दस्ती घुस कर वहाँ की भोली भाली जनता को अपने सम्राट के विरुद्ध बग़ावत करने के लिये प्रचार करता था। उन्हें कपड़े बाँटे जाते थे। अन्न भी बाँटा जाता था। मुद्रा के रूप में लोगों को सहायता दी जाती थी।

अबीसीनिया के सम्राट के विरुद्ध लड़ने वाले सरदारों को इटली ने अपनी तरफ मिलाया। उन लोगों को नाना प्रकार के प्रलोभन देकर तथा उनको पुरस्कार-रूप में जागीर या नवाबी देने का वचन दे दे कर अपनी तरफ मिलाने का उद्योग बराबर जारी था।

अबीसीनिया की सरकार ने इटली के प्रति राष्ट्र-संघ में अनाचरण का दोष लगाया। जिसके विरुद्ध इटली की सरकार ने यह घोषित किया कि एक जंगली तथा असभ्य देश को एक सभ्य और ईसाई राष्ट्र को दोष लगाने का कोई अधिकार नहीं है। इटली की गरज से जेनेवा की दीवारें काँप उठीं। भिन्न भिन्न देश के एकत्रित राजनीतिज्ञों के दिमाग चक्कर खाने लगे। दिनदहाड़े इटली के अत्याचार को देखते हुए भी राष्ट्र-संघ के संचालकों की हिम्मत न हुई कि इटली को दुराचारी घोषित करें। राष्ट्र-संघ ने इटली से थोड़े दिनों के लिये विश्राम का समय माँगा। इटली ने अपनी भलाई सोच कर युद्ध प्रारम्भ करने का समय स्थगित कर दिया। इटली ने सोचा कि सैनिक प्रदर्शन से ही काम निकल जाय तो युद्ध करने की क्या आवश्यकता है।

राष्ट्र-संघ के प्रमुख संचालकों ने सोचा कि इस झगड़े के तय करने में अपना भी भला हो जाय तो अच्छा ही है। राष्ट्र-संघ के प्रमुख संचालकों ने इटली और अबीसीनिया के सरकार के पास यह गुप्त मंत्रणा भेजी कि अबीसीनिया का राज्य राष्ट्र-संघ की देख रेख में आ जाय तो क्या हानि है?

इटली ने सोचा कि प्रमुख संचालकों के हाथ में पृथ्वी मण्डल का सबसे बड़ा हिस्सा है, परन्तु उस पर भी सन्तोष नहीं है। अतः इटली ने इसे इन्कार दिया। कर्णधारों ने पुनः इटली से निवेदन किया कि राष्ट्र-संघ की तरफ से इटली ही प्रबन्ध-कारक समझा जायगा। इटली अभी सोच ही में पड़ा था कि अबीसीनिया के सम्राट ने अन्तर्राष्ट्रीय जगत के कर्णधारों की इस नृशंसतापूर्ण कार्रवाई को अनुचित और अमान्य घोषित किया।

राष्ट्र-संघ अपनी टालमटोल की पालिसी और अकमर्ण्यता का परिचय दे रहा था। इटली ने अपनी कार्रवाई शुरू कर दी।

× × ×

दिलतान्ती एक समझदार नवयुवक था। ऊँची से ऊँची शिक्षा प्राप्त कर चुका था। अधिकारियों को यह मालूम हो गया था कि दिलतान्ती अबीसीनिया की भाषा अच्छी तरह जानता है।

अबीसीनिया के सम्राट के कितने ही विरोधी सरदार देश में विराजमान थे। अभी थोड़े ही दिन हुए थे कि हेल सिलासी ने गृह-युद्ध समाप्त करके केन्द्रीय सरकार का संगठन सुचारु रूप से करना प्रारम्भ किया था। इटलो ने विरोधी सरदारों को अपनी तरफ मिलाने की चेष्टा की। मार्शल वैडेगेलीयो ने दिलतान्ती को एक मज़बूत विरोधी सरदार के पास अपने संदेश के साथ भेजा।

दिलतान्ती इस कार्य का हृदय से विरोधी था परन्तु अपने प्राणों की लालसा से सिद्धान्त को दबाकर फैसिस्ट सरकार का एजेन्ट बनकर दूसरे देश में विद्वेष फैलाने के लिये प्रस्तुत हुआ था। दिलतान्ती सरदार के यहाँ पहुँचा।

सरदार फासिस्ट सरकार के एजेन्ट के आने की खबर पाकर बड़ा खुश हुआ। दिलतान्ती की बड़ी आवभगत हुई। दिल-तान्ती ने सरदार के समक्ष जाकर अपने सेनापति की आज्ञा तामील की। दिलतान्ती ने कहा—'सरदार साहब, फासिस्ट सर-कार आपको इस प्रदेश की नवाबी देने की प्रतिज्ञा करती है। अबीसीनियन सम्राट की तरफ से जो मानहानि आपकी हुई थी उससे फासिस्ट सरकार वाकिफ है और अपनी सहानुभूति प्रकट करती है।'

सरदार—'मैं अपनी तरफ से आपका स्वागत करता हूँ। मुझे बड़ी खुशी है कि फासिस्ट सरकार ने आपको भेजकर मेरा मान किया। मैं अपनी फौज के साथ आपकी सरकार का साथ दूँगा।'

दिलतान्ती—'सरदार साहब, फैसिस्ट सरकार की तरफ से मैं आपको बधाई देता हूँ। आपकी हमदर्दी और सेवा फासिस्ट सरकार को कभी भूल नहीं सकती। ईश्वर आपको चिरायु रखे।'

इसके बाद दिलतान्ती ने मार्शल वैडेगेलियो की तरफ से लाये हुये भेंट को सरदार को अर्पण किया। सरदार ने भी दिल-तान्ती को एक कीमती हार भेंट-स्वरूप दिया। एक दूसरा

हार और कितनी बहुमूल्य वस्तुएँ मार्शल के लिये भेजीं।

दिलतान्ती अपने कार्य की सफलता पर प्रसन्न नहीं था। वह नहीं चाहता था कि देश के विरोधी, विश्वासघाती आदमी का सत्कार किया जाय। परन्तु परिस्थिति विपरीत थी। यहाँ पर विश्वासघाती ही इटालियन सरकार के लिये लाभकर था।

जब दिलतान्ती अपने कार्य को पूरा करके लौटा तब बड़ा सम्मानित हुआ। वह तुरन्त लेफ्टिनेन्ट बना दिया गया। उसकी पहुँच अब बड़े बड़े अफसरों तक होने लगी। अफसरों के नाच और भोजों मे निमंत्रित किया गया। मार्शल ने उसे एक और सरदार के पास भेजा। दिलतान्ती इस बार भी अपने कार्य को पूरा करने के लिये उक्त सरदार के पास गया।

दिलतान्ती सरदार के पास मिलने गया। सरदार ने दिलतान्ती का स्वागत एक आगन्तुक की नाईं किया। दिलतान्ती ने अपने को फासिस्ट सरकार का एजेन्ट बताया।

सरदार ने पूछा—'आपके आने का मन्तव्य क्या है ?'

दिलतान्ती—'सरदार साहब, मैं फासिस्ट सरकार की तरफ से आपको सम्मानित करने आया हूँ। फासिस्ट सरकार इस बात को जानती है कि अबीसीनिया के सम्राट ने आपकी मान-हानि की थी। फासिस्ट सरकार आपका पूर्ण सम्मान करती है। और आपको अबीसीनिया के एक बहुत बड़े हिस्से का नवाब बनाने के लिये तैयार है।'

सरदार—'महाशय दिलतान्ती, मैं आपको और आपकी सरकार को—मेरे सम्मान के लिये बधाई है। इसमें सन्देह नहीं कि अबीसीनिया के सम्राट से मेरा सम्बन्ध प्रेमपूर्ण नहीं है। परन्तु क्या आप बतला सकते हैं कि यदि आपकी सरकार से और आपसे किसी बात में मतभेद हो जाय तो आप अपने देश के विपत्तिकाल में किसका साथ देंगे? आप लोग हमारे देश की स्वतंत्रता को नष्ट करना चाहते हैं और मुझसे सहायता की आशा करते हैं। यह कितनी कृतघ्नता, नृशंसता है कि जिस देश के अन्न-जल से अब तक फूला और फला उसे विदेशियों के हाथ में सौंपे। देश के इस विपत्ति काल में मैं अपनी शक्ति-भर सम्राट के चरणों पर सारी सम्पति अर्पण कर दूँगा कि मातृभूमि के उद्धार करने के काम में आवे। तथा आप लोग मेरे देश के साथ न्याय करना चाहते हैं! हमलोगों को असभ्य और जंगली कह कर गुलाम नहीं बनाना चाहते। अबीसीनिया का राष्ट्र किस राष्ट्र से असभ्य है? क्या, वह दिन भूल गया जब अडोवा के मैदान में इस असभ्य जाति ने सभ्य जाति को पाठ पढ़ाया था? यूरपवासी अपनी पैशाचिक वृत्ति से सारे संसार को अपने चंगुल में फँसाकर अपना काम साधना चाहते हैं। जिस बल की गर्मी ने जर्मनी का गत महायुद्ध मे नाश किया था, उसी तरह फैसिस्ट सरकार का भी नाश होना अत्यावश्यक है। आप इस बात को समझ लें कि राष्ट्र के इस संकट में सभी द्वेष और व्यक्तिगत मतभेद को भुला कर प्यारी स्वतंत्रता को

बचाने के लिये अबीसीनिया का बच्चा बच्चा तैयार रहेगा। यद्यपि हमलोग आप लोगों की संगठित शक्ति के समक्ष कमजोर हैं तो भी ईश्वर पर भरोसा रख कर देश के गौरव और मान की रक्षा करेंगे।'

दिलतान्ती इस निर्भीक और सच्चे देशभक्त को देख कर हृदय में गदगद् हो गया परन्तु उसे व्यक्त नहीं किया। उसने बातें बदलने के लिये सरदार को संकेत करते हुए कहा—'सरदार साहब, फैसिस्ट सरकार ने आपकी सच्चाई और वीरता पर ही मुग्ध होकर आपको सम्मानित करने का निश्चय किया था। यदि आपको अपने भविष्य का ख्याल हो, अपने बाल बच्चों को गौरवान्वित पदों पर आसीन देखना चाहते हों तो फिर से अपने विचार को तौलिये और फैसिस्ट सरकार की भेंट को मत ठुकराइये।'

सरदार—'मैंने अच्छी तरह सोच लिया है। गुलामी का ताज भी स्वतंत्रता के काँटों से बदतर है। मुझको सबसे बड़ी प्रसन्नता है कि देश की आज़ादी को बचाने के लिये हमारा सारा परिवार फाँसी के तख्ते पर चढ़ा दिया जाय।'

दिलतान्ती ने देखा कि यह ऐसी आत्मा नहीं है जो कौड़ियों के मोल खरीद ली जाय।

[१५]

अबीसीनिया अब एक सिरे से दूसरे सिरे तक सिहर उठा है। आततायियों के अत्याचार से उस छोटे और ग़रीब देश

की अन्तरात्मा जाग उठी है । अबीसीनिया के सम्राट को यह विश्वास था कि इस संकट काल में देश एक स्वर से विदेशियों के विरुद्ध आवाज़ उठायेगा । सम्राट सरदार की देशभक्ति सुन कर गद्गद् हो गया था । सम्राट ने उस देशभक्त और सच्चे वीर के पूर्वकृत राजाज्ञा के उल्लंघन को क्षमा कर दिया । उसको सच्चे दिल से गले लगाते हुए राष्ट्र की तरफ से सम्मानित किया ।

अबीसीनिया की राजधानी अदीस अबाबा में इटालियनों से मोर्चा लेने की तैयारी हो रही है । लाखों नवयुवक उत्साह से भरे दिखलाई पड़ते हैं । अपनी माता की लाज बचाने के लिये अपने को न्योछावर करने को तैयार हो रहे हैं । देश की मर्यादा ही सर्वोपरि है । चिरसंचित स्वतंत्रता देवी की रक्षा के लिये उन्मत हो रहे हैं ।

लाखों जनता सम्राट के भाषण के लिये उत्सुक थी । देश भर के बड़े बड़े पदाधिकारी और नवाब लोग मौजूद थे । रास कासा तथा रास सीउम जैसे बड़े बड़े सेनापति सभास्थल को सुशोभित किये हुए थे । तोपो की गरगराहट के साथ सम्राट का आगमन हुआ । लोगों ने हर्ष-ध्वनि प्रकट की । सम्राट ने उपयुक्त आसन ग्रहण किया । इसके बाद खड़े होकर विशाल जनसमूह को राष्ट्र के हित की बातें कहना प्रारम्भ किया—प्यारी जनता, देश के नवावो तथा पदाधिकारियो ? आज राष्ट्र महान् संकट में है । इस देश के इतिहास में ऐसी विषम स्थिति कभी नहीं पड़ी थी । यह समझने की बात है कि इटली ने क्यों

जवर्दस्ती इस देश पर आक्रमण करने का विचार किया है। अफ्रीका इतना वड़ा महादेश है, जिसमे एकमात्र स्वतंत्र राष्ट्र अबीसीनिया है। यह यूरोपियन सभ्य राष्ट्रों की आँखों में कितने दिनों से गड़ रहा है। यूरप के सभी राष्ट्रों ने इसको अपने पंजे मे लाने की चेष्टा की। कोई भी देश क्यों न हो ? ब्रिटेन हो या फ्रांस। सभी ने वारी वारी से इसको हड़पने की चेष्टा की थी। समय ने पलटा खाया। यूरोपीयन राजनीतिज्ञों के पहलू सदा बदलते रहते हैं। आज उनका सिद्धान्त कुछ है, कल कुछ दूसरा होगा। इटलो ने भी चेष्टा की थी परन्तु इतिहास आपको मालूम ही है कि इस काली जाति ने श्वेतांग प्रभुओं पर विजय प्राप्त की। सारे संसार की आँखें खुल गईं। यूरोप की अजेयता नष्ट हो गई। ब्रिटेन और फ्रान्स ने इटली पर दवाव देकर अबीसीनिया की स्वतंत्रता को कायम रखने का वादा किया। तत्वतः समय पाकर इटली के ही प्रयोग से इसको राष्ट्र-संघ मे प्रवेश करने का अवसर मिला। ये बातें क्यों हुईं ? आपके देश पर कोई विशेष कृपा नहीं की गई थी। वल और दृढ़ता को देखकर उन्हे साहस नहीं होता था कि इस राष्ट्र को कुचल दें। राष्ट्र-संघ की अकर्मण्यता आप लोगों के सामने है। यह तो मानी हुई बात है कि अपने पैरों खड़ा होना होगा। अपनी शक्ति रहेगी तभी दूसरे उसकी क़द्र करेंगे। इस समय देश के बच्चे बच्चे तक को राष्ट्र की स्वतंत्रता की रक्षा के लिये तैयार रहना चाहिये। जो जहाँ हो वहीं सेना के लिये नवयुवकों को भर्ती

करे। स्त्रियों और बूढ़ों के लिये दूसरे कार्य दिये जायेंगे। सेना के लिये भोजन की सामग्री भी जहाँ तक हो राष्ट्र एक मन से जुटाने की चेष्टा करे। सरकार के हाथ में जितनी शक्ति है उसका अधिक से अधिक प्रयोग करेगी। राष्ट्र की मर्यादा को बचाने के लिये मै अपना सारा व्यक्तिगत धन अर्पण कर रहा हूँ। मेरी स्त्री ने अपने पहनने के जेवर तक उतार कर रख दिये और राष्ट्र की इस विपत्ति में खुशी से उपयोग करने के लिये दे दिया।

'मैं चाहता हूँ कि लोग मन के द्वेष-भाव को भूल कर इस राष्ट्रीय यज्ञ में शामिल हो जायें। जब हमारे देश की स्वतंत्रता न रही तब हम रह कर क्या करेंगे। देश के साथ मेरी जान भी न्योछावर है। उन विश्वासघातकों के लिये इस पृथ्वी पर डूब मरने के लिये चुल्लू भर पानी नहीं मिल सकता। याद रखिये कि यदि कोई राष्ट्र किसी संग्राम में हारता है तो उसके देश के विश्वासघातकों के कारण। छोटे और बड़े होने पर जीत मुनहसर नहीं करती। कोई मुझको जबर्दस्ती गुलाम नहीं बना सकता। जब हृदय कमजोर हो जाता है और दुख सहने की शक्ति नष्ट हो जाती है तब मनुष्य दूसरे का गुलाम बन जाता।

'प्यारी प्रजा, आज ही तुम्हारा इम्तहान है। देखना है कि तुमने माँ का कितना दूध पान किया है। माँ के दूध की लाज रखते हो कि नहीं, यह तुम्हारे ही हाथ में है।'

भाषण देकर सभास्थल से सम्राट चले गये। सभा भङ्ग हुई। लोगों का उत्साह दूना हो गया था। लोग आपे में नहीं थे। सभी लोग सेना में भर्ती होने के लिये उतावले हो रहे थे। स्त्रियाँ भी सिपाही का काम करने के लिये तैयार थीं। कितनी स्त्रियों ने सिपाहियों के लिये भोजन बनाने का काम लिया। बच्चे और नवयुवक राष्ट्रीय तराने गा रहे थे।

× × ×

तास पीन् अभी अठारह वर्ष का लड़का है। अदीस अबाबा के अमेरिकन मिशन स्कूल में पढ़ता था। वह गाँव का रहने वाला था। उस दिन सम्राट के भाषण को सुन कर सेना में भर्ती होने के लिये निश्चय कर लिया। सभास्थल से लौट कर अपने निवासस्थान पर आया। रात भर उसे नींद नहीं आई। दूसरे दिन सवेरे उठ कर अपने घर गया। वहाँ उसकी माँ थी। पीन् का बाप अभी हाल ही में मर चुका था। माँ ने अपने लड़के की शादी कर दी थी। नई बहू भी घर आई थी। दोनों सास और पतोहू घर का काम करती थीं। जंगलों से लकड़ी काट कर ठेकेदार के हाथ बेचती थी। यही इनका काम था। इनके पास सुअर का भी रोजगार था। इनसे काफ़ी आमदनी हो जाती थी।

तास पीन् थोड़े ही दिन हुए घर से गया था। एकाएक पुत्र को आया देख माता घबड़ा गई। पीन् ने माता को प्रणाम किया माता ने पूछा—'पीन्, तू इतनी जल्दी क्यों चला आया ?'

'माता, यह पढ़ने का समय नहीं है।'

'क्यों ?'

'हमारे देश पर बड़ी विपत्ति आ पड़ी है। इस संकट के समय हम लोगों का कर्त्तव्य है कि देश की सेवा करें।'

'बेटा, वह कौन सी विपत्ति है ?'

'माँ, तू इतना भी नहीं जानती। चारों तरफ यह खबर फैल गई है। क्या हमारे गाँव में यह बात नहीं मालूम ?'

'बेटा, मैं नहीं जानती।'

'बड़ा ताज्जुब है ?'

'विदेशियों ने इस देश पर हमला कर दिया है। सम्राट ने एक बड़ी भारी सभा करके यह घोषित किया है कि देश का बच्चा बच्चा लड़ने के लिये तैयार हो जाय।'

'विदेशियों ने चढ़ाई कर दिया ? क्यों बेटा ? इन लोगों ने क्यों चढ़ाई की ?'

'माँ, क्यों चढ़ाई की ? तुम स्वतंत्र हो। तुम्हें गुलाम बनाने के लिये आक्रमण कर रहे हैं।'

'मेरी कौन सी गलती है जिसके लिये मुझे गुलाम बनाना चाहते हैं ?'

'तुम स्वतंत्र हो, यही तुम्हारा पाप है। ये गोरी जाति काली जाति को स्वतंत्र होते देख नहीं सकती।'

'ओह, स्वतंत्र रहना ज़ुल्म हो रहा है। भगवान क्या कर रहा है? उन्हें क्या यह अत्याचार अच्छा लगता है?'

'माँ, केवल भगवान की दुहाई देने से कुछ हो नहीं सकता। भगवान ने किसी को ग़ुलाम बनाने के लिये इजाज़त नहीं दी है।'

'तब यह क्या कर रहे हैं?'

'इन्हें जो अच्छा लग रहा है वही कर रहे हैं।'

'क्या भगवान हम लोगों का साथ न देंगे?'

'भगवान किसी का साथ नहीं देते। वह तो सत्य और असत्य का निपटारा करते हैं। पाप और पुण्य का फल देते हैं। उचित और अनुचित का दण्ड देते हैं।'

'बच्चा, भगवान कहाँ छिपा है?'

'माँ, यह समय घबड़ाने का नहीं है। धैर्य धर कर माता-मही की सेवा करना धर्म है। भगवान अन्यायी को अन्याय करने के बाद दण्ड देता है। पाप के बाद ही उस पापी का विनाश करता है। भगवान की रट लगा कर अकर्मण्य लोगों की आह भगवान के यहाँ नहीं पहुँचती। रणक्षेत्र में आततायियों के द्वारा बहाई हुई खून की नदी भगवान के आसन को डोलाती है। कर्मवीरों को आर्त्तनाद ही परमेश्वर सुनते हैं। धैर्य धरो, अत्याचारियों का आज नहीं तो कल अवश्य नाश होगा। इस पाप का फल भविष्य में ही मिलेगा। जब तक पाप क

घड़ा लबालब नहीं हो जाता तब तक वह नहीं फूटता। माँ, अब आज्ञा दो? मैं जाऊँ। तुम्हारा अन्तिम दर्शन करने के लिये ही आया था।'

'बच्चा, जाओ, मैं तुम्हें रोक नहीं सकती। तुम्हारे पिता के मर जाने पर तुम्हें देख कर सन्तोष करती थी। परन्तु राष्ट्र के इस संकट में मैं तुम्हे छिपाकर नहीं रख सकती। मैं भी समझूँगी कि मेरी कोख सूनी नहीं रही। कर्मनिष्ठ पुत्र ही पुत्र है। माँ की लाज रखने वाला पुत्र ही सच्चा पुत्र है। आँसू हृदय की आह को प्रकट कर रहे हैं। पर जाओ, देश की रक्षा करो। यही धर्म है।'

माता से आज्ञा मिल गई। अब उसे दुनिया में रोकने वाला कोई नहीं था। माँ का आशीर्वाद बड़ा सुखदाई है। फिर वह अपनी नई वधू से मिलने गया। उसको स्त्री अभी केवल सोलह वर्ष की थी परन्तु बड़ी होशियार और घर के काम काज में चतुर थी। अपनी सास की देख रेख में उसने घर का सारा कार्य संभाल लिया था।

उसकी स्त्री भोजन बना रही थी। पति को आते हुए देख बाहर आई और हाथ जोड़कर समाचार पूछने लगी।

पीन्—'प्यारी, समाचार अच्छा है। जल्दी भोजन तैयार करके मुझे खिला दो। मैं लड़ाई में जा रहा हूँ।'

'आप लड़ाई में जा रहे हैं?'

'हाँ, मैं लड़ाई में जा रहा हूँ।'

'ता, मैं यहाँ क्या करूँगी ? आप लड़ाई में जाकर अपने प्राण को संकट में डालेंगे और मैं यहाँ पर बैठ कर मौज करूँगी। फिर भी मैं जानती हूँ कि देश को इस समय बहुत लोगों की जरूरत है। मैं भी आपके साथ चलूँगी और जब आप संध्या को थके माँदे लौटेंगे तो मैं आपका उपचार करूँगी।'

'तू नहीं जानती। अब लड़ाई इस तरह नहीं होती। दो-दो चार चार दिन तक लोगों का पता नहीं रहता। तू स्त्री है। लड़ाई के मैदान से दूर रहने ही मे तेरा कल्याण है।'

'क्यों ?'

'मेरा कल्याण तो आपके ऊपर निर्भर है। जब आप लड़ाई में जायेंगे तो मैं घर पर किसके लिये रहूँगी। जहाँ प्राणाधार है वहाँ ही प्राण रहेगा।'

'प्यारी, मैं नहीं जानता कि तू वहाँ जाकर कहाँ रहेगी और क्या करेगी ?'

'मैं वहाँ चलकर आपके लिये या और लोगों के लिये भोजन तो बना सकती हूँ। कपड़े तैयार कर सकती हूँ। घोड़े और खच्चरों के लिये घास काट सकती हूँ। कामों की कमी नहीं होगी। मैं ऐसे संकट के समय में आपके निकट ही रहूँगी।'

'क्या माता को छोड़कर जाओगी ! माँ मेरे जाने के बाद तुम्हारे साथ धैर्य बाँधकर रहती। फिर जब तू मेरे साथ जावेगी तो माँ कहाँ रहेंगी ?'

'मैं माता जी की सेवा करने के लिये तैयार हूँ। परन्तु स्त्री के लिये पति की सेवा सबसे बढ़ कर है। आप ऐसे काम में जा रहे हैं जहाँ प्राण का भय है। मेरे मन में शंका हो रही है। मैं भी चलूँगी।'

'अच्छा, यह बताओ कि वहाँ जाने पर मुझे लड़ाई के लिये कहीं दूर जाना पड़ा और तुम्हें कोई काम करने के लिये दूसरी जगह रहना पड़ा तब क्या होगा ?'

'होगा क्या ? जहाँ आपको हुक्म होगा, वहाँ आप जायेंगे और मेरे लिये जो काम मिलेगा वह मैं करूँगी।'

'तो माता जी से आज्ञा ले लो।'

पीरू की स्त्री अपनी सास से आज्ञा माँगने गई।

'माँ, मैं भी देश के इस संकट काल में अपने को सेवार्थ समर्पण करने के लिये अपने स्वामी के साथ जाना चाहती हूँ।'

'बेटी, तू भी जाना चाहती है। तो बतलाओ वहाँ जाकर क्या करोगी ?'

'मै वहाँ जाकर फौजी सिपाहियों के लिये भोजन तैयार करने में सहयोग दे सकती हूँ। घोड़े और खच्चरों के लिये घास काट सकती हूँ। जब आपके प्यारे पुत्र संध्या को लड़ाई से थके माँदे लौटेंगे तो उनकी सेवा करूँगी।'

'बेटी, तू बड़ी साहसी है। परन्तु लड़ाई मे बड़ा कड़ा हृदय होना चाहिये।'

'माता जी, मैं दिल की बात कह रही हूँ। जब से मैंने सुना कि पतिदेव लड़ाई में जायेंगे तब से मुझे बड़ी शंका होने लगी है। परन्तु कोई भी ऐसे समय में घर पर रहने के लिये नहीं कहेगा। क्या जाने यही अन्तिम घड़ी हो। इनके निकट रहने पर सेवा तो कर सकूँगी। ऐसे पति को पाकर मैं भी अपने को बड़ी भाग्य-शाली मानती हूँ।'

'बेटी, तब मैं ही यहाँ रह कर क्या करूँगी? मैं भी तेरे साथ चल कर तुम्हारे कामों मे हाथ बटाऊँगी। तुम्हारा ही मुख देख कर पीनू के चले जाने के बाद मैं धैर्य धरती। जब तू भी जाने के लिये तैयार है तब मैं किस तरह पीछे हट सकती हूँ। जाओ, चलने की तैयारी करो?'

पीनू भी तब तक आ गया और उसकी स्त्री कहने लगी—'माँ, यूनी कहती हैं कि मैं भी साथ चलूँगी। मैंने बहुत समझाया परन्तु वह नहीं मानतीं।'

'बेटा, तुम जाते हो तब हम लोग यहाँ किसके लिये रहें? हम दोनों भी देश का काम करने के लिये वहीं चल रही हैं।'

'माँ, मुझे तुम लोग अभी जाने दो। मैं वहाँ से पत्र लिखूँगा कि स्त्रियों के लिये यहाँ पर ऐसा प्रबन्ध है तब तुम दोनों आना। अभी जाना व्यर्थ है।'

'यदि पत्र न आया तब क्या किया जायगा?'

'तुम दोनों तब भी वहाँ आ सकती हो। और मेरा वहाँ पता न लगे तब भी कहीं न कहीं पता लगा ही सकती हो।'

'तब पत्र अवश्य देना।'

[१६]

करीब एक वर्ष का समय पूरा हो रहा है। टेसा के पास दिलतान्ती का भी एक पत्र नहीं आया। लड़ाई के शुरू में इटली के जीत की ख़बरें अखबारों में ख़ूब छपी थीं।

परन्तु गर्मी और वर्षा ऋतु के आने पर कुछ शिथिलता मालूम पड़ती थी। ज़ंगल और पहाड़ों का दुर्गम्य देश वर्षा ऋतु में भयानक हो गया था। हैज़ा और मलेरिया से बहुत इटालियन सिपाहियों की मृत्यु हो गई थी। पहाड़ो नदियों में कितने लोग दब कर मर चुके थे। पहाड़ों और जंगलों में कितने मार डाले गये थे। इटली के अखबारों में ये बातें छपती नहीं थीं परन्तु किसी न किसी तरह पता लग ही जाता था। ग्रैन्डी साम्यवादी पर्चों का प्रकाशन किया करता था। टेसा के यहाँ सब कागज़ात रखे जाते थे। एक तरह से टेसा ही परिश्रम करती थी। दिन रात पर्चों के तैयार करने में लगी रहती थी। जिन ख़बरों को इटली की सरकार छिपाना चाहती थी उसे साम्यवादी अवश्य ही निकाल देते थे। देश की आर्थिक दशा बड़ी ख़राब हो चली थी। अन्न का भाव बड़ा महँगा हो रहा

था। ऐसा मालूम होता था कि थोड़े दिनों के बाद खाने के लिये अन्न ही नहीं रह जायेगा।

राष्ट्र-संघ ने इटली को aggressive घोषित कर दिया था। अबीसीनिया के जोर करने पर बहुत लिखा पढ़ी होने पर अठारह की समिति ने इटली के ऊपर आर्थिक नियंत्रण घोषित किया। इटली ने राष्ट्रों को बड़ा डराया और धमकाया। परन्तु इसका फल कुछ नहीं हुआ। हाँ, एक बात अवश्य हुई कि बड़े बड़े राष्ट्र जो राष्ट्र-संघ की नीति के परिचालक थे नियंत्रण के नियम को ऐसा लचकदार बना दिया जिससे उसका उल्लंघन कोई दुस्तर नहीं था। तेल के नियंत्रण पर फ्रान्स और अँग्रेजी सरकारों ने ही विरोध किया। अतः इटली मे जिस दुर्भिक्ष का लक्षण दिखलाई पड़ रहा था वह बच गया। साम्यवादी पर्चे बराबर इन बातों का ध्यान अपने लेखों मे दिलाया करते थे। एक दिन अखबारों में टोउरीन के ५६ नम्बर की बटालियन के संहार का समाचार छपा। इस कारण टोउरीन में बड़ा तहलका मच गया।

टेसा ने ग्रैन्डी से पूछा—'क्या तुम्हे ५६ नं० के बटालियन के विषय में खबर मिली है ?'

'हाँ, वहाँ से तो बड़ी बुरी खबर आई है।'

'क्या है ?'

'५६ नम्बर की बटालियन के सभी सैनिक मारे गये हैं।

उनकी लाशों का भी पता नहीं है। वे शायद एक नदी में वर्षा के कारण वह गये।'

'क्या मेरा पति भी ५६ नम्बर में ही था ?'

'हाँ।'

इतना कह कर ग्रैन्डी रोने लगा। टेसा कब तक अपने को रोक सकती थी। वह भी सिसकने लगी। तब ग्रैन्डी ने धीरे धीरे अपने आँसुओं को रोका और टेसा के आंसुओं को पोंछने लगा।

यह ग्रैन्डी की माया थी। ग्रैन्डी चाहता था कि टेसा को यह मालूम हो जाय कि वह विधवा हो गई। तब ग्रैन्डी उसे अपने प्रेम को प्रकट रूप मे वर्तने लगेगा।

यों तो साल भर के अन्दर ग्रैन्डी ने टेसा को अपने माया जाल मे फाँस लिया था। माता के मरने के वाद जब टेसा अपने पर हुई और उसी समय पति के प्रेम की आवश्यकता प्रतीत हुई तभी दिलतान्ती को अफ्रीका चला जाना पड़ा। दिलतान्ती के लिये टेसा का बड़ा प्रेम था। परन्तु बालकपन का वह प्रेम कुछ मित्रता-सा मालूम होता था। जब वह मित्रता-सा प्रेम प्रणय-प्रेम से परिवर्तन होता तभी पतंग कट गई। इस समय टेसा को अकेलापन अनुभव होने लगा था। ग्रैन्डी अवसर पाते ही सर्वदा अपने को उसकी नजरों के सामने रखने लगा। राजनीतिक सम्भाषण हो दोनों के बीच क्यों न होता हो परन्तु, राजनीतिक एकता से हृदय की एकता भी जुटने लगती है।

ग्रैन्डी को काला धागा बाँधते देख कर टेसा ने भी काला वस्त्र धारण कर लिया। ग्रैन्डी का दाँव लह गया था। जब ग्रैन्डी अपने बैरक मे आया तब सोचने लगा कि अब उसका रास्ता साफ हो गया। उसने टेसा को यह विश्वास दिला दिया कि दिलतान्ती मर गया।

दिलतान्ती के मरने की खबर पक्की नही थी। जब टेसा ने पूछा तो उसने हाँ तो नहीं कहा परन्तु ऐसा गोलमटोल जवाब दिया जिसका मतलब यही था कि वह मर गया। अब ग्रैन्डी अवसर की बाट में था। यदि ऐसे समय में चूकेगा तब उसे उपयुक्त समय नही मिलेगा।

× × ×

[१७]

जाड़े का दिन आ गया था। राष्ट्र-संघ के आर्थिक नियंत्रण के रहने पर भी बाहर के देशों से माल आ ही रहा था। मार्शल ग्रैजियानी के नेतृत्व ग्रहण करने के बाद से इटली का पाँसा तेज चलने लगा। अखबारों में प्रतिदिन इटली की विजय की खबरें मोटे मोटे अंकों में निकलती थी। एक प्रदेश के बाद दूसरा प्रदेश रोम के अधीन होता गया। भला हवाई जहाज से बम और गैसों के प्रयोग करने पर ग़रीब अबीसीनिया कब तक ठहर सकता था। बड़े बड़े राष्ट्रों ने अबीसीनिया को युद्ध-

सामग्री देने से इन्कार कर दिया था। अप्रत्यक्ष रूप से सभ्य संसार अबीसीनिया को सहायता न देकर इटली की सहायता कर रहा था। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिज्ञों की घोर गर्जनायें संसार के हर एक कोने में गूँज रही थीं परन्तु उनकी गुप्त काली करतूते भी संसार से छिपी नहीं थीं।

अडोवा की विजय का समारोह इटली में मनाया जा रहा था। शहरों में रोशनी, नाच, थियेटर इत्यादि का प्रबन्ध था। कितने ही थियेटरों और चित्रपट-गृहों ने बेनीफिट नाइट घोषित किया था। उस दिन की सारी आमदनी युद्ध-फन्ड में दी जाने वाली थी। इससे बड़ी भीड़ थी। ग्रैन्डी भी बैरक से टेसा को थियेटर में ले जाने के इरादे से आया।

ग्रैन्डी ने टेसा से कहा—'टेसा, आज लड़ाई का चित्र थियेटर में दिखाया जायगा।'

'किस थियेटर में ?'

'मैंने तो सुना है कि सभी थियेटरों और चित्रपट-गृहों मे युद्ध का चित्र दिखाया जायगा और आज की आमदनी युद्ध-फन्ड में जायगी।'

'ओहो, ऐसी बात है। फासिस्ट सरकार का दिवाला हो गया।'

'दिवाला तो कभी हो गया था। यदि राष्ट्र-संघ ने आर्थिक-नियंत्रण सच्चाई के साथ तामील किया होता तो लड़ाई कभी खत्म हो जाती।'

'राष्ट्र-संघ में भी तो जेंन्टर ही हैं। वे भी मुसोलिनी से मिल कर लड़ाई की लूट में कुछ हिस्सा लेना चाहते थे।'

'तो टेसा क्या होगा ?'

'तुम्हारी क्या राय है ?'

'मेरी राय चल के देखने की है।'

'अच्छा, तब चला जाय।'

टेसा ने अपना कपड़े बदले और भीतर से तैयार होकर आई। दोनों एक टैक्सी पर बैठ कर थियेटर की तरफ चले। ग्रैन्डी यही चाहता था। संयोगवश उसकी कामना पूरी हो गई। थियेटर हाल में दोनों अगल बगल बैठे थे। हाल प्रेमी प्रेमिकाओं से भरा था। एक दूसरे से हिलमिल कर बातें कर रहे थे। एक दृश्य के बाद दूसरा दृश्य आता। लोग मुग्ध होते, किलकिलाते, हँसते, शी शी करते। रील पर रील बदलता जा रहा था। ग्रैन्डी भी मस्त होकर कभी स्टेज की तरफ देखता, फिर क्षण भर के बाद टेसा की तरफ देखने लगता। इन्टरवल हुआ। दोनों उठकर बाहर आये।

रेसटोराँ में जा बैठे। तश्तरियाँ सामने आने लगीं। पेग पर पेग ब्रान्डी और विस्की खत्म होने लगी। ग्रैन्डी ने सराह सराह कर टेसा को भी खूब पिलाया। जब टेसा 'न' कहती तब वह और अच्छा से अच्छा नम्बर मँगाकर चखाने लगता। चखते ही चखते टेसा ने काफी पान कर लिया। जब उसकी

आँखें लाल हो गईं तभी ग्रैन्डी ने छोड़ा। घंटी की आवाज हुई। उठे और हाल में गये। ग्रैन्डी ने बिल चुकाया। खेल शुरू हुआ। एक एक से सुन्दर दृश्य आने लगा। इधर ग्रैन्डी और टेसा के ऊपर भी मस्ती आने लगी, दोनों की आँखें अधखुली थीं। ग्रैन्डी ने चालाकी भी की थी। स्वयं तो उसने कुछ कम लिया ताकि टेसा की मस्ती का आनन्द ले सके। टेसा बिल्कुल बेहाल थी। ग्रैन्डी को अन्तिम पार्ट लेने की आवश्यकता भी न थी। स्वयं ही टेसा शराब की मस्ती में थी। उसे याद न रहा कि वह कहाँ और किस रूप में बैठी है। कभी स्टेज की तरफ देखकर हँसने लगती तो कभी ग्रैन्डी के ऊपर गिरने लगती। तमाशा समाप्त होने पर दोनों घर लौटे। टेसा को अब होश नहीं था। वह तो नशे में चूर थी। ग्रैन्डी ने टेसा को गाड़ी पर से उतारा, कमरे में लाकर बिस्तरे पर सुला दिया।

ग्रैन्डी ने रात भर की छुट्टी ले ली थी। वह आज यहीं रह गया। टेसा को अपने वश में कर ही चुका था। कोई काम बाकी नहीं रह गया था। मौन भी सम्मति का एक लक्षण है। उस पर भी टेसा को शराब इतना पिलाया था कि वह आपे मे नहीं थी। ग्रैन्डी टेसा के बाहुपाशों में लिपट कर सो गया।

× × ×

उस दिन टेसा और ग्रैन्डी का सम्मिलन हो गया। जिस टेसा के लिये दिलतान्ती ने ग्रैन्डी से छिपाया था, जिसको

दिलतान्ती ने अपने हृदय में बालपने से स्थान दे रखा था, वह आज ग्रैन्डो की हो गई।

टेसा की माँ ने बिना किसी तैयारी के टेसा और दिलतान्ती की शादी करा दी थी। कोई जानने भी न पाया था। यहाँ तक समय नहीं मिला था कि शादी का पोशाक भी बन जाय।

आज वही टेसा बड़ी तैयारी के साथ ग्रैन्डो से शादी कर रही है। ग्रैन्डी ने अपने कितने मित्रों को निमंत्रण दिया था। ठीक समय पर शादी नियमित रूप से हो गई। वृहद्‌रूप में प्रीति-भोज सम्पादन हुआ।

[१८]

दिलतान्ती जब से अफ्रीका पहुँचा तब से कोई पत्र नहीं भेज सका। प्रारम्भ में तो एक सैनिक के लिये पत्र भेजना कठिन ही नहीं बल्कि नियम के विरुद्ध था। फिर जब वह अफसरों के ग्रेड में आ गया तो भी डाक के आने जाने का कोई सुप्रबन्ध नही था। कभी डाक आता जाता, फिर कभी बन्द हो जाता। अखबारों में लड़ाई की खबरें उनके विशेष एजेन्ट जो अबीसीनिया में गये थे उन्हीं के द्वारा मिलती थीं। दिलतान्ती कभी चैन से एक जगह नहीं रहने पाता था उसको बराबर अपना स्थान बदलना पड़ता था। उसके मन में टेसा की बातें भूली नहीं थीं। परन्तु उसका कोई अख्त-यार नहीं था। पत्रों के भेजने में बाधायें थीं।

लड़ाई काफी दिन होती रही। जब वह एक पद से दूसरे पद पर बढ़ता गया तब उसने अपनी खुशी का पत्र भेजने का इरादा किया।

सैनिक कैम्प
७-८-३५

प्रिय टेसा,

मुझे क्षमा करना। बहुत दिनों के बाद पत्र लिखने का अवसर मिला है। पत्रों के आने जाने की सुविधा नहीं थी, अतः कोई पत्र न दे सका। यहाँ पर मैं बड़ा खुशहाल हूँ। केवल तुम्हारी अनुपस्थिति से आनन्द फीका पड़ गया है।

अबीसीनिया की हालत तो अखबारों से तुम्हें मालूम ही हो गयी होगी। हमारा देश उत्तरोत्तर विजय करता हुआ एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश पर बराबर बढ़ता जा रहा है। यह देश जंगल, पहाड़ और मरुभूमियों के कारण दुर्भेध्य था परन्तु फासिस्ट सरकार ने इस देश को भी सभ्य संसार से जोड़ दिया। यहाँ जीते हुये प्रदेशों में आने जाने के लिये सड़कें तैयार हो गई है। मेरी तरक्की भी काफी हो गई है। मैं एक मामूली सिपाही से एक बटालियन का कप्तान हो गया हूँ। हमारी बटालियन ने काफी नाम पैदा किया है। फासिस्ट सरकार ने हम लोगों की काफी प्रशंसा की है।

इस देश के रहने वाले अधिकांश अनपढ़ और मूर्ख हैं। ये देखने में भी उतने भयंकर नहीं होते। काम करने में बड़ा

परिश्रम करते हैं, लोग बड़े साहसी और वीर हैं। यदि इस देश की जनता अपने सरकार के विरुद्ध हम लोगों से आकर न मिली होती तो इसमें जल्दी विजय पाना सहल नहीं था। काफी तादाद मे लोग अपनी सरकार का साथ छोड़ कर हम लोगों से आ मिले। यहाँ की सरकार अभी विल्कुल जंगली अवस्था मे थी। इसके पास शासन की सामग्री कुछ नहीं थी। फिर भी अवीसीनिया के सैनिकों ने भी बड़ी वीरता दिखलाई। परन्तु हम लोगों के हवाई जहाजों के आगे इनकी पैदल सेना कुछ कर नहीं सकती। बम और गैस ने हम लोगों की काफी सहायता की।

देखो, मैं कब तुमसे मिलता हूँ। मन सदा तुम्हारी तरफ लगा रहता है। बिना युद्ध के समाप्त हुए हम लोग स्वदेश को लौट नहीं सकते। नीचे लिखे पते से पत्र का उत्तर देना।

तुम्हारा

दिलतान्ती

Military Camp

Adowa

एक दूसरा पत्र अपने मित्र के पास लिखा।

सैनिक कैम्प

७-८-३५

प्रिय ग्रैन्डी,

पत्र भेजने की सुविधा नहीं थी अतः पत्र नहीं भेज सका।

तुम्हारे बिना चैन नहीं रहता। तुम्हारी गैरहाजिरी बराबर महसूस करता हूँ। यहाँ की हालतें अखबारों में छपती होंगी। परन्तु खबरें एकतरफा ही रहती हैं। अबीसीनिया विजय का सच्चा इतिहास तो पीछे लिखना होगा। यों तो धीरे धीरे इटालियन सेना अबीसीनिया में घुस रही है। आधे से अधिक प्रदेश जीत लिये गये। परन्तु ख्याल रखो कि जितना धन और जन का नाश इस लड़ाई में हो रहा है, उतने धन से इटली की अच्छी उन्नति की जा सकती थी। आगे चल कर भी यह इटली के लिये लाभप्रद होगा या नहीं, सन्देहास्पद है। हाँ, यहाँ के खनिज द्रव्यों पर लोगों की आशा बँधी है।

मेरे आने का कोई ठीक नहीं है। टेसा का हाल लिखना। उसकी आवश्यकताओं पर ज़रा ध्यान देते रहना।

तुम्हारा—

दिलतान्ती।

समयानुसार दोनों व्यक्तियों को पत्र मिला। पत्र पाने पर लोग विस्मित हो गये। ग्रैंडी को सन्देह तो पहले ही से था। परन्तु उसने सोचा था कि दिलतान्ती जीता न होगा, क्योंकि उसका एक भी पत्र दो वर्षों के अन्दर नहीं आया।

टेसा को पत्र मिला। हृदय धक धक करने लगा। अतीत की स्मृतियाँ उसके सामने एक के बाद दूसरी आने लगीं। सोचने लगी दिलतान्ती अभी जीता है। परन्तु इतने दिनों तक पत्र न लिखना केवल बहानाबाज़ी थी। सुविधा नहीं थी,

केवल एक ढोंग है। वह जरूर कहीं दूसरी से प्रेम करता होगा। अन्यथा अपनी नई स्त्री को कोई भूल नहीं सकता। जो हो मेरी कोई गलती नहीं है। मैंने काफी इन्तजार किया था। जब कोई आशा न रही तभी मैंने अपने को दूसरे के हाथों में समर्पण किया।

दूसरे दिन जब ग्रैंडी टेसा के यहाँ आया तब उसने अपना पत्र टेसा के सामने फेंक दिया।

टेसा ने पूछा—'यह पत्र किसका है ?'

'दिलतान्ती का है।'

'क्या वह जीवित है ?'

'पत्र आने से तो यही प्रतीत होता है।'

'इतने दिनों तक वह कहाँ छिपा था ?'

'पत्र भेजने की सुविधा नहीं थी।'

'तो क्या होगा ?'

'होगा क्या। मैंने बड़ी गलती की कि उसको मरा हुआ समझ कर उसकी स्त्री को अपनी स्त्री बना लिया।'

'नहीं नहीं, इसमें कोई दोष नहीं है। यह मत समझना कि उसकी अनुपस्थिति से मैंने तुमको अपना पति बनाया है, बल्कि दो वर्ष के समय गुजर गये कोई खबर नहीं मिली। फिर भी एक नवयौवना नारी कब तक ठहर सकती है। क्या तुम नहीं रहते तो दूसरा पति नहीं मिलता ?'

'नहीं टेसा, यह मित्र के प्रति विश्वासघात है।'

'कोई विश्वासघात नहीं है। मैं इतने दिन नहीं ठहर सकती थी। इसकी परवाह तुम न करो।'

'जब दिलतान्ती सुनेगा कि उसके मित्र ग्रैंडी ने ही टेसा से शादी कर ली है तब वह क्या कहेगा?'

'कुछ नहीं कहेगा। मैं कोई उसकी गुलाम तो थी नहीं। न जाने वह कब तक विदेश से लौटेगा?'

जिस टेसा को दिलतान्ती इतना प्रेम करता था, वही टेसा दिलतान्ती के विरुद्ध ग्रैंडी से बातें कर रही है। वह अपने कार्य को उचित समझती थी।

× × ×

बहुत दिन हो गये। कोई पत्र नहीं मिला। दिलतान्ती अपनी प्रेयसी के पत्र का इन्तजार करता था। ग्रैन्डी का भी पत्र नहीं आया। दोनों में से किसी के पत्र न आने से उसके मन में आशंका होने लगी।

सोचता—'मालूम होता है कि ग्रैन्डी ने टेसा से शादी कर ली। नहीं, नहीं, मेरी टेसा ऐसी नहीं थी। मेरा और उसका सम्बन्ध इतनी शीघ्रता से नहीं टूट सकता। जब वह स्टेशन पर मुझे पहुँचाने आई थी तब उसके नेत्रों से आँसुओं की धारा बह रही थी। वह मेरी प्रेयसी ही नहीं, बल्कि मित्र भी थी। मेरा और उसका प्रेम बालपन से विकसित हुआ था। वह दीवार कितने ही आँधी और पानी के बाद तैयार हुई थी। कच्चे भीत की

तरह एक झोंके में नष्ट नहीं हो सकती। तब उसने टेसा का हाल जानने के लिये एक पत्र अपने पिता को लिखा।

सैनिक कैम्प
३-१-३६

प्रिय पिता,

मैं जीवित हूँ। इटली ने धीरे धीरे अबीसीनिया को जीत लिया। अब कार्य ईश्वर की कृपा से समाप्त ही होना चाहता है। पत्र लिखने मे सुविधाये न थीं, इसलिये इतने दिनों के बाद पत्र लिख रहा हूँ। माता जी को मेरी याद दिलाइयेगा। मेरे छोटे भाइयों को मेरी शुभकामना कह दीजियेगा। टेसा किस तरह है। उसकी खबर मुझको देंगे। मै अब कप्तान हो गया हूँ।

आपका—
दिलतान्ती
Military Camp
Adowa

दिलतान्ती का पत्र मिला। पिता और माता को बड़ी खुशी हुई। अब तक एक भी पत्र नही मिला था। लोग समझते थे कि वह मर गया। एकाएक अपने पुत्र का समाचार पाकर फूले नहीं समाते थे। उनकी खुशी बढ़ जाने का एक और भी कारण था कि वह कप्तान हो गया था। परन्तु टेसा ने ही दाव दे दिया। टेसा के कृत्यों का समाचार इन लोगों को मिल गया था। पिता ने एक पत्र लिखा!

गौडेन ब्रीज
२-२-३६

प्यारे पुत्र,

तुम्हारा पत्र हस्तगत हुआ। हम लोगों को बड़ी खुशी हुई कि तुम बड़ी अच्छी तरह से हो। तुम्हारी उन्नति के लिये धन्यवाद है। अब हम लोगों को तुम्हें देखने की बड़ी इच्छा हो रही है। तुम्हारी माँ बहुत दिनों से बीमार पड़ी हैं। उनकी तबीयत और भी घबड़ाती है। तुम्हारे पत्र मिलने के दिन से कुछ तबीयत हल्की हो रही है। टेसा ने गैन्डी से शादी कर ली है।

तुम्हारा प्यारा पिता
बुकोवीसी

पिता का पत्र मिला। उसके मुँह से चीख निकल गई। जो सोचा था वही हुआ। टेसा, जिस टेसा ने लड़कपन से ही प्रेम किया था। कितना दुर्बल प्रेम है। थोड़े दिनों के वियोग से ही हृदतंत्री के तार टूट गये। वे अब नहीं जुट सकते। गैन्डी तू कितना कृतघ्न है। भला, तू कहाँ तक मेरी भलाई करता? ओह! इतना विश्वासघात।

[१९]

दिन भर मिलिटरी डिउटी में रहना पड़ता है। दिन कट जाता था। एक मिनट भी फुरसत नहीं मिलती। जब रात को अपने कैम्प में आराम करने के लिये आता

तो उसे नींद नहीं आती। हाय टेसा! हाय टेसा! करता रहता। किसी तरह करवटें बदलते भोर होता। सारी रात जागते ही रह जाता। चेष्टा करने पर भी नींद नहीं आती। पैमाने से ज्यादा शराब पीने पर भी कुछ नहीं होता। बेहोशी में भी टेसा की सूरत नजर आती।

एक रात को एकाएक उठकर कहने लगा। शायद उस दिन कुछ झपकी आ गई थी और स्वप्न देखने लगा था।

—'क्षमा, क्षमा, मैं क्षमा नहीं कर सकता। इसका बदला अवश्य लूंगा। अभी लूंगा। देखना, गैन्डी तुमको आनन्द उपभोग नहीं करने दूंगा। नालायक, विश्वासघाती, तुम हमारे सामने मुँह दिखाने लायक नहीं हो। तुम्हारे कारण मैं कितनों का अब नाश करूँगा। सब का पाप तुम्हारे सर लगेगा। तुमसे बदला लेने के लिये ही अपना परिचय फासिस्ट सरकार को दे दूँगा। मैं अब तुम्हारा और तुम्हारे दल का नहीं रहा।'

किसी तरह रात काटी। भोर को उठकर अपनी फौजी पोशाक में जनरल कमान्डर ग्रैजियानी के सामने हाजिर हुआ। कमान्डर ग्रैजियानी दिलतान्ती से बड़ा खुश था। दिलतान्ती ने कहा—'मेरे प्रभु क्षमा करो। मैंने एक गल्ती की है। फासिस्ट सरकार के अन्दर रह कर मैने सब काम किये। तुम्हारी कृपा से सम्मानित भी हुआ। परन्तु इतने दिनों तक मैं इस बात को छिपाये हुए था। मैं चाहता तो बहुत पहले ही इस

षड्यंत्र को प्रकट कर देता और प्राण दण्ड या जीवदान माँग लेता।

'मैंने चुप्पी साध ली। कल रात को चुप्पी के अनौचित्य पर मुझे अपार दुख हुआ। मैं अपने भाव को छिपा न सका। मैं इस षड्यंत्र की एक एक कार्रवाई से परिचित हूँ। परन्तु मुझे कोई परवाह नहीं कि इस गुप्त बात को मैं अब खोलने जा रहा हूँ। मुझे दण्ड दिलावें या मुक्त करावें, आपके ऊपर निर्भर है।'

कमान्डर ग्रैजियानी—'वह कौन सा षड्यंत्र है ?'

'अबीसीनिया के युद्ध प्रारम्भ होने के पहले अपने देश में जो साम्यवादियों के पर्चे निकलते थे उसे मैं जानता हूँ। दस पन्द्रह नवयुवकों की मण्डली टीउरीन में थी जो इस प्रकार के पर्चे निकालती थी और सारे देश में बटवाती थी। ये नवयुवक प्रायः सैनिक विभाग में सिपाही का काम कर रहे हैं। इनमें कुछ को दण्ड मिल गया। अभी कुछ बाकी हैं। इनका प्रधान सदस्य टीउरीन में है। ७८ नं० की बटालियन में ग्रैन्डी नाम का सिपाही साम्यवादियों का प्रमुख नेता है। आजकल भी जितने पर्चे निकलते हैं सब उसी के द्वारा प्रकाशित होते हैं।'

'उन लोगों के साथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध था ?'

'मैं उन्हीं लोगों के साथ एक ही कालेज में पढ़ता था। मुझे कोई उतनी दिलचस्पी साम्यवाद के सिद्धान्त में न थी परन्तु दिन रात उन लोगों के साथ रहते रहते कुछ झुकाव

अवश्य हो गया था। जब मुझे नौकरी मिल गई तब मैं धीरे
धीरे उन लोगों से विरक्त रहने लगा। उन लोगों की बैठकों में
कभी कभी टहलते टहलते मैं चला जाता था।'

'अच्छा, उन लोगों में अब कौन कौन बच रहे हैं जिन्हें
दण्ड नहीं मिला है?'

'कुछ लोगों को दण्ड मिल गया। ग्रैन्डी टीउरीन में ही
है। दो चार इधर उधर होंगे। मैं उनके नाम नहीं जानता
परन्तु उन्हे पहचान सकता हूँ।'

'इस लड़ाई में कोई है कि नहीं।'

'दो व्यक्तियों को मैंने देखा था और वे दोनों मारे गये।'

'अच्छा, तुम जाओ। तुम पर कोई मुकद्दमा नहीं चलेगा।
मुझे विश्वास है कि तुम फासिस्ट सरकार के लिये अब और
जो जान से कार्य करोगे। यदि तुमने और भी बहादुरी के काम
किये तो तुम्हें अच्छो पदवी मिलेगी और फासिस्ट सरकार
के बड़े ओहदेदार बना दिये जाओगे।'

दिलतान्ती कमान्डर को सेल्यूट करके अपने कैम्प मे आया।
अब उसका दिल कुछ हलका हो गया। उसने कमान्डर के
सामने बयान देने में चतुराई तो अवश्य की परन्तु चतुराई
सभी जगह नही लहती।

कमान्डर ग्रैजियानी ने दिलतान्ती के बयान को लेकर रोम की
सरकार के पास कागज़ पत्र भेज दिये। कमान्डर ने दिलतान्ती

के विषय में लिखते हुए यह शिफारिश की कि इस आदमी ने फासिस्ट सरकार की मर्यादा बढ़ाने के लिए बहुत काम किये हैं। अब वह फासिस्ट सिद्धान्त को मानने के लिये तैयार है। प्रारम्भ में भी केवल मित्रता के नाते वह उन लोगों के साथ घूमा करता था और इस तरह उन लोगों कि कार्रवाइयों से परिचित हो गया था। परन्तु उसके कर्तव्य-ज्ञान ने उसे चुप्पी साधने न दिया। अतः उसने शपथ लेकर मेरे सामने सभी बातें बता दी हैं। मैंने उसको क्षमा करने का वचन दे दिया है। अबीसीनियन सरदारों के साथ समझौता करने में इसने असाधारण निपुणता का परिचय दिया था। इस तरह से दिलतान्ती की प्रशंसा रूप में अपना बयान लिख कर भेज दिया।

× × ×

कमान्डर ग्रैजियानी का भेजा हुआ पत्र रोम की सरकार को मिला। रोम की सरकार ने उसे टोउरीन के मजिस्ट्रेट के यहाँ अन्वेषण के लिये भेजा।

खुफियावाले सिपाही फिर चौकसी करने लगे। ग्रैन्डी के पीछे पीछे खुफियावाले रहने लगे। ग्रैन्डी के चालों को बराबर मार्क करते थे। ग्रैन्डी दो दिन या तीन दिन पर अवश्य ही टेसा से मिलने जाया करता था। खुफियावालों ने टेसा का बंगला मार्क कर लिया। खुफिया के सिपाही रात भर टेसा के बंगले की रखवाली करते। एक दिन संध्या समय ज्यों ही ग्रैन्डी उसके बँगले में गया त्यों ही पुलिस वाले भी घर में घुस गये।

ग्रैन्डी उसी बंगले में कुछ पर्चों के साथ गिरफ्तार हो गया। टेसा के बंगले की तलाशी ली गई। एक छापने की हैन्ड-मैशीन मिली। कुछ पर्चे भी मिले। टेसा भी गिरफ्तार हो गई।

पर्चों के मिलने पर दो एक जगह और भी तलाशियाँ ली गईं। परन्तु कुछ न मिला। ग्रैन्डी का सम्बन्ध मिलिटरी विभाग से था। टेसा एक साधारण जनता थी। एक संयुक्त ट्राव्युनल न्याय करने के लिये बिठाया गया। राजनीतिक मुकदमों में सभी काम संक्षेप में ही होते हैं। यहाँ शहादतों की कोई आवश्यकता नहीं थी। इतना काफी था कि ये लोग साम्यवाद से सहानुभूति रखते हैं।

ग्रैन्डी से कोई प्रश्न नहीं पूछा गया। उसको यह अधिकार था कि कोई वकील या वैरिस्टर के द्वारा अपने को निर्दोष प्रमाणित करता। परन्तु ग्रैन्डी इस बात को जानता था कि बैरिस्टर का रखना या न रखना बराबर है। टेसा के कहने पर एक बैरिस्टर रखा गया।

सरकारी बैरिस्टर ने मुकदमे को पेश किया। इसके बाद ग्रैन्डी के बैरिस्टर ने प्रश्न किया—(ग्रैन्डी से)—'क्या तुम साम्यवादी दल के प्रमुख सदस्य हो ?

'इसका कोई प्रमाण नहीं है।'

'कैप्टेन दिलतान्ती ने तुम्हे साम्यवादी दल का प्रधान बताया है।'

'बिल्कुल झूठ है ?'

'तुमसे उनसे कोई शत्रुता है ?'

'उनकी स्त्री ने मुझसे शादी कर ली है।'

'ये पर्चे तुम्हारे पास मिले थे ?'

'जी हाँ, ये पर्चे मेरे पास मिले थे।'

'क्या तुम इन्हें प्रकाशित करते हो ?'

'जी हाँ, मैं इन्हें प्रकाशित करता हूँ।'

'तुम इन्हें गुप्त रूप से क्यों प्रकाशित करते थे ? इसके लिये आज्ञा क्यों नहीं ली ?'

'भय था कि आज्ञा नहीं मिलती।'

इसके बाद टेसा से दो चार बातें पूछी गईं।

'क्या कैप्टेन दिलतान्ती तुम्हारा पति था ?'

'जी हाँ।'

'उनको छोड़कर तुमने ग्रैन्डी से शादी की है ?'

'जी हाँ।'

'ये पर्चे तुम्हारे घर मे छपते थे ?'

'जी हाँ।'

सरकारी बैरिस्टर ने कोई प्रश्न नहीं किया।

ट्राव्युनल के प्रमुख महोदय ने ग्रैन्डी के बैरिस्टर को पैरवी करने के लिये कहा।

बैरिस्टर—'लार्ड्स, यह मुकदमा सचमुच उस ढंग का नहीं है जैसा कि सरकारी बैरिस्टर ने कहा है। इन पर्चों के पढ़ने से

मालूम होता है कि इन अभियुक्तों ने अपनी नादानी से पर्चे निकालने का साहस किया है। यह अभी नवयुवक हैं। इनका दिमाग बदला जा सकता है। पर्चों में ऐसी बातें दी गई हैं जिससे पता चलता है कि फासिस्ट सरकार के विरोधी नहीं हैं बल्कि उसकी कुछ कार्रवाइयों की आलोचना करते हैं। कार्यों की आलोचना में तथा क्रियात्मक विरोध में भेद अवश्य है।'

इसके बाद सरकारी बैरिस्टर ने अभियोग को सरकार के विरुद्ध षड़यंत्र बतलाया। इस विषय का मुक़दमा पहले चल चुका था और उसी षड़यंत्र के सिलसिले में ये पर्चे निकलते थे। यों तो इनका उद्देश्य फासिस्ट सरकार का विरोध था और उसकी जगह पर साम्यवाद का प्रचार करना था। इसकी असफलता से यह एक छोटा मामला जान पड़ता है। हालांकि इससे फासिस्ट सरकार की कोई material हानि नहीं हुई है। इन्हें प्राणदण्ड न देकर जेल देना श्रेयस्कर होगा। ट्राव्यूनल ने थोड़ी देर विचार करने के बाद अपना Judgment सुनाया।

प्रमुख महोदय ने कहा—'जजों की राय में भी अभियुक्तों को फाँसी देना नहीं जँचा। अतः इन्हें बीस वर्ष के लिये कारा-वास का दण्ड दिया जाता है। बीच में यदि ये अपने को सुधार सके तो इनका दण्ड माफ़ किया जा सकता है।'

दिलतान्ती का रचा हुआ नाटक कितना जल्द समाप्त हो गया। वह भी सफलतापूर्वक खत्म हुआ। स्वंय तो फासिस्ट

सरकार की छत्र-छाया में जाकर आनन्द उठा रहे थे और अपने प्रियजनों को जेल भिजवा दिया। अपने सिद्धान्त को तिलांजलि देकर, स्त्री के लिये अपने मित्र को ही नहीं वरन् अपनी प्रेयसी को भी जेल भेजवा दिया। यही है यूरोपियन सभ्यता की गहरी नींव।

दूसरे दिन अखबारो मे साम्यवादी दम्पति के दण्ड मिलने की खबर निकली। दिलतान्ती के पिता बुकोवीसी ने इस समाचार को अखबारों में पढ़ा। दिलतान्ती को इसकी खबर देने की इच्छा से एक पत्र लिखा।

गौडेन-ब्रिज

४-४-३६

प्यारे पुत्र,

तुम्हें जान कर यह बड़ा आश्चर्य होगा कि ग्रैन्डी और टेसा के ऊपर षड़यंत्र का मुकदमा चला था। दोनों पर्चे प्रकाशित करने के सम्बन्ध में पकड़े गये थे। दोनों को बीस बीस वर्ष का कारावास दिया गया है। भगवान ने टेसा और ग्रैन्डी के विश्वासघात का अच्छा दण्ड दिया। तुम्हारी माँ की तबीयत ठीक हो चली है। थोड़े दिनों के लिए छुट्टी लेकर चले आओ।

तुम्हारा प्यारा पिता

बुकोवीसी

पिता का पत्र दिलतान्ती को मिला। आदमी करता कुछ और है ईश्वर करता कुछ और। उसने सोचा था कि ग्रैन्डी को

फाँसी हो जायेगी। उसकी प्रेयसी फिर उसे मिल जाती। या न भी मिलती तो उसके दिल का अरमान मिट जाता। दोनों को बीस वर्ष का कारवास।

फिर तो ये मिल ही जायेंगे। इस बात ने उसको और भी दुखित बना दिया।

[२०]

तास पीन् था केवल अठारह का। परन्तु वह आग था। देश का अरमान उसमें था। जब वह अपनी माता से आज्ञा लेकर फिर अदीस अबाबा मे पहुँचा तब उसने अपने को सेना मे भर्ती कराया। रण-कौशल सीखने में कोई देर न लगी। उसकी प्रतिभा से अबीसीनियन कमान्डर परिचित हो गया। तास पीन् तुरंत लेफ्टनेन्ट बनाया गया। उसको नये रंगरूटों के भर्ती तथा उन्हें लड़ने के योग्य बनाने का कार्य मिला।

तास पीन् अपने कार्य में बड़ा दक्ष निकला। पचासों हजार नवयुवकों को उसने उभाड़ा और उनका संगठन करके नई सेना का निर्माण किया। रास कासा और रास-सीउम ने उस पर पूरा पूरा विश्वास किया था। पीन् बराबर जहाँ माँग होती थी वहाँ के लिए नये रंगरूटों को भेजता। परन्तु अबीसीनिया के हाथ में था क्या। हवाई जहाजों से गिराये गये बम तथा गैसों से उसका सर्वनाश हुआ। शारीरिक शक्ति में दुनियाँ की किसी

भी जाति से मोर्चा ले सकते थे। परन्तु वर्त्तमान युग के ध्वंसकारी शस्त्र उनके पास नहीं थे।

तास पीन् गाँव गाँव में जाकर नवयुवकों को भर्ती करता। सेना के भोजन के लिये भी उपाय करता था। पीन् ऐसा पारखी था कि जब उसे यह पता लग जाता कि इटालियन इस रास्ते से अपना माल भेज रहे हैं तो वह पीछे से जंगलों और पहाड़ों के रास्ते छापा डालता। सभी वस्तुओं को लूट लेता। इस तरह उसने इटली के न जाने कितने मशीनगन और टैंक छीन लिये। उन्हीं के शस्त्र उन्हीं के खिलाफ चलाये जाते थे। इटली की खाद्य सामग्री से अबीसीनिया के सैनिकों का भी काम चलता था।

कितनी लड़ाइयों मे इटली को बुरी तरह हार खानी पड़ी। अधिकांश में यह तास पीन् की वीरता थी। इटालियन सेना के मार्ग को रोकना पीन् का काम था। दिन को जब मिलिटरी सड़कें तैयार होतीं तब रात को उसे तोड़ फोड़ कर अलग करना पीन् का ही साहस था।

अदीस अबाबा से सत्तर मील के फासले पर पीन् ने जबर्दस्त मोर्चा लिया था। चारो तरफ से इटालियन सेना घिर गई थी। पीन् के पास बीस हजार चुने चुने सिपाही थे। वह अपने सिपाहियो के साथ आगे बढ़ रहा था। उसके सिपाही आगे बढ़ते चले जा रहे थे। उधर से इटालियन सेना भी आ रही थी।

अबीसीनिया के सिपाहियों को न अच्छा खाना मिलता था, न समय पर पानी ही मिलता था। पीन् के नेतृत्व में वे

साहस बाँध कर आगे बढ़ रहे थे। पीन् सदा उन्हें धैर्य दिलाते हुए देश के लिये लड़ मरने के लिये आह्वान करता रहा।

इटालियन हवाई जहाज़ बराबर सिर पर मँड़राया करते थे। हजारों की संख्या में अबीसीनिया के वीर सिपाही विस्फोटक पदार्थों तथा जहरीली गैसों से मर गये। हवाई जहाजों से छोड़े हुए गैसों से पृथ्वी बिल्कुल कुहरे की नाईं ढक गई थी। उसमें कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। लोगों का दम घुटने लगता, धीरे धीरे तड़फड़ा कर मर जाते। इस तरह इटली की सेना के पहुँचते पहुँचते पीन् के आधे सिपाही खत्म हो गये।

संध्या होते होते एक पहाड़ की तराई में दोनों सेनाओं में कड़ी मुठभेड़ हुई। दोनों तरफ से तोप और बन्दूकों की आवाज से कर्णकुहर फट रहा था। दिशायें गूँज उठी थीं। कराहने की आवाज से पृथ्वी काँप उठी थी। ओह! उस दिन का युद्ध बड़ा भयानक हुआ। दोनों तरफ के बहुत सिपाही मारे गये। जिनकी लाशों को जंगल के जानवर तक खा कर पागल हो गये थे।

× × ×

अबीसीनिया के वीर सिपाही इटैलियन सिपाहियों से लड़ रहे थे। पैर उखड़ चुके थे। परन्तु वीर सेना-नायकों की आशा और दिलासा, साहस और शौर्य्य से लोग जमे हुए थे। लड़ कर मर जाने का संकल्प कर चुके थे।

परन्तु एकाएक अबीसीनिया के सम्राट का अदीस अबाबा छोड़ कर चले जाने के संकल्प से लोग घबड़ा गये। अदीस अबाबा से जीवुती और जीवुती से जहाज पर चढ़ कर अनजान दिशा की तरफ चले गये। पीछे मालूम हुआ कि वह जेरुशलम पहुँचे।

तास पीन् अपने सिपाहियों सहित पीछे की तरफ दब रहा था। अबीसीनिया की राजधानी अदीस अबाबा अब थोड़ी दूर ही रह गयी थी। तास पीन् हिम्मत की पुड़िया और साहस की मूर्ति था। उसके शरीर में कितने ही घाव लग चुके थे।

एक रात को वह अपने पाँच सौ चुनिन्दे सिपाहियो के साथ इटालियन सेना को पीछे से आक्रमण करने की योजना में पकड़ा गया। वह शेर शिकारियों के हाथ लग गया। उसका पकड़ना था कि बची बचाई अबीसीनिया की सेना भाग खड़ी हुई।

राजधानी पर इटालियन सेना ने कब्जा कर लिया। इटली की विजय-पताका फहराने लगी। अबीसीनिया के गौरव और सम्मान का वह नगर गुलाम हो गया। एक दिन जिस नगर के भव्य राज-प्रासाद से राष्ट्रीय पताका उड़ती थी, वह आज वीरान हो गया। और विदेशियों के स्पर्श से कलंकित हो गया।

तास पीन् अपने ही नगर मे कैद पड़ा है, उसका सारा शरीर घावों से क्षत विक्षत हो गया था।

तास पीन् की वीरता इटालियन कैम्प से छिपी नहीं थी। जेनरल ग्रैजियानी ने तास पीन् को अच्छी तरह से रखने का आदेश किया। राजनीतिक क़ैदियों का चार्ज कैप्टेन दिलतान्ती को दिया गया।

मार्शल ग्रैजियानी के आदेशानुसार कैप्टेन दिलतान्ती तास पीन् से मिलने गया। दिलतान्ती इस काम में विज्ञ समझा जाता था।

दिलतान्ती ने पीन् से Detention House में भेंट की।

दिलतान्ती ने अपने आने का मन्तव्य बतलाया—'मिस्टर पीन्, मै जनरल ग्रैजियानी की तरफ़ से कुछ बातें करने के लिये आया हूँ।'

पीन्—'जी हाँ, आप बातें कर सकते हैं।'

'यह तो आप मानेंगे ही कि आपका देश अब इटली की सरकार के अधीन हो गया। अदीस अबाबा के राजप्रासाद पर इटली का झण्डा गड़ चुका। राजधानी पर फासिस्ट सेना का कब्जा हो गया। आपके सम्राट देश छोड़ कर भाग गये। अब फासिस्ट सरकार देश मे अपने कर्त्तव्य को पूरा करना चाहती है। जो खून खराबे अब तक हुए वह हो चुके। अब से कार्य विधिवत् होना चाहिये। देश में बिना शान्ति स्थापित किये कोई शिक्षा-प्रबन्ध तथा और हित की बातें नहीं हो सकती। फासिस्ट सरकार आपकी वीरता और साहस की सराहना करती है। सरकार की इच्छा है कि शान्ति स्थापित

करने में आप सहायता देंगे तो, आपका उचित सम्मान करने के लिये मेरी सरकार तैयार है।'

तास पीन—'मोनसियो दिलतान्ती, आप लोगों ने मेरे प्रति जो सम्मान और सत्कार दिखलाया है उसके लिये धन्यवाद। यदि अबीसीनिया की सरकार युद्ध में हार गई तो भी अबीसीनिया की जनता हार नहीं मानती। आप हमारी अन्तरात्मा के ऊपर विजय नहीं प्राप्त कर सकते। इटली ने जिन घृणित उपायों से अबीसीनिया पर विजय प्राप्त की वह सभ्य संसार के इतिहास में सदा के लिये कलंक-स्वरूप रह जायगा। यदि गरीब और निःशस्त्र जनता पर गोले और गैस प्रयोग करके उन्हें गुलाम ही बना लिया तो उसमें कौन सी वीरता हुई। यदि वही चीजें हमारे हाथों में भी होतीं तो यह दिन देखने को न मिलते और आप लोग मुझे घृणित कार्यों के लिये निमंत्रण करने नहीं आते। आप मेरा सम्मान करना चाहते हैं तो मुझे गुलामी से रिहा कर दीजिये। मेरे पास कोई प्रस्ताव लेकर आने की कृपा न करें।'

दिलतान्ती—'ओ नवयुवक सरदार, मैं तुम्हारी वीरोचित बातों को सुन कर बड़ा खुश हूँ। अपने सिद्धान्त पर अटल रहना ही पुङ्गव पुरुष का काम है। परन्तु समय का खयाल करो। जब तुम्हारे सम्राट ही देश का साथ छोड़ कर चले गये तब तुमलोग क्या कर सकते हो। फैसिस्ट सरकार आप लोगों के साथ उचित व्यवहार करना चाहती है। फैसिस्ट सरकार के हाथ में जो सम्मान का पद है उससे आप लोगों को गौरवान्वित करना

चाहती है। देश की सेवा तो शासन-प्रबन्ध में भाग लेकर कर ही सकते हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इस प्रस्ताव को ठुकराने की चेष्टा न कीजिये। और फिर से इन बातों पर सोच कर अन्तिम परामर्श दीजिये। मैं अभी आपके लिये समय देता हूँ।'

इतना कह कर दिलतान्ती उस समय चला गया।

[२१]

तास पीन् की स्त्री और माँ अडोवा की लड़ाई के बाद घर लौट आई थीं। यूनी ने बहुत सी स्त्रियों को अपने साथ जाने के लिये तैयार किया था। इन लोगों का एक दल अलग ही संगठित था। भोजन तैयार करने में इन लोगों ने काफी सहयोग दिया था। परन्तु इटालियन हवाई जहाजों के बम और गैसों से स्त्रियों को रखना सुरक्षित नहीं समझा गया। स्त्रियों की अनिच्छा रहते हुए भी उन्हे घर भेज दिया गया।

तास पीन् के कैद होने की खबर उसकी स्त्री और माँ को लगी। यूनी और उसकी माँ, अदीस अबाबा के लिये रवाना हो गईं। स्त्रियों के लिये इस तरह बाहर जाना अब सुरक्षित नहीं था। परन्तु ये वीर स्त्रियाँ खतरे का कुछ भी ख्याल न करती हुईं पीन् से मिलने आईं। डाकुओं से भेंट हो गई। डाकुओं ने इनके कुछ आभूषणों को ले लिया। किसी तरह ये डाकुओं और लुटेरों से घिरे हुए नगर में पहुँच गईं। यहाँ आने पर

शहर की जो हालत देखी तो आँखों से आँसुओं की धारा चलने लगी। नगर उजाड़ हो गया था। कितने मकान टूटे फूटे नजर आते थे। कितने महल्ले जला दिये गये थे। दिन को कोई कहीं नज़र नहीं आता था। सभी लोग छिपे हुए थे। कहीं कहीं सड़कों पर इटालियन सिपाही नज़र आते थे। अंग्रेजी रेजी-डेन्सी सब के लिये शरणागत गृह बना हुआ था। यूनी और उसकी बूढ़ी सास कहीं ठिकाना न पाकर अंग्रेजी रेजीडेन्सी में गईं। सन्तरी से इन सबों ने कहा—'हम लोग दिहात की रहने वाली स्त्रियाँ हैं। हम लोगो का आदमी इटालियनों के हाथ कैद हो गया है। उसका पता लगाने आई हैं। परन्तु हम लोगों के ठहरने की कोई जगह नही मालूम होती। इसलिये यहाँ ठहरने की जगह चाहती हैं।'

तब सन्तरी ने उन्हें भीतर जाने दिया। वहीं पर दूसरे अबीसोनियनों से भेंट हुई और पता चला कि इसी नगर में इटालियन कैम्प की तरफ जाने पर पता मिल सकता है। लेकिन लोगों ने खतरा बतलाया। विशेष कर स्त्रियों के लिये और भी खतरा था। यूनी और उसकी सास डरने वाली नहीं थीं। दूसरे दिन पता लगाते लगाते उस स्थान पर पहुँच गईं जहाँ तास पोन् क़ैद था।

एक इटालियन सिपाही ने इन लोगों को आगे बढ़ने से रोका। परन्तु इन दोनों ने रुकने से इन्कार किया। इस पर वे गिरफ्तार कर ली गईं। कैप्टेन दिलतान्ती कैदियों का इनचार्ज

—मालिक था। उसके सामने ये स्त्रियाँ पेश की गईं। दिलतान्ती ने पूछा—'तुम लोगों के इधर आने का मकसद क्या था?'

यूनी—'मैं और मेरी बूढ़ी सास इधर ही आ रही थी। हम लोगों को यह मालूम नहीं कि यह रास्ता बन्द है। हमारा पति शायद इटालियनों के कैद में है। मैं उसी से मिलने आई हूँ।'

दिलतान्ती—'तुम्हारे पति का क्या नाम है?'

यूनी—'उनका नाम तास पीन् है।'

दिलतान्ती—'आप तास पीन् की स्त्री हैं? और बूढ़ी आप उनकी माँ हैं?'

दोनों ने 'हाँ' कहकर उत्तर दिया।

दिलतान्ती—'तो तास पीन् इटालियन सरकार की कैद में रखे गये हैं। यदि आप लोग उनसे मिलना चाहती है तब इसके लिये हमारे बड़े साहब से आज्ञा मांगिये। या मेरे पास आप दर्ख्वास्त दें जिसमें मैं ही उनसे इसके विषय में पूछताछ कर लूँ।'

यूनी—'यही दर्ख्वास्त समझ लीजिये।'

दिलतान्ती—'अच्छा, मैं साहेब के यहाँ लिख कर भेजता हूँ। तब तक आप लोग यहीं बैठी रहें।'

दिलतान्ती अपने दफ्तर में गया और एक कागज पर लिखकर संतरी के द्वारा आज्ञा के लिए भेजा। संतरी के चले जाने के बाद सोचने लगा—'ओह, यह स्त्री बड़ी सुन्दर है। जब इस अर्द्ध जंगली वेष में इतनी सुन्दर लगती है तब वह

यूरोपीयन भेष में और भी सुन्दर लगेगी। यह अपने पति को कितना प्यार करती है? एक टेसा थी जो थोड़े दिनों के वियोग में ही दगा देकर चली गई। आह! कितना अनुपम गुण इस स्त्री में है? कैसा साहस और शौर्य? कितनी निडर है?'

इतने में संतरी उत्तर लेकर लौटा। मिलने की आज्ञा मिल गई। परन्तु इन्हें भी कैद रखने का हुक्म हुआ है। कैप्टेन ने दो संतरियों के द्वारा यूनो और उसकी माँ को पीन् से भेंट करने के लिये भेजा।

पीन् अपनी माँ को देखते ही चरणों पर गिर पड़ा। उसकी माँ ने उसको उठाकर गले लगाया। फिर अपनी स्त्री से मिला।

'माँ, अन्तिम समय में तेरा दर्शन हो गया। देश गुलाम हो गया। मैंने भी निश्चय कर लिया है कि गुलाम होकर नहीं रह सकता। इटालियन सरकार ने मुझे प्रलोभन दिया है और कहा है कि यदि शांति स्थापित करने में उन्हें सहायता दूँ तो वे मुझे अच्छे ओहदे देंगे। माँ, मैं सच कहता हूँ इन घृणित बातों को सुनना ही नहीं चाहिये। मैं ऐसा काम स्वप्न में भी नहीं कर सकता। मुझे अधिक कुछ कहना नहीं है। जाओ, और मेरे इस तरह के मरने पर आँसू मत बहाना। तुम्हारी भी छाती ऊँची रहेगी। तुम्हारे स्तन की लाज मैंने रख ली। और तुम प्यारी यूनी, तू भी धन्य है। देश के संकट काल में खूब काम किया। वीर स्त्रियों का यही धर्म है। तुम भी

जाओ और माँ की सेवा करते रहना। तुम्हें भी वह सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसे कम स्त्रियाँ पाती हैं।'

'पतिदेव, आप यहाँ बेड़ा में जकड़े हुए हैं और मैं घर जाऊँ। यह कैसी पति-भक्ति है? जब तक आप जीवित रहेंगे तब तक आपकी सेवा के लिए तैयार रहूँगी।'

'परन्तु तुम लोग मेरे पास रहने न पावोगी'

'तभी लाचारी होगी।'

[२२]

'सरदार, मार्शल ग्रैजियानी ने आखिरी बार मुझको तुम्हारे पास भेजा है। यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो फासिस्ट सरकार की तरफ होकर आनन्द से इस जीवन का मजा लूटो।'

'कैप्टेन दिलतान्ती, मैंने भी उस दिन तुमसे कह दिया था कि सारी अबीसीनिया तुम्हारी तरफ हो जाय, मैं नहीं हो सकता। तुम्हारी सरकार मुझे फाँसी पर चढ़ा दे, मैं सहर्ष फाँसी पर चढ़ने के लिये तैयार हूँ। परन्तु जिस पौधे को मैंने अपने खून से सींचा है, उसे किस तरह इन हाथों से काट सकता हूँ। मेरी तरह कौन कृतघ्न होगा जो पैसे की लालच से, दुनियावी ऐश-आराम के लिये, गुलामी की जंजीर—वह सोने की ही क्यों न हो—धारण करेगा? दिलतान्ती, तुम आदमी नहीं पहचानते। किस तरह मुझे आजादी के बदले गुलामी का ताज, स्वतंत्रता के

बदले परतंत्रता की बेड़ी, सम्मान को जगह अपमान के लिये निमंत्रण दे रहे हो ? तुम नहीं जानते कि जिस समय तुम मेरे पास अपना प्रस्ताव लेकर आते हो मेरा सारा शरीर धायँ धायँ करके भीतर ही जलने लगता है। यह मेरा साफ अपमान है। मैं इसे कदापि सहन नहीं कर सकता। मेरी प्रार्थना है कि अब मेरे पास ऐसे प्रस्ताव लेकर आने की आवश्यकता नहीं है।'

'सरदार, तुम फासिस्ट सरकार के कैद में रह कर कड़ी जबान नहीं निकाल सकते। यदि तुम ऐसी जबान निकालोगे तो तुम्हे कुत्तों की मौत मरना पड़ेगा। तुम्हारी स्त्री और माँ भी यहाँ कैद हैं। इसे तुम अच्छी तरह समझ लेना।'

'तुम मुझको डरा या धमका कर बहका नहीं सकते। कुत्तों की मौत मरने की परवाह नही। परन्तु विदेशियों के आगे नतमस्तक हो नहीं सकता। मुँह मे कालिख और माँ के अचल मे कलंक की टीका नही लगा सकता। मेरी स्त्री और माँ को कैद कर मुझे तुम अपना नही सकते। वे वीर पत्नी, वीर प्रसूता और वीर माता हैं। वे दया की भिखारिणी नहीं है। वे अपनी रक्षा स्वयं करेंगी।'

'अच्छा, मैं जाता हूँ परन्तु तुम्हारे दिन आ गये हैं। मुझे तुम्हारे ऊपर दया आती थी। तुम स्वयं मौत का आह्वान करते हो। इसमें किसी का दोष नही।'

'जाओ, और राह लो। मैं दया का पात्र नहीं हूँ। आज़ादी

के दीवानों के लिये मौत ही सबसे सुन्दर और वांछनीय वस्तु है।'

× × ×

पीन् अपने ही मन मे सोचने लगा—'ओह कुत्तों की मौत मरना होगा। मुझको बन्दीगृह में सड़ कर मरना होगा। क्या मेरी स्त्री और माँ का अपमान मेरे सामने होगा ? भगवान? तुम कहाँ हो? क्या सच्चे और वीर सिपाहियों का यही दैवी पुरस्कार है? क्या यही तुम्हारा न्याय है ? क्या हम लोग गलत रास्ते पर थे? क्या गुलामी मंजूर करना ही सत्य है? यदि नहीं तो तुम कहाँ हो ? किस सत्य के लिये संसार को उचित और अनुचित पर दण्ड देते हो ?

'कुछ भी हो एक बार मैंने निश्चय कर लिया पीछे नहीं हट सकता। परन्तु मैं इस कालकोठरी में सड़ कर मरने के लिये तैयार नहीं हूँ। तो क्या यहाँ से निकल भागूँ ? कोई कड़ा पहरा नहीं है? क्या भागना कायरता है? नहीं, नहीं मैं अपनी जान बचाने के लिये नहीं भाग रहा हूँ। अपनी माँ और स्त्री को अपमानित होते नहीं देख सकूँगा। उन्हीं का बदला लेने के लिये यहाँ से जाना जरूरी है।'

इस तरह निश्चय करके पीन् रात को भागने की चेष्टा करने लगा। काफी रात चली गई थी। संतरी अभी जगा हुआ था। लैम्प जल रहा था। वह भीतर घर में बन्द था। छत पर चढ़ कर कूदने से आवाज़ होगी और लोग जग जायँगे। परन्तु वह

भीतर रहना नहीं चाहता था। अँधेरी रात थी। धीरे धीरे छत पर चढ़ा। वहाँ से एक दूसरे मकान के ऊपर चढ़ गया जिसमें दूसरे अबीसीनियन सिपाही कैद थे। वहाँ से वह एक निकट के पेड़ के ऊपर चढ़ कर नीचे उतर आया। कँटीले तारों को कूदता हुआ वह इटालियन कैम्प के बाहर आया। दौड़ता, भागता तथा अपने को छिपाता वह अदीस अबाबा से बहुत दूर निकल आया। वह उस प्रदेश की तरफ घूमा जिधर अबीसीनिया की सरकार का बल अभी काफी था। वह गोर मे पहुँचा। वहाँ कुछ बड़े बड़े अफसरों से मिल कर फिर से लड़ने के लिये उन्हें उत्साहित किया। तास पीन् फिर सेना इकट्ठा करने लगा।

तास पीन् के व्यक्तित्व में जादू का असर था। जिस गाँव और नगर में जाता, लोग उत्साह से भर जाते। देश के लिये तन, मन और धन सभी अर्पण करने के लिये तैयार हो जाते। बिखरी हुई शक्ति का पुनः संगठन हुआ। लोगों की पस्त हुई हिम्मत फिर जग उठी। आशा का संसार हुआ। अबीसीनिया के सम्राट की 'जय जय' के नारे लगने लगे। तास पीन् ने दो हज़ार सिपाहियों का पुनः संगठन किया। इनमें आधे सिपाही तो वे ही थे जो पहले लड़ चुके थे और सेना-नायकों के छुट्टी दे देने अथवा सेना के तितर बितर हो जाने के बाद घर लौट आये थे।

तास पीन् फिर अपनी सेना लेकर इटालियनों से मोर्चा लेने के

लिये बढ़ा। इटालियनों को भी तास पीन् के पुनः आक्रमण की बात मालूम हो गई थी। इटालियन सरकार ने भी इस बार तास-पीन् को पकड़ने का मनसूबा बाँध लिया। इटालियन हवाई जहाजों का बेड़ा नित्य प्रति उन प्रदेशों में जहाँ अबीसीनिया की सरकार अभी भी राज्य प्रबन्ध करती थी जाया करता था। ये प्रायः तास पीन् की उस बड़ी सेना का ही पता लगाते थे। उस सेना का पड़ाव कहाँ है ? उनकी प्रगति किधर है ? किस रास्ते से अदीस अबाबा पर आक्रमण करने के लिये जायेंगे इत्यादि बातें पता लगाने के लिये उड़ा करते थे।

तास पीन् अपनी सेना संगठित कर चुका था। अबीसीनिया के और सेना-नायक भी इधर उधर से आक्रमण करने की चेष्टा में लगे थे। पीन् ने सोचा कि जब तक बड़े बड़े सेनापतियों का संगठन होगा तब तक इटालियन सरकार भी अपना सिक्का अदीस अबाबा में जमा लेगी। इसलिये उसकी नींव को कमजोर करने के लिये अचानक में धावा बोलना आवश्यक है। सेनापतियों को अन्तिम युद्ध के लिये छोड़ कर अपनी सेना को लेकर वह आगे बढ़ा। वे दिन को आराम करते और रात को ही चलते थे। इनका रास्ता जंगलों और पहाड़ों से बना आता था। जहाँ भयानक जानवर रहा करते थे। जहाँ पहाड़ों की गुफाओं में शेर की गर्जना सुनते ही हृदय काँप उठता है परन्तु ये आजादी के दीवाने उन्हीं गुफाओं के पार्श्व से गुजरते थे। जंगलों में खतरनाक सर्पों के द्वारा डसे जाते। वर्षा ऋतु मे पहाड़ी नदियों से पार होते समय

पैर उखड़ जाते या पत्थरों से ठोकर खा कर गिर पड़ते।' इस तरह से कष्टों को झेलते हुए आगे बढ़ रहे थे। सड़कों से जाने में डर था। पता लग जाने पर हवाई जहाज आगे बढ़ने न देते।

तास पीन् की सेना का पता लगाने के लिये इटालियन सरकार ने कोई उपाय छोड़ न रखा। गरीब अबीसीनियनों को पुरस्कार देकर गुप्तचर बनाते और उन्हें तास पीन् का पता लगाने के लिये भेजते। परन्तु किसी को कुछ मालूम नहीं हुआ। जंगलों से होते हुए तास पीन् की सेना अदीस अबाबा के पार्श्ववर्ती जंगलों में पहुँच गई। इटालियन सेना में ये खबर पहले से ही फैल गई थी कि तास पीन् बड़ी भारी सेना लेकर अचानक ही मे छापा मारेगा। इसलिये वे बराबर चौकन्ने से रहते थे।

एक रात को वर्षा खूब हो रही थी। इटालियन सेना घोर निद्रा में पड़ी हुई थी। तासपीन् के सिपाही उसी वर्षा मे भीगते हुए नगर में घुस गये। सबसे पहले अपने अबीसीनियन बन्दियों को छुड़ाने की चेष्टा करने लगे। अंधेरी रात को घोर वर्षा में अबीसीनियन सिपाही इटालियन कैम्प पर टूट पड़े। इटालियन सिपाहियों से खूब मुठभेड़ हुई। इटालियनों के भोजन की सामग्री लूट ली गई। बहुत से सैनिक मारे गये। इटालियनों की बहुत सी तोपे छीन ली गईं। परन्तु इटालियन जनरल की चतुरता से अबीसीनियन सिपाही भाग न सके। ज्यों ज्यों अबीसीनियन सेना इटालियन कैम्प के भीतर आई त्योंहीं दूसरी जगह की एक इटालियन सेना ने कँटीले तारों को घेर लिया।

भीतर इटालियनों और अबीसीनियन सिपाहियों में घमासान युद्ध होने लगा। जो लोग भागने की चेष्टा करते थे घेरे के बाहर स्थित इटालियनों से मारे जाते या पकड़ लिये जाते।

इटालियनों की बड़ी बर्बादी हुई। इसमें किसी की हार और जीत नहीं हुई। इटालियनों के बहुत इन्तजाम करते रहने पर भी तोप और बड़े बड़े ट्रँकों की चोरी हो गई। हवाई जहाज नष्ट कर डाले गये। यदि दूसरे दिन कोई अबीसीनिया की सेना अदीस अबाबा में आती तो नगर को अपने कब्जे में कर सकती थी; क्योंकि इटालियनों के पास का लड़ने का सामान छिन गया था या नष्ट हो गया था। परन्तु इतनी राजनीतिक पटुता अबी-सीनियन सरदारों मे न थी। वे दूसरे ही तरफ सेना का संग-ठन करते रह गये।

तास पीन् ने सभी कार्य बड़ी चालाकी के साथ किया। जब इटालियन युद्ध-सामग्री नष्ट हो गई तब वह अपनी स्त्री और माँ के छुड़ाने का प्रयत्न करने लगा। इसी प्रयत्न मे उसे एक गोली लगी और वह बेहोश होकर जमीन पर गिर गया। उसी बेहोशी में इटालियनों ने उसे पकड़ लिया। उसकी स्त्री और माँ का भी पता न चला।

उनका पता कैसे चलता। जब से तास पीन् भागा था तब से उसकी स्त्री और माँ के ऊपर विशेष पहरा था। दिलतान्ती बड़ी सावधानी से उन्हें रखे हुए था। वह स्वयं ही उनकी देख रेख में रहता था। यों तो दिलतान्ती के मन मे यूनी बैठ चुकी

थी। टेसा के धोखा देने के बाद यूनी की पति-भक्ति का चित्र उसके सामने आते ही यूनी का सौन्दर्य उसकी आँखों के सामने नाचने लगता। उसके हृदय में यूनी के प्रति प्रशंसा के भाव आने लगते। यूनी की पवित्रता तथा रूप में वीरता को देखकर दिलतान्ती कुछ दूसरे रूप में न सोच सकता था और न प्रकट ही कर सकता था। परन्तु बराबर सोचते सोचते तथा निकट ही में रहने से उसके मन का भाव भी परिवर्तित होने लगा था।

तास पीन् फिर कैद हो गया। इस बार इटालियन सरकार ने उसे क्षमा नहीं किया। पीन् भी क्षमा नहीं चाहता था। वह तो शहीद होने के लिये पुकार पुकार कर कह रहा था। यदि इटालियन फिर देरी करेंगे तो शेर जंजीर को तोड़ कर निकल ही जायगा। दिलतान्ती के मन में पीन् के प्रति अब श्रद्धा हो गई थी। मार्शल ग्रैजियानी ने दिलतान्ती को कहला भेजा कि पीन् की फाँसी के लिये तैयारी करें।

आह, दिलतान्ती के ही भाग्य में यह भी था। दिलतान्ती पीन् के पास आया और कहा—'सरदार, तुम्हें कल फाँसी होगी।'

'बहुत अच्छा, मैं कब से फाँसी के लिये तैयार बैठा था।'

'सरदार, तुम्हारी वीरता देख कर कौन, सा हृदय होगा जो प्रफुल्लित न हो जाय। मैं व्यक्तिगत रूप से कहता हूँ कि मेरे

मन में तुम्हारे प्रति बड़ी श्रद्धा है। परन्तु बात मेरे भी अधिकार के बाहर है।'

'कैप्टेन दिलतान्ती, तुम्हारा सौजन्य का सा व्यवहार मैं भूल नहीं सकता। तुम्हारी मधुर बातें मुझे बड़ी प्रिय लगती थीं। परन्तु मैं भी एक सिद्धान्त से लाचार हूँ। उस सिद्धान्त के दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं है। आजादी, आजादी, देखो? इसमें कितनी मस्ती है। आजादी के नाम से मृत्यु भी थर थर काँपती है। आजादी के नाम पर मृत्यु अमृत-सी नजर आती है। दुनिया की सारी सम्पदा, वैभव और ऐश्वर्य इसके बिना फीका है। मुझे शांति से कल फाँसी पर चढ़ जाने दो। मेरा खून अबीसीनिया के लिये टानिक का काम करेगा। मैं मर कर भी सबके ताज में रहूँगा और फिर दुबारा जन्म लेकर इटालियनों को भगाने के लिये आऊँगा।'

कँटीले तारों से घिरे हुए मैदान में रंगमंच तैयार हुआ था। इटालियन सेना के बड़े बड़े अफसरों के लिये ऊँचे आसन थे। उन पर कुर्सियाँ रखी गई थीं। इटालियन सेना के सिपाहियों के लिये अर्द्ध वृत्ताकार बैठने के लिये आसन तैयार थे। सभी लोग अपनी अपनी जगहों पर जा बैठे। अबीसीनिया की कुछ जनता जबर्दस्ती बुला कर एक तरफ बिठाई गई थी, जहाँ पर संगीनी पहरा था जिसमें वे भाग न सकें। कुछ द्रोही और विश्वासघाती अबीसीनिया के सरदारों को बैठने के लिये भी ऊँचे आसन मिले थे। इसके बाद जितने अबीसीनियन कैदी

थे वे लाये गये। तासपीन् की माँ और स्त्री भी वहाँ लाई गईं। कुछ और भी स्त्रियाँ मौजूद थीं। सबके बैठ जाने पर जनरल ग्रैजियानी का आगमन हुआ। मार्शल ग्रैजियानी ने तास पीन् को लाने के लिये हुक्म दिया।

तासपीन् बेड़ियों में सभामंच पर खड़ा कर दिया गया।

मार्शल ग्रैजियानी ने कहा—'तास पीन्, फासिस्ट सरकार क्षमा करना नहीं जानती। परन्तु तुम्हारी वीरता देख कर तुम्हें सम्मानित तथा गौरव के पद देने का निश्चय किया था। तुमने उसे ठुकरा दिया। बल्कि कैद से भाग कर फिर एक बड़ी भारी सेना लेकर फासिस्ट सरकार की बहुत सी युद्ध-सामग्री नष्ट कर दी। बहुत से हमारे सिपाही भी मारे गये। इसके लिये तुम्हें प्राण-दण्ड दिया जायगा। तुम्हे फिर भी मैं क्षमा करने को तैयार हूँ यदि तुम माफी माँग कर फासिस्ट सरकार की शरण में आ जाओ।'

तास पीन् बेड़ियों से जकड़ा हुआ था परन्तु तो भी उसके चेहरे पर शोक-चिह्न नहीं थे। गम्भीर मुद्रा किये हुए उसने कहा—'मार्शल ग्रैजियानी और इटालियन सिपाहियों? मार्शल ग्रैजियानी की सज्जनता का मैं कायल हूँ। परन्तु मैंने एक बार नहीं हज़ार बार घोषित कर दिया कि मुझे प्राण-भिक्षा नहीं चाहिये। आजादी के लिये मौत बड़ी प्यारी है। अबीसीनिया की आजादी को जिस अत्याचारी ने कुचल डाला वह भी कुचला जायगा। अबीसीनिया की वीर आत्मा तब तक चुप न बैठेगी जब

तक खोई हुई आजादी लौट न आवे। अत्याचारी का नाश निश्चय है। अबीसीनिया की आजादी भी निश्चय है। सत्य की विजय भी निश्चय है।'

जब तक पीन् इतना कह रहा था कि एक गोली ने उसका काम तमाम कर दिया। वह वीर आत्मा सदा के लिये शांत हो गया।

[२३]

तासपीन् शहीद हो गया। उसकी आत्मा अमर हो गई। शत्रु भी उसके गुणों के कायल थे। दिलतान्ती हृदय से उसको चाहने लगा था। मार्शल ग्रैजियानी ने भी क्षमा करने की इच्छा की थी परन्तु पीन् उन मनुष्यों मे नहीं था जो थूक कर चाटता हो। उसका शरीर उसे कभी प्यारा नहीं था। देश के लिये जिस वीरतापूर्वक मृत्यु का आह्वान किया वैसा बहुत कम देखने में आता।

उसकी स्त्री यूनी भी एक विलक्षण स्त्री थी। उसका धैर्य और साहस अनुपम था। त्याग उपमा रहित और सर्वोत्तम था। वह एक सुन्दरी युवती थी जो अपने जीवन के प्रथम प्रभात ही मे जीवन की सन्ध्या की उपासना करने लगी थी। दिलतान्ती उसके रूप और गुणों पर मोहित था। संयोगवश दिलतान्ती के ही चार्ज मे वे रखी गई थीं। तासपीन् उन्हें मुक्त न कर सका और स्वयं ही फाँसी पर झूल गया।

एक दिन सन्ध्या समय दिलतान्ती अकेले टहलने के लिये निकला और टहलते टहलते बहुत दूर चला गया। चाँदनी रात में एक पहाड़ी नदी के किनारे जा पहुँचा। वायु भी मंद मंद चल रही थी और जंगली पुष्पों के सौरभ से पृथ्वी मण्डल को आच्छादित कर रही थी। दिलतान्ती नई विवाहिता से त्यक्त, जीवन की मादकता से भरा हुआ, खूनी वायुमण्डल से घबड़ाया हुआ, जीवन को निस्सारता के कारण अकेलापन अनुभव करने लगा। टेसा के विश्वासघात ने गौरवर्ण की स्त्रियों के प्रति उसके मन में घृणा का भाव जागृत कर दिया। यूनी का प्रस्तुत उदाहरण अबीसीनिया की स्त्रियों के विषय में उसे विशेष ध्यान बटाने वाला होगया। इसी तरह किनारे पर बैठे बैठे नाना प्रकार के भावों से उद्वेलित हो रहा था।

एकाएक उसके मन में भाव आया और वहाँ से उठ पड़ा। घोड़े पर सवार हो कर अपने कैम्प में पहुँचा। फिर इसके बाद वह कैदियों के निरक्षण करने के लिये चला। बारी बारी से एक दूसरे को देखते हुए औरतों के वार्ड में जा पहुँचा। औरतें सभी अलग अलग रखी गई थीं। दिलतान्ती यूनी की तंग कोठरी में घुस गया। यूनी को कुछ नींद आ रही थी। आखिर अकेले बैठे बैठे क्या करती। अचानक से एक आदमी को देख कर घबड़ा गई। परन्तु फिर साहस बाँधते हुये कह उठी— 'कौन हो? और तुम रात को यहाँ किस लिये आये?

दिलतान्ती ने उत्तर दिया—'प्यारी, मैं कैप्टेन दिलतान्ती हूँ।'

'हाँ, आप कोई भी क्यों न हों ? इतनी रात को कमरे मे क्यों घुस आये ?'

'मै अपना काम करने आया था ।'

'इस समय कौन सा काम था ?'

'निरीक्षण करने आया था । मैं जानना चाहता हूँ कि किसी को कोई कष्ट तो नहीं है ।'

'जी नहीं, मुझे कोई कष्ट नही है ।'

'प्यारी, मुझे बड़ा दुख है कि मैं तुम्हारे प्यारे पति को बचा न सका । मैंने बहुत चेष्टा की थी । मार्शल ग्रैजियानी से अन्त समय तक मैंने क्षमा कर देने की प्रार्थना की थी । मार्शल केवल माफी माँग लेने पर क्षमा करने के लिये तैयार था । तुम्हारे प्यारे पति को मैंने बहुत समझाया परन्तु वह अपनी बात पर अड़े रहे ।'

'ठीक है । उन्हे जीवन से कोई लाभ नहीं था । मुक्त होने पर फिर वह तुम्हारी सरकार से लड़ते और तब तक लड़ते जब तक अबीसीनिया स्वतंत्र नहीं हो जाता या स्वयं ही न मर जाते ।'

'अब तुम लोग क्या करना चाहती हो ?'

'हम लोगों का कोई ठिकाना नही है । यदि तुम्हारी सरकार ने हम लोगों को छोड़ दिया तो घर लौट जायेंगी और गाँव गाँव मे तुम्हारी सरकार के विरुद्ध विद्रोह फैलायेगी ।'

'इससे लाभ क्या होगा ? क्या तुम लोग अभी भी अबी-सीनिया को स्वतंत्र देखने की इच्छा रखती हो।'

'अवश्य, हम लोगों के हृदय के भाव को तुम लोग नहीं मिटा सकते।'

'यदि न छोड़ा तो इसीमें सड़ने का विचार है।'

'यदि रिहाई न हुई तो दूसरा चारा ही क्या है ?'

'ओह ! कैसा महान दुख है ? तुम लोग क्यों कष्ट कर रही हो ? सरकार से माफी माँगने पर मुक्ति अवश्य मिल जायगी। इस नरक से तो घर पर रहना अच्छा है।'

'हाँ, सब ठीक है। परन्तु तुम्हारी सरकार से माफी माँगना पाप है। अपने को सदा के लिये अछूत बनाना है। जिसके पति ने इटालियनों को मार भगाने के लिये इतना कष्ट उठाया, उनकी गोलियों के शिकार हुए। उसकी स्त्री इटालियन सरकार से माँफी किस तरह माँग सकती है।'

'प्यारी, तुम.....'

'कैप्टेन दिलतान्ती, तुम मुझे प्यारी न कहो। मैं ऐसा नहीं चाहती।'

'ओह, आपको दुख है तो मैं नहीं कह सकता। अबी-सीनिया की सरकार से इटालियन सरकार की लड़ाई हुई। अबीसीनिया की सरकार हार गई। तुम्हारे सम्राट यहाँ से भाग खड़े हुए। फिर जनता को इसका क्या दुःख है ? इटा-लियन सरकार जनता के लिये सभी प्रकार की सुविधायें देने

देने को तैयार है। जो जो चीजें अबीसीनिया सरकार ने अपनी प्रजा को उपभोग करने नहीं दिया था वह सभी चीजें इटालियन सरकार के राज्य में उपलब्ध होंगी। सभी लोगों को शिक्षा देने का प्रबन्ध होगा। जिन्हे भोजन का दुख है उन्हे भोजन भी दिया जायगा। देखो! अभी हमारे देश से आये हुए कितने पादरी लोग गाँव गाँव में अन्न और वस्त्र बाँट रहे हैं। तुम्हारी सरकार ने अपनी प्रजा की भलाई के लिये कुछ नहीं किया था। देखना, थोड़े दिनों मे कितना परिवर्तन हो जाता है। नये नये स्कूल खोले जायेंगे। अच्छे अच्छे अस्पताल लोगों के लिये बन जायेंगे। रेल, तार, डाक, तथा मोटर इत्यादि का प्रबन्ध हो जायगा। अच्छी अच्छी सड़कें बन जायेंगी। ऐसे सुख से तुम लोग मुँह क्यों मोड़ रहो हो?'

'कैप्टेन, तुम्हारी शिक्षा की आवश्यकता मुझे नहीं है। सभी प्रकार की सुविधाओं के रहने पर भी प्रबन्ध तुम्हारा होगा। अपने घर में अपना ही प्रबन्ध अच्छा होता है। वह दूसरों की दृष्टि में खराब भी हो तो अपने लिये लाखों प्रकार से अच्छा है। फिर भी तुम लोग इतने दानी नही हो कि अपनी भलाई न करके इस देश की भलाई के लिये अपने रुपये खर्च करोगे। यदि इसी देश के रुपये से विज्ञान कला की उन्नति करोगे तो वह क्या अबीसीनिया की स्वतंत्र सरकार न करती? क्या सभ्य बनाने का सर्वश्रेष्ट नियम यही था? क्या मनुष्यों का संहार करके, घृणा के भावों को जाग्रत करके ही परोपकार करने आये

हो ? इस देश की निरपराध जनता का खून बहाकर मुझे उपदेश देने आये हो ?'

'ओ नेक औरत, तुम्हारी बातें अकाट्य हैं। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि इस युद्ध में हम लोगों का एक दल इसके विरुद्ध था। मैं उस दल का एक प्रधान सदस्य था। हम लोगों ने फासिस्ट सरकार की लेखों के द्वारा बड़ी विरुद्ध आलोचना की। हम लोगों का आन्दोलन सफल नहीं हुआ। कितने हमारे सदस्य फाँसी पर लटका दिये गये। कितने अभी जेल में सड़ रहे हैं। यहाँ तक कि मेरी स्त्री भी जेल में गई है।'

'ओ कैप्टेन दिलतान्ती, तुम कितने नीच हो, बुजदिल हो, कायर हो। तुम्हारे दल के लोग फाँसी के तख्ते पर झूल गये। कितने जेल में सड़ रहे हैं। तुम्हारी स्त्री भी जेल में है। तुम अत्याचारी सरकार की नौकरी करके अपना अपमान कर रहे हो। तुम्हारी मुक्ति हो नहीं सकती। तुम्हारे पापों का कोई प्रायश्चित नहीं है।'

'नहीं नहीं, मैंने अपने लिये यह नौकरी कभी नहीं की थी। अपने माँ बाप के कहने पर सिद्धान्त का खयाल न करके फासिस्ट सरकार की नौकरी की थी। परन्तु मेरी स्त्री ने मुझे धोका दिया। ज्योंहीं मैं इधर आया त्योंही उसने अपनी शादी कर ली।'

'कैप्टेन तुम्हारे ऐसे विश्वासघाती से कौन स्त्री शादी कर सकती है ?'

'आप ऐसा क्यों कहती हैं ? मेरे हृदय में स्त्रियों के लिये प्यार है। मैं सच कहता हूँ कि तुम्हारे लिये मेरे हृदय में स्थान है। मैंने जब से तुम्हे अपनी नजर के सामने पाया, तुम्हें अपने हृदय में छिपा लिया। तुम्हारे गुणों का मैं कायल हूँ। तुम अब मुझको अपने हृदय में स्थान देकर मेरे जीवन को भी समुज्वल बनाओ। मैं तुम्हारी सेवा करने के लिये तैयार हूँ। केवल तुम्हारे प्रेम का भूखा हूँ।'

'तुम एक दुराचारी सरकार के एजेन्ट हो। मैं एक दलित देश की जनता हूँ। तुम विजयी हो। मैं विजिता हूँ। बतलाओ, मैं तुम्हारे ऊपर प्रेम दर्शाने योग्य किस तरह हूँ ? अभी घाव हरे है। किस तरह उसे कोई भूल सकता है। यों तो मनुष्य मात्र से प्रेम करना धर्म है।'

'नेक औरत, तुम हमारे हृदय की कली हो, मेरी आँखों की नूर हो, मैं तुम्हारे ऊपर कुर्बान हूँ।'

'दिलतान्ती, अपनी जबान संभाल कर रखो। मैं उन औरतों मे नहीं हूँ जो मर्दों के प्रेम के लिये जीती हैं। पति के रूप में प्रेमी मेरा एक ही हो सकता था जिसने अपनी जननी जन्मभूमि के लिये सर्वस्व अर्पण कर दिया। उसकी आत्मा मेरे चरित्र पर दृष्टि रखती होगी। मैं उसकी आत्मा से अपने को मिलाने की चेष्टा कर रही हूँ। मेरा मनोरथ भी सफल होगा।'

दिलतान्ती उसकी बातों पर और भी मुग्ध होता जा रहा था। उसने यूनी को जबर्दस्ती अपनी गोद में उठाना चाहा परन्तु वीर रमणी ने उसको धक्का देकर पीछे की तरफ ढकेल दिया और वह चौकठ के बाहर धड़ाम से गिर पड़ा। यूनी ने किवाड़ बन्द कर लिया।

[२४]

अबीसीनिया का पतन हो गया। उसकी राजधानी अदीस अबाबा पर इटालियन सरकार का झण्डा फहराने लगा। अबीसीनिया की हार राष्ट्रीयता की हार नहीं हुई बल्कि सुसंगठित राष्ट्र की महान् विनाशकारिणी बुद्धि और कला के समक्ष सीधे और ग़रीब देश की हार हुई। इस संसार में दुराचारियों की जीत होती है परन्तु उनका नाश उपस्थित होने पर सदा के लिये नाश हो जाता है। फासिस्ट सरकार ने दुनिया को चुनौती देकर दिनदहाड़े एक ग़रीब राष्ट्र को लूट लिया। सभी लोग देखते रह गये।

अपनी विनाशकारिणी विजय का उन्हे गर्व है। विजय के उपलक्ष मे कल राष्ट्रीय त्योहार मनाया जायगा। सारे इटली देश में एक कोने से दूसरे कोने तक मुसालिनी के कार्य की वीर गाथा गाई जायगी। बालकों को मिठाइयाँ वितरण की जावेंगी। बच्चे फासिस्ट गीत गा गा कर फासिस्ट सरकार की जय मनायेंगे। इस राज्यसत्ता के दीर्घ जीवन की प्रार्थना करेंगे।

शहरों में दिवाली होगी। सेनाओं का पैरेड-प्रदर्शन होगा। हवाई जहाजों की दौड़ का तमाशा होगा।

अदीस अबाबा में भी मार्शल ग्रैजियानी अबीसीनियन साम्राज्य के वायसराय की हैसियत से दरबार करेंगे। युद्ध में मारे गये वीर सिपाहियों के लिये आँसू टपकायेंगे। लोगों को पुरस्कार के रूप में जागीरें, सनदें तथा खितावें दी जायेंगी।

× × ×

अबीसीनिया की भग्नावशेष राजधानी में बड़ा सा पंडाल तैयार था। बड़े ऊँचे आसन पर मार्शल ग्रैजियानी सुशोभित थे। उनके एक तरफ क्रम से फासिस्ट सेना के बड़े बड़े पदाधिकारी और कर्मचारी थे। दूसरी तरफ कलंक का टीका लगाये हुये कुछ अबीसीनिया के विश्वासघाती सरदार विराजमान थे। सामने फासिस्ट सेना के सिपाहियों का जमावड़ा था। कुछ अबीसीनियन जनता भी बैठी या बैठाई गई थी। मार्शल ग्रैजियानी ने 'विजय दिवस' का श्रीगणेश प्रारम्भ किया। पहले उन्होंने महामंत्री मुसोलिनी को धन्यवाद देते हुये फासिस्ट दल के प्रति Allegiance प्रकट किया। तत्पश्चात् अबीसीनिया विजय में ईश्वर की कृपा थी ऐसा समझ कर उन्होंने ईश्वर को भी धन्यवाद दिया। ईश्वर ने सभ्यता प्रचार करने के लिये अबीसीनिया के साम्राज्य का इटली को प्रतिनिधि बनाया। इसलिये ईश्वर के प्रति विशेष ध्यान दिया गया।

इसके बाद लोगों की वीरता का ख्याल करके पुरस्कार देना प्रारम्भ किया।

अबीसीनिया की जनता को शान्त रहने के लिये आदेश दिया गया। कैदियों के विषय में स्थिति के अनुसार छोड़ने की उम्मीद दिलाई गई।

दरबार के बाद महान् भोज का आयोजन हुआ। उसमें फासिस्ट सेना के छोटे से बड़े सभी पदाधिकारी फासिस्टों के दीर्घ जीवन की कामना के लिये शराब की नदी बहा रहे थे। शराब पीने से यूरोपीय सभ्यता की सुन्दर छटा का दृश्य सामने देखने में आता था। यह गौरवर्ण के देवताओं की सभा में अमृत बाँटा जा रहा था। या ताड़ीखाने में ताड़ी पीने वालों का एक नज़ारा मात्र था।

सभी लोग खा पीकर झूमते झामते अपने अपने स्थान को लौटे। शायद किसी भी देश में साम्राज्य-विजय इतने समारोह के साथ न मनायी गयी होगी। विजय में इतनी भी मादकता न आवे?

× × ×

कुछ रात चली गई थी। दिलतान्ती अपने कैम्प में बिस्तरे पर इधर उधर उछल रहा था। तनिक भी चैन न था। शराब अधिक पी लेने से दिमाग काबू में नहीं था। शरीर काँप रहा था। जबान लड़खड़ा रही थी। आखें सुर्ख थीं। वह नशे में उठा। एक तरफ चल दिया। कुछ दूर निकल गया। फिर याद आया। ओह

रास्ता छूट गया। लौट पड़ा। कैदियों के वार्ड की तरफ गया। संतरी भी सोये थे। शराब से उनकी भी आँखें लग गई थीं। वह भीतर घुस गया।

एक वार्ड के बाद दूसरे वार्ड को लाँघता स्त्रियों की तरफ पहुँच गया। नशे में फिर आगे बढ़ता गया। दीवार में एक जगह चोट लगने से दिमाग ठिकाने आया। फिर वहाँ औंधे मुँह लौटा। यूनी के कमरे में धीरे से घुसा।

'मेरी प्यारी, मेरी प्यारी,' कह कर चिल्लाने लगा। यूनी जाग्रत अवस्था में थी। बड़े जोर से डाँटते हुए कहने लगी— 'पातकी, दूर हटो, तुम्हारे मुँह से शराब की दुर्गन्ध निकलती है। हटो, हटो, जल्दी हटो।'

दिलतान्ती अँधेरे में टटोलता कुछ बड़बड़ाता आगे बढ़ता गया और दीवार से फिर टकराकर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। यूनी एक तरफ चुपचाप खड़ी रही।

कुछ देर के बाद होश हुआ। सँभल कर उठा। कहने लगा— 'प्यारी, तुमको मैं प्यार करता हूँ। तुम मेरे दिल की रानी हो। मुझसे घृणा मत करो। तुम कितने दिनों तक इस तरह अपने को बचा सकती हो। आँखे बन्द किये हुए यूनी को पकड़ने की चेष्टा करने लगा। यूनी तेजी से पीछे हट गई। परन्तु दुष्ट दिलतान्ती ने दौड़ कर उसे पकड़ लिया। यूनी ने उसके साथ द्वन्द करना शुरू किया। किसी तरह वह छुड़ा कर पास ही में रखे हुए छुरे को उठाना चाहती थी

परन्तु उस मदान्ध शराबी ने उसके बाहुओं को पकड़ लिया और चुम्मा लेने की चेष्टा करने लगा। यूनी ने बड़े रोष में आकर अपने ललाट से उसकी नाक पर ठोकर लगाई। दिलतान्ती ने घबड़ाकर उसके बाहुवों को छोड़ दिया इतने में झपट कर यूनी ने छुरा उठा लिया। दिलतान्ती ज्योंही मुँह फैला कर उसकी तरफ दौड़ा त्योंही यूनी ने उसके पेट में छुरा घुसा दिया। दिलतान्ती वेहोश होकर गिर पड़ा।

इसके बाद यूनी ने बड़े साहस के साथ दिलतान्ती के पेट से छुरा निकाल लिया और अपने पेट मे छुरा मार कर 'ओह ओह' करती हुई गिर पड़ी। 'ओह ओह' की आवाज़ ने नजदीक ही के एक कमरे मे सोई हुई टेसा की माँ को जगा दिया। वह सो गई थी परन्तु उसे मालूम हुआ कि वह स्वप्न देख रही है। कोई उसको छुरा लेकर मारने के लिये बढ़ा आ रहा है। बुढ़ी माँ डर गई। उसकी नींद टूटी और 'आह आह' की आवाज सुनाई दी। वह तुरन्त दौड़ कर यूनी के कमरे में आई और चिराग़ जला कर देखा। यूनी के पेट में छूरा घुसा पड़ा है। उसका शरीर ठण्डा हो गया था। वगल ही मे दिलतान्ती कैप्टेन पड़ा हुआ है। समझने मे उसे देर न लगी। उसकी आँखों से आँसू टप टप गिरने लगे। यूनी के निकट वैठ कर प्रार्थना करने लगी—' भगवान, मेरे पुत्र और पुत्र-वधू की लाज तूने रख ली। मैं एक मात्र वुढिया बच गई। मुझे वुला कर, मेरे प्यारे बच्चों से जल्दी मिला। इन दुराचारियों के नष्ट होने मे यदि देर है तो मुझे

यहाँ एक क्षण भी रहना स्वीकार नहीं है। आह! इस दुराचारी ने मेरी पुत्र-वधू का अपमान करना चाहा था। वीर रमणी ने अपना प्राणान्त करके अपना मान रख लिया। हे भगवान, तुझे किस तरह स्वीकार है यह अत्याचार। तुम कहाँ सो रहे हो? अपनी प्यारी प्रजा को इस तरह भूल जाना तुम्हारे लिये कहाँ तक ठीक है। तुम इन दुराचारियों को भी शरण देते हो परन्तु अपने निरपराध बच्चों को इस तरह क्यों कष्ट दे रहे हो। भगवान! सहा नहीं जाता इनका दुराचार। कब तुम इनका संहार करोगे? क्या दीन दुखियों के आर्तनाद से तुम कातर नहीं होते? क्या हम लोगों की आहों से तुम्हारी नींद नहीं खुलती? भगवान, जल्दी, बहुत जल्दी अत्याचार का अन्त करो। सत्य की झलक दिखलाओ।'

रुचि के अनुकूल

...ल का यह नर्सरी स्कूल

ल
लिये
के
ती
की
तक,
नक
लये
च्चो
से

ना
र
नके
भ

लिये होती है · ऐसा कहती है प्रधानाध्यापिका, मिस क्रोनिन ।

स्कूल मे इन बच्चो के लिये खुले मैदान की कोई कमी नहीं है । और न उनकी उछल-कूद पर किसी प्रकार की रुकावट ही है ।

बच्चो के बारे मे किया करते है उनके माता-पिता पूछताछ, और स्कूल भी सम्पर्क रखता है उनके साथ । बच्चो को घर वापस ले जाने के लिये उनकी माताये (और कभी तो उनके पिता भी) आती हैं—जैसा कि इस पृष्ठ पर छपी एक तस्वीर दिखाती है । इस स्कूल के बच्चो मे से केवल कुछ ऐसे है जिनकी माताये करती है नौकरियाँ । फिर भी, वे खुश होती है यह सोचकर कि उनके बच्चे बिताते है दोस्तो के सग कुछ घडिया ।

कपड़ो की देखभाल की जा र...
भी बहुत जरुरी है